Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 15 अंक 140
लखनऊ, सोमवार, 10 मार्च 2025
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ, नगर संस्करण

Established 1865

पायनियर

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

www.dailypioneer.com

आभ्यन्तर

राष्ट्रीय-10

महाकुंभ में पानी की गुणवत्ता स्नान के लिए उपयुक्त थी : सीपीसीबी रिपोर्ट

ट्रॉफी से सजी जीत की थाली, चैंपियंस की होली-दिवाली

● भारत ने न्यूजीलैंड को हराकर चैंपियंस ट्रॉफी पर किया कब्जा

भाषा। दुबई

मोर्चे से अगुवाई करने वाले कप्तान रोहित शर्मा के बल्ले के कमाल और स्पिनरों के धमाल के दम पर भारत ने न्यूजीलैंड को रविवार को फाइनल में चार विकेट से हराकर रिकॉर्ड तीसरी बार चैम्पियंस ट्रॉफी अपने नाम की। इस मैच से पहले रोहित के संन्यास की अटकलें लगाई जा रही थी लेकिन उन्होंने अपने चिर परिचित फॉर्म में लौटकर आलोचकों के मुंह बंद कर दिए। उनकी कप्तानी में यह टी20 विश्व कप 2024 के बाद भारत ने दूसरा आईसीसी खिताब जीता। भारत ने टूर्नामेंट में एक भी मैच गंवाए बिना 2002 और 2013 के बाद तीसरी बार खिताब जीता। कोई दूसरी टीम तीन बार यह ट्रॉफी नहीं जीत पाई है।

स्पिनर कुलदीप यादव और वरुण चक्रवर्ती ने हालात का फायदा उठाते हुए बेहतरीन गेंदबाजी की लेकिन डेरिल मिचेल और माइकल ब्रेसवेल ने संयम के साथ अर्धशतक लगाते हुए न्यूजीलैंड को सात विकेट पर 251 का मजबूत स्कोर दिया। रोहित ने 83 गेंद में 76 रन बनाकर जीत की नींव रखी और भारत ने एक ओवर बाकी रहते लक्ष्य हासिल कर लिया। केएल राहुल ने फिनिशर की भूमिका निभाते हुए नाबाद 34 रन बनाए। चोटिल मैट हेनरी की जगह खेल रहे तेज गेंदबाज नैथन स्मिथ को रोहित ने दो छक्के और दो चौके जड़े। दूसरे छोर पर शुभमन गिल ने 31 रन बनाए और पहले विकेट के लिए रोहित के साथ 105 रन जोड़े। वह ग्लेन फिलिप्स के दर्शनीय कैच पर पवेलियन लौटे

जबकि गेंदबाज मिचेल सेंटनेर थे। विराट कोहली का दर्शकों ने तालियों के साथ स्वागत किया लेकिन वह दो ही गेंद टिक सके और माइकल ब्रेसवेल की गेंद पर पगबाधा आउट हुए। पावरप्ले के बाद अगले 16 ओवर में रोहित अपने स्कोर में 27 रन ही जोड़ सके। उन्होंने आक्रामक होकर खेलने की बजाय विकेट बचाकर स्पिनरों को खेला। आखिर में रचिन रविंद्र की गेंद पर आगे बढ़कर खेलने के प्रयास में वह चूके और लैथम ने स्टम्पिंग करके उन्हें वापिस भेजा। उस समय भारत जीत से 130 रन दूर था। इसके बाद श्रेयस अय्यर (48) और अक्षर पटेल (29) ने 61 रन की साझेदारी की।

इससे पहले न्यूजीलैंड के लिए डेरिल मिचेल ने 101 गेंद में 63 रन बनाए जबकि ब्रेसवेल ने 40 गेंद में 53 रन जोड़े। न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया लेकिन उसके स्टार बल्लेबाज टिककर खेल नहीं सके जिसके बाद इन दोनों ने पारी को संभाला। न्यूजीलैंड ने अच्छी शुरूआत करते हुए दस ओवर में एक विकेट पर 69 रन बना लिए थे। छठे ही ओवर में गेंदबाजी के लिए आए वरूण ने विल यंग को पवेलियन भेजा। वहीं कप्तान रोहित शर्मा ने कलाई के स्पिनर कुलदीप को 11वें ओवर में गेंद सौंपी जिससे मैच का नक्शा ही बदल गया। कुलदीप ने पहली ही गेंद पर रचिन रविंद्र को पवेलियन भेजा जब उनकी गुगली सीधे स्टम्प पर जा लगी। इसके साथ ही 57 रन की पहले विकेट की साझेदारी भी खत्म हो गई जिसमें रविंद्र ने हार्दिक पंड्या को लगातार छक्का और दो चौके लगाए थे। उन्हें 28 के स्कोर पर मोहम्मद शमी ने अपनी ही गेंद पर जीवनदान दिया था। अगले ओवर में कुलदीप ने केन विलियमसन का रिटर्न (शेष पृष्ठ 9)

इन लोगों की आखिर परेशानी क्या है...

कर्नाटक में हम्पी हुआ शर्मसार

कुमार चेलप्पन। बेंगलुरू

कर्नाटक में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल हम्पी गलत कारणों से चर्चा में है, क्योंकि बृहस्पतिवार देर रात स्थानीय लोगों के एक समूह ने चाकू की नोंक पर एक इजरायली पर्यटक सहित दो महिलाओं के साथ बलात्कार किया और उनके मोबाइल फोन और 9500 रुपये नकद लूट लिए। हमले के समय पीड़ितों के साथ मौजूद ओडिशा के युवक बिपाश को समूह ने पीटा और तुंगभद्रा नहर में फेंक दिया। उसका शव शुक्रवार सुबह बरामद किया गया, जबकि पीड़ितों के दो दोस्त नहर में कूद गए और तैरकर सुरक्षित निकल गए। पीड़ितों में से एक अमेरिकी नागरिक था जबकि दूसरा व्यक्ति महाराष्ट्र के नासिक का था। इजरायली महिला और उसकी महिला साथी, जो पूर्व की मेजबान थी, बृहस्पतिवार की आधी रात के आसपास सुंदर कोप्पल में तारे देखने गई थीं, जब हमला हुआ। कोप्पल के पुलिस अधीक्षक राम अरसिद्दी ने मीडियाकर्मियों को बताया कि दो हमलावरों को गिरफ्तार कर लिया गया है और तीसरे व्यक्ति का पता लगाने के लिए तलाश जारी है। गिरफ्तार किए गए दोनों की पहचान पीड़ितों और उनके सहयोगियों ने की है। (शेष पृष्ठ 9)

पुणे में अश्लीलता

पायनियर समाचार सेवा। पुणे

पुणे में एक ट्रैफिक जंक्शन पर बीएमडब्ल्यू से उतरकर पेशाब करने के आरोप में गिरफ्तार किए गए एक व्यक्ति को रविवार को उसके सह-यात्री के साथ 10 मार्च तक पुलिस हिरासत में भेज दिया गया। येरवदा इलाके के शास्त्रीनगर में शनिवार सुबह हुई इस हरकत का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था, जिसके बाद पुलिस ने गौरव आहूजा (25) और भाग्येश ओसवाल (22) पर सार्वजनिक उपद्रव, तेज गति से गाड़ी चलाने, सार्वजनिक सड़कों पर खतरा पैदा करने और भारतीय न्याय संहिता और मोटर वाहन अधिनियम के तहत अन्य अपराधों के लिए मामला दर्ज किया। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि ओसवाल को शनिवार को उसके घर से गिरफ्तार किया गया, जबकि कार चला रहे आहूजा को कुछ घंटों बाद पड़ोसी सतारा जिले के कराड से हिरासत में लिया गया और रविवार की सुबह उसे गिरफ्तार कर लिया गया। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वायरल हुए क्लिप में ओसवाल को लग्जरी कार की अगली सीट पर बैठे देखा जा सकता है, जबकि आहूजा एक ट्रैफिक जंक्शन पर पेशाब कर रहा है और फिर गाड़ी संभालते हैं और (शेष पृष्ठ 9)

द्विअर्थी भोजपुरी गानों पर कार्रवाई

पायनियर समाचार सेवा। पटना

बिहार पुलिस ने सार्वजनिक रूप से द्विअर्थी भोजपुरी गाने बजाने पर राज्यव्यापी कार्रवाई का आदेश दिया है। पुलिस ने इसे एक ज्वलंत सामाजिक समस्या बताया है, जो महिलाओं की सुरक्षा को खतरे में डालती है और बच्चों के दिमाग पर विकृत प्रभाव डालती है। यह कदम ऐसे समय उठाया गया है, जब अधिकारी सार्वजनिक स्थानों पर अश्लील गानों के बढ़ते प्रभाव को रोकने का लक्ष्य बना रहे हैं। साथ ही, उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। राज्य पुलिस मुख्यालय द्वारा जारी एक परिपत्र में सभी महानिरीक्षकों (आईजी), उप महानिरीक्षकों (डीआईजी) और रेलवे पुलिस को सार्वजनिक स्थानों पर ऐसे गाने बजाने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया है। परिपत्र में कहा गया है, ऐसी गतिविधियों में शामिल लोगों और अश्लील तथा द्विअर्थी भोजपुरी गानों को बढ़ावा देने वालों की पहचान करने के लिए पूरे राज्य में एक विशेष अभियान चलाया जाना चाहिए। यह कदम प्रसिद्ध अभिनेत्री नीतू चंद्रा द्वारा संगीत में अश्लीलता के खिलाफ पटना उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर करने (शेष पृष्ठ 9)

कठुआ में एक परिवार के तीन सदस्यों की मौत पर प्रदर्शन, आतंकवादियों पर संदेह

मोहित कंधारी। जम्मू

कठुआ के सुदूर बिलावर इलाके में एक हिंदू परिवार के तीन सदस्यों की लक्षित हत्या के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन के बीच, केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन ने रविवार को जम्मू में अर्धसैनिक बलों के विभिन्न प्रमुखों, वरिष्ठ सेना और खुफिया एजेंसी के अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय सुरक्षा समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की, ताकि ग्राउंड जीरो पर खतरे से निपटने के लिए व्यापक रणनीति बनाई जा सके। उच्च पदस्थ आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, केंद्रीय गृह सचिव को गर्मी के मौसम से पहले सुरक्षा को और मजबूत करने के लिए क्षेत्र में तैनात अतिरिक्त सैनिकों की गतिशील तैनाती पैटर्न के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

बैठक में शामिल हुए वरिष्ठ बीएसएफ और सीआरपीएफ अधिकारियों को किसी भी नए घुसपैठ को रोकने के लिए सीमावर्ती गांवों में निगरानी बढ़ाने का निर्देश दिया गया। खुफिया एजेंसियों ने केंद्रीय गृह सचिव को क्षेत्र में छिपे पाकिस्तानी आतंकवादियों को उनके समर्थकों और जमीनी कार्यकर्ताओं की मदद से खदेड़ने के लिए पिन पॉइंटेड मानव खुफिया जानकारी

जम्मू कश्मीर में आतंकियों की तलाश में सुरक्षा बलों के जवान

जुटाने के प्रयासों के बारे में भी जानकारी दी। जम्मू-कश्मीर पुलिस प्रमुख और सेना कमांडरों ने केंद्रीय गृह सचिव को इन विदेशी आतंकवादियों को बेअसर करने के लिए जम्मू क्षेत्र में शुरू किए गए आतंकवाद विरोधी अभियानों के बारे में जानकारी दी। महत्वपूर्ण सुरक्षा समीक्षा बैठक से पहले पूरे बिलावर बेल्ट और अन्य आस-पास के इलाकों में नागरिक हत्याओं की बढ़ती घटनाओं के खिलाफ पूर्ण बंद देखा गया।

स्थानीय भाजपा विधायक सतीश शर्मा और जम्मू-कश्मीर विधानसभा में विपक्ष के नेता सुनील शर्मा ने आक्रोशित निवासियों को शांत करने के लिए बिलावर का दौरा किया और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की ओर से चेहराविहीन दुश्मन के खिलाफ निर्णायक लड़ाई में एकजुट रहने का कड़ा संदेश दिया। एक किशोर सहित मृतक नागरिकों की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अभाव में स्थिति अस्थिर बनी हुई है, रविवार को उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कठुआ में एक परिवार के तीन रिश्तेदारों की हत्या की गहन और पारदर्शी जांच के आदेश दिए। केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा तीन नागरिकों की हत्या में आतंकवादियों की संलिप्तता की ओर सीधे इशारा करने के बाद जांच का आदेश दिया गया। पुलिस के अनुसार, वरुण सिंह (15), उसके (शेष पृष्ठ 9)

संसद के बजट सत्र का दूसरा चरण आज से, सरकार को घेरेगा विपक्ष

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

संसद बजट सत्र का दूसरा चरण सोमवार को फिर से शुरू होगा, जिसमें केंद्र और विपक्ष के बीच टकराव के संकेत हैं। विपक्ष मतदाता सूची में कथित हेराफेरी, मणिपुर में हिंसा की ताजा घटना और ट्रंप प्रशासन के साथ भारत के व्यवहार जैसे मुद्दे उठाने की योजना बना रहा है। सरकार का ध्यान अनुदान मांगों के लिए संसद की मंजूरी लेने, बजटीय प्रक्रिया को पूरा करने, मणिपुर बजट के लिए मंजूरी मांगने और वक्फ संशोधन विधेयक को पारित करने पर रहेगा। गृह मंत्री अमित शाह मणिपुर में राष्ट्रपति शासन की घोषणा के लिए संसद की मंजूरी के लिए एक वैधानिक प्रस्ताव पेश कर सकते हैं। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण भी सोमवार को मणिपुर के लिए बजट पेश करेंगी। मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के इस्तीफे के बाद 13 फरवरी से मणिपुर में राष्ट्रपति शासन है।

विपक्ष ने कहा कि वह डुप्लीकेट इलेक्टोरल फोटो आइडेंटिटी कार्ड (ईपीआईसी) नंबर के मुद्दे पर सरकार को घेरने की तैयारी में है। तृणमूल कांग्रेस ने इस मुद्दे को उठाने में सबसे आगे आकर काम किया है, जिसके बाद चुनाव आयोग ने घोषणा की है कि वह अगले तीन महीनों के भीतर सुधारात्मक कदम उठाएगा। चुनाव आयोग ने तृणमूल कांग्रेस के इस दावे को खारिज कर दिया है कि दूसरे राज्यों के मतदाताओं को पश्चिम बंगाल में अपने मताधिकार का प्रयोग करने की अनुमति देने के लिए मतदाता सूचियों में हेरफेर किया गया था। चुनाव आयोग ने यह भी स्पष्ट किया कि कुछ मतदाताओं के मतदाता पहचान पत्र संख्या 'समान हो सकती है', लेकिन जनसांख्यिकी जानकारी, विधानसभा क्षेत्र और मतदान केंद्र जैसे अन्य विवरण अलग-अलग हैं। तृणमूल कांग्रेस के नेता सोमवार को चुनाव आयोग से मिलने जा रहे हैं और बजट सत्र के दूसरे चरण के दौरान संसद के दोनों सदनों में इस मुद्दे को उठाने के (शेष पृष्ठ 9)

मणिपुर में अनिश्चितकालीन बंद जारी, हालात तनावपूर्ण पर शांति

पीटीआई। इंफाल/चुराचंदपुर

रविवार को मणिपुर के कुकी-बहुल इलाकों में सामान्य जनजीवन प्रभावित रहा, क्योंकि आंदोलनकारियों ने 'सुरक्षा बलों की कार्रवाई' के खिलाफ कुकी-जो समूहों द्वारा बुलाए गए अनिश्चितकालीन बंद को लागू किया। कांगपोकपी जिले में स्थिति तनावपूर्ण लेकिन शांत रही, जहां पिछले दिन कुकी प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच झड़प में कम से कम एक व्यक्ति की मौत हो गई थी और 40 अन्य घायल हो गए थे। चुराचंदपुर और टेंग्नौपाल जिलों के अन्य कुकी-बहुल इलाकों में भी प्रदर्शनकारियों ने टायर जलाए और पत्थरों से सड़कें जाम कर दीं, जिन्हें सुरक्षा बलों ने हटाते हुए देखा।

हालांकि, अभी तक किसी नई हिंसा की खबर नहीं आई है। राज्य में कुकी-बहुल इलाकों में व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रहे और सड़कों पर बहुत कम वाहन चलते देखे गए। आंदोलनकारी लोगों से घरों के अंदर रहने के लिए कहते देखे गए। जिले के एक अधिकारी ने बताया कि एनएच-2 (इंफाल-दीमापुर रोड) पर गमघीफई और जिले के अन्य हिस्सों में अतिरिक्त सुरक्षा बलों को तैनात किया गया है

मणिपुर के सभी कुकी क्षेत्रों में कुकी जो काउंसिल द्वारा अनिश्चितकालीन बंद के दौरान तैनात सुरक्षाकर्मी। पीटीआई

और कानून-व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए वाहनों की गश्त की जा रही है। अधिकारियों ने बताया कि शनिवार को कांगपोकपी जिले के विभिन्न हिस्सों में कुकी प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच हुई झड़पों में एक प्रदर्शनकारी की मौत हो गई, जबकि महिलाओं और पुलिसकर्मियों सहित 40 से अधिक लोग घायल हो गए।

कुकी बहुल जिले में प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच झड़पें हुईं, जब पुलिस ने उन्हें तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस के गोले दागे, क्योंकि वे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के राज्य भर में मुक्त आवाजाही की अनुमति देने के निर्देश का विरोध कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनकारियों ने कानून लागू करने वालों के खिलाफ गुलेल का इस्तेमाल करते हुए शनिवार देर रात तक सुरक्षा बलों के साथ झड़प की, उन्होंने कहा कि सुरक्षा बलों के कम से कम पांच वाहनों के विंडशील्ड क्षतिग्रस्त हो गए। कुकी-ज़ो निकाय, स्वदेशी जनजातीय नेताओं के मंच (आईटीएलएफ) ने मणिपुर में समुदाय द्वारा बसे सभी क्षेत्रों में कुकी ज़ो काउंसिल (केजेडसी) द्वारा बुलाए गए अनिश्चितकालीन बंद को समर्थन दिया, ताकि जातीय संघर्ष से ग्रस्त राज्य में सभी सड़कों पर मुक्त आवाजाही का विरोध कर रहे प्रदर्शनकारियों पर (शेष पृष्ठ 9)

सुरंग हादसा : मौके से एक शव बरामद

भाषा। नगरकुरनूल

तेलंगाना में श्रीशैलम लेफ्ट बैंक कैनाल की आंशिक रूप से ध्वस्त सुरंग में फंसे आठ लोगों को निकालने के लिए दो सप्ताह से प्रयासरत बचाव दलों ने रविवार को एक व्यक्ति का शव 10 फुट नीचे गाद से बरामद किया। पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम और अन्य प्रक्रियाओं के लिए नगरकुरनूल सिविल अस्पताल भिजवाया गया है। उन्होंने बताया कि शव को 48 घंटे से अधिक समय तक बहुत सावधानी से खुदाई किए जाने और अन्य प्रयासों के बाद बाहर निकाला जा सका। उन्होंने बताया कि शव करीब 10 फुट की गहराई में गाद के नीचे दबा था।

अमेरिका में मंदिर में तोड़फोड़, भारत ने जताया कड़ा ऐतराज

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारत ने रविवार को अमेरिका में एक हिंदू मंदिर में तोड़फोड़ की घटना पर कड़ी आपत्ति जताई और अपराधियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। नई दिल्ली ने घटना को घृणित कृत्य बताते हुए वहां पूजा स्थलों की पर्याप्त सुरक्षा की भी मांग की। यह निंदा कैलिफोर्निया के चिनो हिल में बीएपीएस श्री स्वामीनारायण मंदिर पर भारत विरोधी भित्तिचित्रों से हमला किए जाने के बाद की गई है, जबकि पांच महीने से भी कम समय पहले अमेरिका के एक अन्य हिंदू मंदिर में इसी तरह की घटना की सूचना मिली थी। विदेश मंत्रालय (एमईए) के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, 'हमने

कैलिफोर्निया के चिनो हिल्स में एक हिंदू मंदिर में तोड़फोड़ के बारे में रिपोर्ट देखी है। हम इस तरह के घृणित कृत्यों की कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।' उन्होंने कहा, 'हम स्थानीय कानून प्रवर्तन अधिकारियों से इन कृत्यों के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने और पूजा स्थलों की पर्याप्त सुरक्षा सुनिश्चित करने का आह्वान करते हैं।' जायसवाल घटना पर मीडिया के सवालों का जवाब दे रहे थे।

बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बीएपीएस) ने शनिवार को कहा कि चीनो हिल्स में श्री स्वामीनारायण मंदिर को अपवित्रता का सामना करना पड़ा है। बीएपीएस पब्लिक अफेयर्स ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया, इस बार चिनो हिल्स में मंदिर के अपमान की घटना के बाद, हिंदू समुदाय नफरत के खिलाफ़ डटकर खड़ा है। चिनो हिल्स और दक्षिणी कैलिफोर्निया में समुदाय के साथ मिलकर, हम कभी भी नफरत को जड़ नहीं जमाने देंगे। शनिवार रात अमेरिका में बीएपीएस ने घटना की पुष्टि की और कहा कि हिंदू समुदाय नफरत के खिलाफ डटकर खड़ा है। चिनो हिल्स और दक्षिणी कैलिफोर्निया में समुदाय के साथ मिलकर, हम कभी भी नफरत को जड़ नहीं जमाने देंगे। हमारी साझा मानवता और आस्था यह सुनिश्चित करेगी कि शांति और करुणा बनी रहे। (शेष पृष्ठ 9)

राहुल की मदद से अपना ब्रांड लांच करेगा रामचेत

बिस्वजीत बनर्जी। सुल्तानपुर

एक साल पहले सुल्तानपुर के 60 वर्षीय मोची रामचेत सड़क किनारे एक छोटी सी दुकान में जूते सिलने और मरम्मत करने का काम करते थे, जिससे उनका गुजारा मुश्किल से होता था। आज, वह कांग्रेस नेता राहुल गांधी के समर्थन और मार्गदर्शन की बदौलत अपना खुद का फुटवियर ब्रांड 'रामचेत मोची' लॉन्च करने की तैयारी कर रहे हैं। रामचेत की यात्रा में तब मोड़ आया जब राहुल गांधी ने अपने आउटरीच कार्यक्रमों के दौरान उनकी शिल्पकला को देखा और मदद करने का फैसला किया। रायबरेली से कांग्रेस सांसद ने उन्हें अपना काम बेहतर बनाने के लिए एक मशीन भेंट की और बाद में उन्हें दिल्ली आमंत्रित किया, जहाँ उन्हें 10, जनपथ में सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा को अपनी हस्तनिर्मित चप्पलें भेंट करने का अवसर मिला।

अपने उद्यमी सपने को आगे बढ़ाते हुए, राहुल गांधी ने रामचेत के लिए मुंबई की यात्रा की (शेष पृष्ठ 9)

पायनियर
लखनऊ, सोमवार, 10 मार्च 2025

युवाओं की प्रगति के रास्ते का हर बाधा हटाएगी सरकारः मुख्यमंत्री

● युवा उद्यमी विकास अभियान के अंतर्गत 1070 युवाओं को 48 करोड़ के ऋण वितरण कार्यक्रम में शामिल हुए सीएम

लखनऊ/मेरठ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को मेरठ एवं सहारनपुर मंडल के 1070 युवाओं को 48 करोड़ के ऋण वितरण कार्यक्रम में शिरकत किया। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के नेताजी सुभाष चंद्र बोस प्रेक्षागृह में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने युवाओं के उत्साह और सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि युवाओं की प्रगति में आने वाली हर बाधा को दूर करने के लिए सरकार संकल्पित है। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में बताया कि 24 जनवरी को शुरू की गई 'सीएम युवा उद्यमी स्कीम' को लेकर प्रदेश के युवाओं में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला है। योजना के तहत 1 लाख आवेदनों के लक्ष्य के सापेक्ष 2 लाख 67 हजार से अधिक युवाओं ने आवेदन किया है। इनमें से 1 लाख से अधिक आवेदनों को स्क्रीनिंग के बाद बैंकों को भेजा गयाए जिनमें से 25 हजार से अधिक को मंजूरी मिल चुकी है और ऋण वितरण शुरू हो गया है। आज मेरठ में 1070 युवाओं को इस योजना का लाभ मिला।

सीएम ने कहा कि पहले चरण में 5 लाख रुपये तक का ब्याजमुक्त ऋण उपलब्ध कराया जा रहा हैए जिसका पूरा ब्याज सरकार वहन करेगी। अनुसूचित जातिए जनजाति और महिलाओं के लिए योजना में विशेष प्रावधान किए गए हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह योजना युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने और पीएम मोदी के श्स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडियाश् के विजन को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। सीएम ने मेरठ को क्रांतिधरा और पावन स्थल बताते हुए कहा कि इसे शिक्षा का हब बनाना जरूरी है। उन्होंने आश्वस्त किया कि पश्चिमी यूपी को विकास से नहीं पिछड़ने दिया जाएगा। उन्होंने युवाओं को आश्वस्त किया कि सरकार उनके लिए हर अवसर के बैरियर को हटाएगी।

मुख्यमंत्री ने डबल इंजन सरकार के 8 साल के कार्यकाल की उपलब्धियां गिनाईं। उन्होंने बताया कि 15 लाख करोड़ से अधिक के निवेश को जमीन पर उतारा गया जिससे 7 लाख युवाओं को रोजगार मिला। इसके अलावा साढ़े 7 लाख युवाओं को सरकारी नौकरी दी गई। एमएसएमई सेक्टर को पुनर्जीवन देकर 96 लाख यूनिट्स के साथ यूपी देश में नंबर एक बन गया है। सवा दो लाख करोड़ के उत्पादों का निर्यात हो रहा है। नतीजतन, बेरोजगारी दर घटी और 6 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर उठे। सीएम ने हाल ही संपन्न महाकुम्भ का जिक्र करते हुए कहा कि 66 करोड़ 30 लाख श्रद्धालुओं ने इसे सुरक्षित और श्रद्धापूर्वक अनुभव किया। गंगा एक्सप्रेसवे को हरिद्वार तक विस्तार देने की योजना की बात करते हुए उन्होंने कहा कि यह दो कुंभ नगरियों को जोड़ेगा। देश की पहली रैपिड रेल दिल्ली.मेरठ के बीच शुरू होने से यात्रा आसान हुई है। उन्होंने दावा किया कि अब प्रदेश में कानून व्यवस्था का संकट नहीं है और हर बेटीए व्यापारी व नौजवान सुरक्षित है।

कार्यक्रम से पहले मुख्यमंत्री ने योजना के तहत कारोबार शुरू करने वाले युवाओं की प्रदर्शनी का अवलोकन किया। मेरठ, गौतमबुद्ध नगर, सहारनपुर और शामली के युवाओं ने इसमें हिस्सा लिया। सीएम ने कहा कि युवाओं के लिए चुनौती तब चुनौती नहीं रहतीए जब सरकार उनके साथ खड़ी हो। नया उत्तर प्रदेश नए भारत का आधार बन रहा है। होली के ठीक पहले इस कार्यक्रम के जरिए 1070 नए युवा उद्यमियों को प्रोत्साहन देने पर जोर देते हुए सीएम ने कहा कि यह युवा ऊर्जा उत्तर प्रदेश को1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में संबल प्रदान करेगी। इससे भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का मार्ग भी प्रशस्त होगा। इस अवसर पर मंत्री राकेश सचान, सोमेन्द्र तोमर, दिनेश खटीकए सांसद लक्ष्मीकांत वाजपेयी, अरुण गोविल, राजकुमार सांगवान, अन्य गणमान्य मौजूद रहे। मुख्यमंत्री ने इससे पहले मेजर ध्यानचंद स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया और कहा कि इसे अक्टूबर.नवंबर तक राष्ट्र को समर्पित कर दिया जाएगा। यह विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय मानकों पर तैयार हो रहा है और ओलंपिक व कॉमनवेल्थ खेलों के लिए बेहतरीन खिलाड़ी देगा। मेरठ को ओडीओपी का महत्वपूर्ण केंद्र बताते हुए उन्होंने कहा कि खेलों में मेडल लाने वाले खिलाड़ियों को सरकारी नौकरी दी जा रही है।

इसी साल से शुरू होगा मेजर ध्यानचंद स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी का पहला सत्र

लखनऊ/मेरठ। मुख्यमंत्री योगी ने रविवार को मेरठ में मीडिया से बातचीत के दौरान शहर के विकास को लेकर कई महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं। मेरठ में प्रदेश का पहला स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी मेजर ध्यानचंद के नाम पर बनाया जा रहा है, जिसका निर्माण नवंबर 2025 तक पूरा होने की संभावना है। सीएम ने कहा कि मैंने इसका निरीक्षण किया है और इसी साल इसके पहले सत्र को शुरू करने की योजना है। यह विवि यूपी के खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगा। शुरुआत में इसकी कक्षाएं सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में चलेंगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में पिछले 10 वर्षों में मेरठ ने देश की बेहतरीन कनेक्टिविटी हासिल की है। इस कड़ी में देश की पहली रैपिड रेल सेवा दिल्ली से मेरठ के लिए शुरू हो चुकी हैए जबकि 12 लेन का एक्सप्रेसवे पहले ही मेरठ के लिए चालू हो चुका है। मेरठ से लखनऊ और प्रयागराज को जोड़ने वाले गंगा एक्सप्रेसवे का निर्माण अंतिम चरण में है और इस बार के बजट में मेरठ से हरिद्वार तक इसके विस्तार का निर्णय लिया गया है। प्रयागराज में इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास के बाद अब मेरठ पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

प्रशासन और जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक कर इनर रिंग रोड, ट्रैफिक जाम, वेंडिंग जोन, सीवर, ड्रेनेज और सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई है। आश्वास्त किया कि समय पर प्रस्ताव मिलने पर आवश्यक धनराशि उपलब्ध कराई जाएगी। सीएम ने कहा कि मेरठ को बेहतरीन सुविधाओं से युक्त बनाना हमारा संकल्प है। सीएम ने जनप्रतिनिधियों की विकास कार्यों में रुचि की सराहना करते हुए कहा कि उनकी सक्रियता से मेरठ और आसपास के क्षेत्रों में तेजी से प्रगति हो रही है। इस दौरान उन्होंने मेरठ को बेहतर प्लानिंग के साथ एक मॉडल शहर बनाने पर जोर दिया।

सीएम योगी के नेतृत्व में मातृत्व सुरक्षा को मिल रहा बढ़ावा

● पीएम मातृत्व वंदन योजना 2 के अंतर्गत यूपी में लाभार्थियों को 135 करोड़ से अधिक की सहायता

लखनऊ। उप्र सरकार प्रधानमंत्री मातृत्व वंदन योजना 2 के तहत गर्भवती और धात्री महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान कर रही है। मुख्यमंत्री योगी के निर्देश पर इस योजना का क्रियान्वयन तेज़ी से किया जा रहा है, लाखों महिलाएं लाभान्वित हो रही है। प्रधानमंत्री मातृत्व वंदन योजना 2 से वंचित वर्ग की महिलाओं को आर्थिक संबल मिल रहा है, जिससे वे गर्भावस्था के दौरान सही पोषण और देखभाल प्राप्त कर सकें। मुख्यमंत्री योगी के नेतृत्व में उप्र सरकार इस योजना को और प्रभावी बनाने के लिए लगातार प्रयासरत है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन ;छभ्द्ध के तहत सिप्सा द्वारा 1 जनवरी 2025 को आईसीडीएस विभाग के एसएनए खाते में 275.16 करोड़ हस्तांतरित किए गए थे। 22 जनवरी 2025 से लाभार्थियों को डीबीटी के माध्यम से सीधे बैंक खातों में राशि भेजने की प्रक्रिया शुरू हुई। अब तक 405379 महिलाओं को कुल 135.31 करोड़ की धनराशि हस्तांतरित की जा चुकी है। इस योजना के तहत पहले प्रसव पर 5000 दो किस्तों में और दूसरे प्रसव पर बालिका के जन्म पर 6000 एकमुश्त प्रदान किए जाते हैं। योजना के क्रियान्वयन में तेजी लाने के लिए मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने जिलाधिकारियों को सभी लंबित मामलों की समीक्षा कर उन्हें शीघ्र निस्तारित करने के निर्देश दिए हैं। 7 मार्च 2025 तक 31436 मामले लंबित हैं, सुपरवाइजर स्तर पर दृ 23694 मामले, सीडीपीओ (एसओ) स्तर पर 7411 मामले और एसएनओ स्तर पर 321 मामले लंबित हैं।

भाजपा पश्चिम मंडल दो के कार्यालय का हुआ उद्घाटन

लखनऊ। महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने बालागंज चौराहा पर पश्चिम विधानसभा मण्डल दो के कार्यालय का फीता काटकर शुभारभ किया। कार्यक्रम में पश्चिम विधानसभा उपविजेता अंजनी श्रीवास्तव, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष राहुल रस्तोगी, पूर्व जिला अध्यक्ष कृष्णा लोधी, महानगर उपाध्यक्ष घनश्याम अग्रवाल, मंडल दो अध्यक्ष विमल चौधरी, पार्षद सुनील शुक्ला, कमलेश पटेल पूर्व पार्षद विजय भुर्जी, सुनील शुक्ला, प्रतिमा मिश्रा सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता और क्षेत्रवासी उपस्थित रहे। लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने कहा कि संगठन की नीति एवं निर्देशों को जन जन तक पहुंचने में और संगठन की कार्य योजनाओं को बल देने में महत्वपूर्ण भूमिका का काम करता हैं। आनंद द्विवेदी ने पश्चिम मण्डल दो के सभी सम्मानित पदाधिकारियों एवं कार्यकतागणो को कार्यालय शुभारंभ की बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

एमडीए अभियान में 90 फीसदी ने खाई दवा रिफ्यूजल कनवर्जन भी 93 प्रतिशत रहा

● बाराबंकी प्रथम, बरेली दूसरे, जालौन तीसरे और लखनऊ चौथे स्थान पर रहा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

स्वास्थ्य विभाग की तरफ से फाइलेरिया उन्मूलन के लिए चला मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एमडीए) अभियान 90 प्रतिशत लोगों को दवा खिलाकर खत्म हो गया। अभियान की बड़ी सफलता यह रही कि 93 प्रतिशत रिफ्यूजल (इनकार करने वाले) केसों का समाधान करने के साथ ही उन्हें भी दवा खिलाई गई।

राज्य कार्यक्रम अधिकारी फाइलेरिया डॉ. एके चौधरी ने बताया कि प्रदेश के 14 जिलों के 45 ब्लाक में एमडीए अभियान 10 फरवरी से 25 फरवरी तक चलाया गया। कई जिलों में रिफ्यूजल केसों व जिले से बाहर गए लोगों को दवा खिलाने के लिए बाद में मापअप राउंड चलाया गया। लक्ष्य 1.10 करोड़ लोगों को दवा खिलाने का था, जिसके सापेक्ष 98,95,981 लोगों को दवा खिलाई गई। जौनपुर छोड़कर किसी भी जिले में दवा सेवन का प्रतिशत 80 से कम नहीं रहा। उन्होंने बताया कि फाइनल रैंकिंग में बाराबंकी प्रथम, बरेली दूसरे, जालौन तीसरे और लखनऊ चौथे स्थान पर रहा।

डॉ. चौधरी ने बताया कि इस बार दवा खाने से मना करने वालें लोगों को दवा खिलाने में बड़ी उपलब्धि हासिल हुई है। दवा खाने से मना करने वाले 1.58 लाख लोगों में से 92.7 प्रतिशत लोगों को समझा-बुझाकर दवा खाने के लिए तैयार किया गया और फाइलेरियारोधी दवा खिलाई गई। उन्होंने बताया कि दवा न खाने वालों में एक वर्ष से छोटे बच्चे, गर्भवती महिलाएं, गंभीर रूप से बीमार मरीज व जिले से बाहर गए लोग ही छूट गए हैं। रिफ्यूजल कनवर्जन में रोगी हितधारक मंच (पीएसपी) भी मददगार साबित हुआ। पीएसपी में शामिल फाइलेरिया मरीजों और अन्य सदस्यों ने अहम भूमिका निभाई।

अंतरविभागीय समन्यव का भी दिखा असर

इस बार के एमडीए अभियान में अंतरविभागीय समन्वय का भी असर दिखाई दिया। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक और प्रमुख सचिव- चिकित्सा एवं स्वास्थ्य पार्थ सारथी सेन शर्मा ने बाकायदा जनप्रतिनिधियों व शिक्षा व पंचायतीराज विभागाध्यक्षों को पत्र लिखकर सहयोग की अपेक्षा की थी। उसका नतीजा यह हुआ कि अभियान के दौरान जनप्रतिनिधियों, प्रधानों, कोटेदारों और उपखंड विकास अधिकारियों ने भरपूर सहयोग किया। इसके अलावा शिक्षा विभाग की ओर से जनप्रसार की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई गई।

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना योगी सरकार की प्राथमिकताः बेबी रानी मौर्य

● महिला सुरक्षा और संरक्षण का मजबूत आधार बना वन 'स्टॉप सेंटर'

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार महिलाओं के सशक्तीकरण, सुरक्षा और स्वावलंबन के लिए व्यापक स्तर पर कार्य कर रही है। प्रदेश का महिला एवं बाल विकास विभाग महिलाओं की सामाजिकए आर्थिकए राजनीतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों को प्रेरित करने के साथ.साथ उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने और लैंगिक समानता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कई प्रभावी योजनाओं का संचालन कर रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की महिला उत्थान केंद्रित योजनाएं आज महिलाओं के समावेशी विकास और आत्मनिर्भरता के लिए तेजी से कार्यान्वित की जा रही हैं। सीएम योगी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन सुनिश्चित करने की दिशा में संचालित 'वन स्टॉप सेंटर' पीड़ित महिलाओं और बालिकाओं के लिए संबल बनकर उभरा है। वन स्टॉप सेंटर के माध्यम से अब तक 2 लाख से अधिक पीड़ित महिलाओं को सहायता दी जा चुकी है। घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, यौन उत्पीड़न, बाल विवाह, शोषण और लैंगिक भेदभाव से पीड़ित महिलाओं को इन केंद्रों पर न केवल चिकित्सा और कानूनी सहायता मिल रही है, बल्कि उन्हें पुनर्वास और काउंसलिंग की भी सुविधा प्रदान की जा रही है।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ते हुएए योगी सरकार ने 181 महिला हेल्पलाइन के माध्यम से 7 लाख से अधिक महिलाओं को मदद पहुंचाई है। इसके अलावाए प्रदेशभर में 1100 पिंक शौचालयों का निर्माण कर महिलाओं की गरिमा और सुविधा का ध्यान रखा गया है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला कल्याण मंत्री बेबी रानी मौर्य द्वारा वन स्टॉप सेंटर के रेस्क्यू वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना करना इस योजना को और प्रभावी ढंग से लागू करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस दौरान मंत्री बेबी रानी मौर्य ने कहा कि योगी सरकार की प्राथमिकता महिलाओं का उत्थान और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। वन स्टॉप सेंटर आज उत्तर प्रदेश में महिला सुरक्षा और संरक्षण का मजबूत आधार बन गया है। उन्होंने कहा कि महिला ऐसी शक्ति है जो समाज और देश में सकारात्मक बदलाव ला सकती है। महिलाएं किसी भी समस्या से निपटने की क्षमता में पुरुषों से पीछे नहीं हैं। प्रदेश सरकार की सभी योजनाओं का लाभ महिलाओं और बालिकाओं तक पहुंचाना हमारी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हमेशा महिलाओं के सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी है। सरकार द्वारा लागू की गई योजनाएं महिलाओं के विकास और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दे रही हैं। सरकार महिला सशक्तीकरण के प्रति अपने दायित्व को पूरी प्रतिबद्धता के साथ निभा रही है। महिला सुरक्षाए शिक्षाए रोजगार और सामाजिक न्याय की दिशा में यूपी सरकार के ये प्रयास आने वाले समय में महिलाओं को और अधिक सशक्त बनाएंगे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप महिलाओं और बालिकाओं के हित में संचालित योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए महिला कल्याण एवं बाल विकास विभाग बेहतर रणनीति के तहत काम कर रही है। जिससे अधिक से अधिक पात्र महिलाएं लाभान्वित हो सकें। यही वजह है कि आज यूपी की महिलाएं स्वावलंबन की ओर बढ़ रही हैं। योगी सरकार निराश्रित महिलाओं के जीवन.यापन में आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से उन्हें प्रतिमाह 1000 रुपये की पेंशन उपलब्ध करा रही है।

इस योजना के तहत प्रदेश की 34ण्14 लाख निराश्रित महिलाएं लाभान्वित हो रही हैं। इसके अलावाए हिंसा से पीड़ित और असहाय महिलाओं को संबल देने के लिए संचालित आश्रय गृह उन्हें स्वावलंबन की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। महिलाओं और बालिकाओं की सुरक्षा और संरक्षण के लिए ष्मिशन शक्ति अभियानष् तथा ष्बेटी बचाओए बेटी पढ़ाओष् योजना प्रभावी रूप से संचालित हो रही है। घरेलू हिंसाए बाल विवाहए यौन शोषणए दहेज प्रथा और लैंगिक समानता जैसे विषयों पर घर.घर जाकर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इन प्रयासों से महिलाओं को उनके अधिकारों की जानकारी मिल रही है और वे सशक्त होकर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

भाजपा सरकार में कोई भी सुरक्षित नहीं हैः अखिलेश

लखनऊ। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार ने प्रदेश की कानून व्यवस्था को बर्बाद कर दिया है। भ्रष्टाचार चरम पर है। सरकारी विभागों में ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार फैला हुआ है। हर स्तर पर लूट, घपले चल रहे हैं। भ्रष्टाचारियों और अपराधियों को सरकार का संरक्षण मिला हुआ है। वे खुलेआम सरकारी धन की बंदरबांट कर रहे है। कालाबाजारी जमकर चल रही है। अखिलेश यादव ने कहा कि इस सरकार में भ्रष्टाचार इस स्तर तक पहुंच गया है कि भ्रष्टाचार के मामलों को उजागर करने वाले पत्रकारों को धमकियां मिल रही है। उनकी हत्या तक हो जाती हैं। बीते शनिवार को सीतापुर में भ्रष्टाचार उजागर करने वाले पत्रकार की हत्या हो गई। भाजपा सरकार में कोई भी सुरक्षित नहीं है। सीतापुर में पत्रकार राघवेन्द्र बाजपेई की दिन दहाड़े हत्या कानून व्यवस्था पर भाजपा सरकार की जीरों टॉलरेंस की पोल खोल रही है।

यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने उत्तर प्रदेश में अराजकता फैला रखी है। पत्रकार राघवेन्द्र बाजपेई को गोलियों से छलनी करने पर सरकार खामोश है। अगर एक पत्रकार सुरक्षित नहीं है तो आम जनता की क्या स्थिति होगी इसका बस अंदाजा लगाया जा सकता है। हैरानी की बात है कि भाजपा सरकार खुद झूठ और लूट को बढ़ावा देने की नीति पर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने सदन में महाकुंभ में तीस करोड़ कमाने वाले का झूठा हिसाब तो दे दिया लेकिन अपनों को खो देने वालों के प्रति संवेदना तक नहीं जताई और न ही महाकुंभ में भगदड़ में मरने वालों की संख्या बताई।

अखिलेश यादव ने कहा कि जब सरकार खुद हिस्ट्रीसीटरों और अपराधियों का विधानसभा में खड़े होकर महिमामंडन करेगी तो कानून व्यवस्था कैसे सुधरेगी, सरकार खुद धोखेबाजो, ठगों, भ्रष्टाचारियों और अपराधियों को संरक्षण देती नहीं थकती है। वहीं दूसरी तरफलोकतंत्र, संविधान को मानने वालों के साथ दुश्मनों जैसा व्यवहार करती है।

भाजपा सरकार सच दिखाने पर पत्रकारों को धमकाती हैं, उन्हें तरह.तरह से प्रताड़ित करती है। अभिव्यक्ति की आजादी कुचलने का कोई मौका नहीं छोड़ती है। सत्य बोलने और सच दिखाने वालों को जेल में डाल दिया जाता है। फर्जी मुकदमा लगाया जाता है। भाजपा सरकार का पूरा सिस्टम भ्रष्टाचार और सच्चाई दबाने में लगा हुआ है। यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में अपराधी बेखौफ है। कानून व्यवस्था और भ्रष्टाचारियों पर सरकार के सारे दावे झूठे हैं। जनता 2027 में भाजपा सरकार को हटाकर राज्य को भाजपा के जंगलराज से मुक्ति दिलाएगी।

ग्रामीण के पात्रों के चयन में सहायक सिद्ध होंगी ग्राम चौपालेंः केशव प्रसाद मौर्य

● 04 लाख 81 हजार से अधिक प्रकरणों का किया गया निस्तारण

लखनऊ। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के नेतृत्व व निर्देशन में ग्रामीणो की समस्यायों के निराकरण हेतु प्रदेश के प्रत्येक विकास खण्ड की दो ग्राम पंचायतों में प्रत्येक शुक्रवार को ग्राम चौपाल, (गांव की समस्या .गांव में समाधान) का आयोजन किया जा रहा है, और बहुत बड़ी संख्या में लोगों की समस्यायों का निराकरण उनके गांव में ही हो रहा है। सरकार खुद चलकर गांव व गरीबों के पास जा रही है, ग्राम चौपालों से जहां गांवों में चल रही विभिन्न परियोजनाओं की जमीनी हकीकत का पता चलता हैए वहीं सोशल सेक्टर की योजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी आ रही है।उप मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य के निर्देशों के अनुपालन में ठोस व प्रभावी रूपरेखा बनाकर चौपालों का आयोजन किया जा रहा है तथा चौपालों से पूर्व गांवों में सफाई पर विशेष रूप से फोकस किया जा रहा है और चौपालों के बारे में अधिक से अधिक प्रचार प्रसार भी किया जा रहा है व्यक्तिगत समस्याओं? के अलावा सार्वजनिक समस्याओं का भी समाधान चौपालों में हो रहा है।उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सम्बंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि ग्राम चौपालों का आयोजन विधिवत किया जाता रहे। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि प्रधानमंत्री आवास योजना. ग्रामीण में नये मानकों के अनुरूप नये पात्र लाभार्थियों के चयन में ग्राम चौपालो की अहम् भूमिका रहेगी, इन चौपालों में सम्बन्धित ग्राम सभाओं के पात्रों के चयनध्सर्वे में पारदर्शिता का विधिवत आंकलन भी हो सकेगा। ज्ञातव्य है कि नये पात्र लोगों का चयन 31मार्च 2025 तक हर हाल में किये जाने की समय.सीमा निर्धारित की गयी है। ग्राम्य विकास विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार को प्रदेश की 1268ग्राम पंचायतों में ग्राम चौपाल का आयोजन किया गयाए जिनमें 3100 प्रकरणो का निस्तारण गांव पंचायतों में ही कर दिया गया।इन ग्राम चौपालों मे 3210ब्लाक स्तरीय अधिकारी व कर्मचारी तथा 6366 ग्राम स्तरीय कर्मचारी मौजूद रहे और इन चौपालों में 64 हजार से अधिक ग्रामीणों ने सहभागिता की। आयुक्त ग्राम्य विकास विभाग एस प्रियदर्शी ने बताया कि जनवरी 23 से अब तक 01 लाख 29 हजार से अधिक ग्राम चौपालों का आयोजन किया जा चुका हैएजिनमें 87 लाख 18 हजार से अधिक ग्रामवासी मौजूद रहे और 04 लाख 81 हजार से अधिक समस्याओं/प्रकरणों का निस्तारण किया गया।

सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने पर विशेष जोरः परिवहन आयुक्त

● नवागंतुक से लेकर शीर्षस्थ अफसरों को दिया जाएगा प्रशिक्षण,

● अपर परिवहन आयुक्त प्रशासन की अध्यक्षता में ट्रेनिंग सेल गठित

लखनऊ। परिवहन आयुक्त ब्रजेश नारायण सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने पर विशेष जोर है। इस संदर्भ में समय-समय पर बैठक कर वे परिवहन विभाग के अधिकारियों को दिशा निर्देश भी देते हैं। विभागीय अधिकारी व कर्मचारी नवीनतम तकनीक से लैंस हों, इस पर भी उनका विशेष फोकस है। इसी क्रम में अब परिवहन विभाग के शीर्षस्थ अधिकारियों से लेकर कर्मचारियों का प्रशिक्षण कराकर उन्हें तकनीक से लैस भी किया जाएगा। इसके लिए इंस्टीट्यूट ऑफ ड्राइविंग ट्रेनिंग एंड रिसर्च रायबरेली को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में विकसित किया जा रहा है। परिवहन आयुक्त ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए अपर परिवहन आयुक्त की अध्यक्षता में ट्रेनिंग सेल का गठन भी किया है। वहीं बस्ती के संभागीय परिवहन अधिकारी फरीउद्दीन को सेंटर ऑफएक्सीलेंस का नोडल अधिकारी बनाया गया है।

परिवहन आयुक्त ब्रजेश नारायण सिंह ने बताया कि इंस्टीट्यूट आफ ड्राइविंग ट्रेनिंग एण्ड रिसर्च ;आईडीटीआरद्ध रायबरेली को ष्सेंटर आफएक्सीलेंसष् के रूप में विकसित किया जा रहा है। प्रयास है कि प्रदेश के परिवहन अधिकारियों के लिये स्थायी एवं आधुनिक प्रशिक्षण प्रणाली स्थापित की जा सके। यहां विभागीय अधिकारियों को नवीनतम् प्रौद्यौगिकीए डेटा आधारित नीति निर्माणए प्रवर्तन रणनीतियों और ई.गवर्नेंस आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा। यहां सभी स्तर के अधिकारियों आरआई, पीटीओ, एआरटीओ, आरटीओ, डीटीसी, एटीसी आदि के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित होंगे। इसके साथ ही नवागंतुक अधिकारियों व कर्मचारियों के लिये प्रशिक्षण तथा विभाग में कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों के लिये रिफ्रेशर कोर्स के साथ ही समय.समय पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित होंगे।

श्री सिंह ने बताया कि परिवहन अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम का विकास उत्तर प्रदेश की आवश्यकताओं, देश में परिवहन क्षेत्र में हो रहे बदलावों तथा सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के निर्देशों के अनुरूप किया जायेगा। इसके अतिरिक्त वैश्विक स्तर पर परिवहन क्षेत्र में हो रहे नवीनतम विकास को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जायेगाए जिससे अधिकारीगण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रही नवीनतम जानकारियों से भी अवगत हो सकें।

आईडीटीआर को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में विकसित किया जाएगाए जहां परिवहन अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण, रिफ्रेशर, नई योजनाओं व सुधारों को लेकर कार्यशालाएं भी आयोजित की जाएंगी। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में तकनीकी उन्नयन, डेटा एनालिटिक्स, ऑर्टिफिशियल इंटेलीजेंस पर विशेष फोकस रहेगा। जिससे परिवहन प्रबंधन अधिक डिजिटलए कुशल व डेटा संचालित हो सके। स्मार्ट ट्रैफिक मैनेजमेंटए स्वचालित ड्राइविंग परीक्षण प्रणालीए सड़क सुरक्षा विश्लेषण और ई.गवर्नेंस को प्रशिक्षण का अभिन्न अंग बनाया जाएगा। पाठ्यक्रम को व्यावहारिक अनुभव और केस स्टडी आधारित प्रशिक्षण मॉडल के अनुसार विकसित किया जायेगाए जिससे अधिकारी नीति निर्माण व प्रवर्तन प्रक्रियाओं को समझ सकें और उन्हें आधुनिक परिवहन चुनौतियों का प्रभावी समाधान भी मिल सकें। प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से परिवहन अधिकारियों को सड़क कर संग्रह, परमिट प्रणाली, प्रवर्तन तकनीकों और आधुनिक ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम पर नियमित प्रशिक्षण मिलेगा, जिससे उनकी प्रशासनिक दक्षता में भी वृद्धि होगी।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण प्रकोष्ठ (ट्रेनिंग सेल) का गठन किया गया है। सेल की अध्यक्ष अपर परिवहन आयुक्त (प्रशासन) होंगी।

अपर परिवहन आयुक्त अपर परिवहन आयुक्त ; राजस्व, अपर परिवहन आयुक्त अपर परिवहन आयुक्त परिवहन आयुक्त कार्यालय के वित्त नियंत्रक और सेंटर ऑफ एक्सीलेंस आईडीटीआर रायबरेली के नोडल अधिकारी इसके सदस्य होंगे। मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने के साथ ही अधिकारियों व कर्मचारियों को नवीनतम तकनीक से लैस करने पर भी हमारा जोर है। इसके लिए विभाग के शीर्षस्थ अधिकारियों से लेकर कर्मचारियों का प्रशिक्षण कराया जाएगा। इसी क्रम में लिए इंस्टीट्यूट ऑफ ड्राइविंग ट्रेनिंग एंड रिसर्च रायबरेली को सेंटर ऑफएक्सीलेंस के रूप में विकसित किया जा रहा है। अपर परिवहन आयुक्त प्रशासन की अध्यक्षता में ट्रेनिंग सेल का भी गठन किया है। सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का नोडल अधिकारी भी नामित कर दिया गया है।

पायनियर
लखनऊ, सोमवार, 10 मार्च 2025

महाकुंभ में जलकल विभाग का योगदान अतुलनीयः महापौर सुषमा खर्कवाल

● सेवा देने वाले कर्मियों को किया गया सम्मानित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

महापौर सुषमा खर्कवाल ने महाकुंभ में सेवा देने वाले कर्मियों को रविवार को सम्मानित किया। सम्मान समारोह में महापौर ने कहा कि देशभर में आस्था और श्रद्धा के प्रतीक महाकुंभ 2025 के सफल आयोजन में जलकल विभाग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। करोड़ों श्रद्धालुओं को शुद्ध पेयजल की आपूर्ति, जल निकासी एवं स्वच्छता सेवाएं प्रदान करने में विभाग के कर्मचारियों ने अदम्य साहस और अथक मेहनत का परिचय दिया। महाकुंभ में अपनी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए जलकल विभाग के छह कर्मचारियों कृष्णा बहादुर, अनुज कुमार शुक्ला, महेंद्र तिवारी, मुन्नालाल, प्रेम नारायण दीक्षित एवं गिरजा शंकर को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। महापौर सुषमा खर्कवाल ने कहा महाकुंभ जैसा विराट आयोजन जलकल विभाग की प्रतिबद्धता और कुशल प्रबंधन के बिना संभव नहीं था। विभाग के इन कर्मियों ने अपनी सेवा भावना से न केवल नगर निगम बल्कि पूरे प्रदेश का नाम रोशन किया है। महाकुंभ में जलकल विभाग की इस सराहनीय भूमिका की नगर निगम अधिकारियों एवं शहरवासियों ने भी प्रशंसा की। इस सम्मान समारोह में जलकल कर्मचारियों ने भी अपने अनुभव साझा किए और नगर निगम द्वारा दी गई इस विदाई को अपने जीवन का सबसे गौरवशाली पल बताया।

गुरु तेग बहादुर महाराज की 350वीं शहादत मनायी

लखनऊ। धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सर्वोत्तम बलिदान देने वाले नौंवे गुरु साहिब गुरु तेग बहादुर महाराज की 350वीं शहादत मनायी गई। रविवार को शहादत दिवस को समर्पित करते हुए गुरुद्वारा गुरु रामदास आर्य नगर लखनऊ में सहज पाठों की आरंभता संगतों द्वारा की गई। लखनऊ गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रवक्ता सतपाल सिंह मीत ने बताया कि गुरु तेग बहादुर के 350 में शहीदी वर्ष में केंद्रीय सिंह सभा गुरुद्वारा आलमबाग द्वारा पूरे प्रदेश में 11000 सहज पाठों की आरंभता का अभियान चलाया जा रहा है। जिसके लिए केंद्रीय सिंह सभा के अध्यक्ष सरदार निर्मल सिंह पूरे प्रदेश में गुरुद्वारों में जाकर संगतो को सहज पाठ करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। जिसके अंतर्गत आज गुरुद्वारा गुरु रामदास में संगतों द्वारा सहज पाठों की आरंभता की गई। गुरुद्वारा साहब के मुख सेवादार स0 तेजिंदर सिंह ने बताया कि सहज पाठ करने के लिए संगतों को हिंदी और पंजाबी में सैचियां निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी जिसकी सेवा केंद्रीय सिंह सभा गुरुद्वारा आलमबाग द्वारा करवाई गई हैं। इसी वर्ष के नवंबर माह में गुरु तेग बहादुर महाराज के 350 वें शहीदी दिवस मनाते हुए प्रदेश की संगतों द्वारा सामूहिक रूप से सहज पाठों की समाप्ति करके गुरु साहब को अपनी श्रद्धांजलि दी जाएगी।

मुख्यमंत्री आज तीन साल बेमिसाल, सरोजिनी नगर आभार दिवस कार्यक्रम में होंगे शामिल

● सीएसआर फण्ड से 13 कार्यों का लोकार्पण व शिलान्यास करेंगे सीएम

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सोमवार 10 मार्च को तीन साल बेमिसाल, सरोजनीनगर आभार दिवस कार्यक्रम में शामिल होंगे। कार्यक्रम दोपहर एक बजे से डॉ. भीमराव अम्बेडकर सभागार, डॉ. राम मनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय में होगा।

कार्यक्रम का आयोजन सरोजिनी नगर के विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह की तरफ से किया गया है। इस दौरान सरोजिनी नगर सोलर संवाद व विकास प्रदर्शनी भी आयोजित की जाएगी। इसमें 4000 से अधिक कार्यों की प्रदर्शनी लगेगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यहां सीएसआर फंड से 13 कार्यों का लोकार्पण शिलान्यास भी करेंगे।

इस दिन को ऐतिहासिक बताते हुए विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने होने वाले महोत्सव को अभूतपूर्व बताया। उल्लेखनीय है कि सरोजनीनगर से भाजपा विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह काफी सक्रिता से सरोजनीनगर क्षेत्र में जनहित के लिए कार्य करते चले आ रहे है।

विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह काफी लम्बे समय से आपका विधायक आपके द्वार जन सुनिवाई शिविर का आयोजन कर रहे है जिसके माध्यम से लगातार जन सुनवाई कर लोगों की समस्याओं का निस्तारण कर रहे हैं।

इसके साथ ही प्रतिभाशाली बच्चों को पुरस्कृत कर उन्हें शिक्षा के लिए प्रोत्सोहित भी करते चले आ रहे हैं। इसके साथ ही विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने रामरथ श्रवण अयोध्या यात्रा का भी शुभारंभ किया है जिसके माध्यम से अभी तक काफी बड़ी संख्या में लोगों को अयोध्या राम मंदिर के दर्शन करा चुके हैं।

आईएसए लखनऊ चैप्टर के वार्षिक स्पोर्ट्स फेस्ट का समापन

लखनऊ। इंडियन सोसाइटी ऑफ एनेस्थीसिया (आईएसए) लखनऊ चैप्टर द्वारा आयोजित वार्षिक खेल महोत्सव का भव्य समापन हुआ। यह आयोजन किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के एसपी ग्राउंड पर किया गया, केजीएमयू, संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट, डॉ. राम मनोहर लोहिया संस्थान के डॉक्टरों, निजी चिकित्सकों तथा उनके परिवार के सदस्यों ने भाग लिया। खेल प्रतियोगिताओं में क्रिकेट, टेबल टेनिस और एथलेटिक्स जैसे विभिन्न खेलों का आयोजन किया। एसजीपीजीआई के डॉ. रुद्राशीष हलदार और केजीएमयू के डॉ. मनीष ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विजेता का खिताब जीता। इसके अलावा, डॉ. मनीष, डॉ. सूरज, डॉ. प्रतीक, डॉ. भाव्या सहित कई अन्य चिकित्सकों ने विभिन्न खेलों में भाग लिया। एथलेटिक्स स्पर्धाओं में बच्चों ने भी उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। आईएसए लखनऊ चैप्टर के सचिव डॉ. प्रेम राज सिंह ने बताया कि इस प्रकार की खेल प्रतियोगिताओं से डॉक्टरों में आपसी सौहार्द और फिटनेस को बढ़ावा मिलता है। आईएसए लखनऊ चैप्टर भविष्य में भी इस तरह के आयोजन करता रहेगा ताकि चिकित्सकों और उनके परिवारों के बीच खेल भावना को प्रोत्साहित किया जा सके।

गृहकर संशोधन व समाधान शिविर आयोजित

लखनऊ। भाजपा लखनऊ पूर्व मंडल चार के पूर्व मंडल अध्यक्ष योगेश चतुर्वेदी सोनू के द्वारा अरविंदो पार्क सेक्टर 13 के निकट गृहकर संशोधन व समाधान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के माध्यम से बड़ी संख्या में क्षेत्रीय नागरिकों को लाभ मिला। गृह कर को लेकर काफी लोग जो बहुत लम्बे समय से परेशान चल रहे थे उन्हें इस शिविर में से काफी लाभ मिला और उनकी समस्या का समाधान भी हुआ। नगर निगम जोन 7 द्वारा आयोजित गृहकर संशोधन व समाधान शिविर में बढ़े हुए कर व लगे हुए ब्याज का नगर निगम अधिकारीयों द्वारा त्वरित निस्तारण किया गया। क्षेत्रीय नागरिक तुहिन चतुर्वेदी ने कहा कि इस तरह का शिविर लगातार आयोजित किया जाना चाहिए, इससे लोगों को काफी लाभ मिलता है। लोगों की घर बैठे समस्याओं को समाधान हो जाता है।

मानव श्रंखला बना कर लोगों को किया जागरूक

लखनऊ। गृहकर जमा करने के लिए नग रनिगम अलीगंज द्वारा अनूठी पहल की गयी। कपूरथला चौराहे से क्षेत्रीय कार्यालय तक मानव श्रंखला बना कर लोगों को जागरूक किया। वार्डों में भी अधिकारियों द्वारा हाउस टैक्स जमा कराया गया। रविवार को नगर निगम जोन तीन में गृहकर जमा कराने के लिए अनोखा अभियान चलाया। जोन 3 कार्यालय से कपूरथला चौराहा और अन्य वार्डों में मानव श्रृंखला बनाई। जोनल अधिकारी अमरजीत यादव, जोनल सैनिटरी अधिकारी जितेंद्र गांधी, सफाई एवं खाद्य निरीक्षक संचिता मिश्रा, सतेंद्र नाथ, पुष्कर पटेल शामिल रहे।

सामाजिक सद्भाव को आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता : स्वान्त रंजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान और सामाजिक सद्भाव, लखनऊ महानगर के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को 'अहिंसामयी जीवन का आधार, परस्पर सद्भाव और सौहार्द' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान के प्रेक्षागृह में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख स्वांत रंजन ने कहा कि भारत में हमेशा परस्पर सौहार्द व सदभाव रहा है। सद्भाव और सौहार्द के लिए सभी मत को स्वीकार करना होगा। उन्होंने सामाजिक सद्भाव को आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बताते हुए समाज को सशक्त बनाने की दिशा में एकजुट होने का आह्वान किया।

परिचर्चा को संबोधित करते हुए स्वांत रंजन ने कहा कि धर्म व समाज को बचाना है तो सबको धर्म का आचरण व पालन करना होगा। सत्य अहिंसा व ईमानदारी का आचरण करने से ही धर्म बढ़ता है। उन्होंने कहा कि भारत ने कभी अपने विचारों को बंद नहीं किया। हमने बाहर के विचारों को अपने देश की प्रकृति व संस्कृति के अनुरूप स्वीकार किया। अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख ने कहा कि भारत के अंदर जन्मे सभी मत पंथ व सम्प्रदायों में प्रश्न पूछने का अधिकार है। जबकि भारत के बाहर जन्मे मत पंथों में प्रश्न पूछने की कोई गुंजाइश नहीं है। उन्होंने कहा कि हम लोग अंधानुयायी नहीं हैं। परस्पर मिलन व विचारों का आदान प्रदान होते रहना चाहिए।

हम सब मिलकर परम सत्य को जानने व समझने का प्रयत्न करें। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जैन शोध संस्थान, लखनऊ के उपाध्यक्ष प्रोफेसर अभय जैन ने महावीर स्वामी की शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए परस्पर सौहार्द और सद्भाव बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। अंत में उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान के निदेशक अमित कुमार अग्निहोत्री ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अवध प्रांत के सामाजिक सद्भाव प्रमुख राजेंद्र ने किया। इस अवसर पर संघ के वरिष्ठ प्रचारक अशोक केड़िया, बावन मंदिर अयोध्या के महंत वैदेही वल्लभ शरण महाराज, कार्यक्रम के संयोजक सुशील जैन, सह संयोजक अनुराग श्रीवास्तव, सामाजिक समरसता विभाग के प्रान्त प्रमुख राजकिशोर, प्रान्त के विशेष सम्पर्क प्रमुख प्रशान्त भाटिया,बाल संरक्षण आयोग के सदस्य श्याम त्रिपाठी, नानक चंद लखमानी, सह भाग कार्यवाह सिद्धार्थ प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

डॉ. अनीता सहगल 'वसुंधरा' को मिला बेस्ट एंकर सम्मान

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ। राष्ट्रीय स्तर की उद्घोषिका एवं बालीवुड अभिनेत्री डॉ. अनीता सहगल 'वसुंधरा' को स्मृति चिन्ह व अंगवस्त्रम प्रदान कर बेस्ट एंकर सम्मान से सम्मानित किया गया। राजधानी लखनऊ निवासी डॉ. अनीता सहगल 'वसुंधरा' को यह सम्मान राज्यपाल पंजाब गुलाब चन्द कटारिया ने कान्फीडेरेशन ऑफ वोमेन इन्टरप्रन्योरस ऑफ इन्डिया द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित राइजिंग स्टार्स के आयोजन अवसर पर प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि देश भर के बड़े . बड़े मंचो पर संचालन की जिम्मेदारी निभाने वाली अनीता सहगल को 2000 से अधिक अवार्ड मिल चुके हैं, जिसमें मिसाइल मैन पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम द्वारा अनीता सहगल का बेस्ट एंकर का खिताब शामिल है। अनीता अपनी सफलता का मूलमंत्र टाइम मैनेजमेन्ट को बताती है। इनका सपना है कि पूरी दुनिया मे संचालन ही उनके नाम का पर्याय बने। अनीता सहगल नें पीएम, राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री, राज्यपाल के अनेकों कार्यक्रमों का संचालन बखूबी किया है और आज भी अनवरत करती आ रही है।

पीस कमेटी की बैठक में सौहार्दपूर्वक त्योहार मनाने की अपील

● गुडंबा थाना परिसर में एसडीएम बीकेटी और एसीपी गाजीपुर की अध्यक्षता में हुई बैठक

लखनऊ। गुडंबा थाना परिसर में रविवार को पीस कमेटी की बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता एसडीएम बीकेटी सतीश चंद्र त्रिपाठी और एसीपी गाजीपुर, विक्रम सिंह ने की। बैठक में होली और रमजान के मद्देनजर दोनों समुदायों के गणमान्य व्यक्तियों से त्योहारों को आपसी सौहार्द और भाईचारे के साथ मनाने की अपील की गई।

बैठक के दौरान एसडीएम बीकेटी ने सभी उपस्थित लोगों से अपील की कि वे अपने आसपास की छोटी.छोटी घटनाओं पर नजर रखें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत सूचना प्रशासन को दें। उन्होंने कहा कि त्योहारों को पारंपरिक और शांतिपूर्ण तरीके से ही मनाया जाए। शासन द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करते हुए किसी भी गैर.पारंपरिक जुलूस का आयोजन न करें और ध्वनि विस्तारक यंत्रों ;लाउडस्पीकरद्ध का प्रयोग तय मानकों के अनुसार ही किया जाए।

एसीपी गाजीपुर विक्रम सिंह ने कहा कि डीजे और लाउडस्पीकर की ध्वनि नियंत्रित रहे और किसी भी आपत्तिजनक गीत का प्रसारण न किया जाएए जिससे किसी भी व्यक्ति या समुदाय की भावनाएं आहत हों। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना की सूचना तुरंत उच्चाधिकारियों को दें।

इंस्पेक्टर गुडंबा प्रभातेश श्रीवास्तव ने सोशल मीडिया पर अफवाहों और भ्रामक खबरों को लेकर सतर्कता बरतने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि बिना पुष्टि के किसी भी खबर को आगे न बढ़ाएं। यदि कोई व्यक्ति गलत या भ्रामक सूचना फैलाने में संलिप्त पाया जाता है, तो उसके खिलाफसख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस मौके पर पार्षद दीपक लोधी, पार्षद प्रतिनिधि दीपक तिवारी, मोनू यादव सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रीय नागरिक मौजूद रहे।

सड़क निर्माण पर 300 करोड़ रुपये का बजट प्रस्तावित

लखनऊ। नगर निगम का बजट वर्ष 2025.26 पर चर्चा के लिए नगर निगम मुख्यालय पर कार्यकारिणी समिति की बैठक होगी। इसमें नगर की सफाई और विकास कार्य के मद में व्यय किए जाने वाली धनराशि सहित अन्य मुद्दों पर कार्यकारिणी समिति के सदस्य अपनी राय रखेंगे। सोमवार को नगर निगम मुख्यालय में कार्यकारिणी की बैठक होगी, जिसकी तैयारी नगर निगम ने पूरी की है। बजट में नगर के लोगों पर कोई बोझ नहीं डाला जाएगा। महापौर सुषमा खर्कवाल की अध्यक्षता में नगर निगम मुख्यालय स्थित बाबू राजकुमार श्रीवास्तव कक्ष में सुबह नौ बजे से यह बैठक होगी। इस बार के बजट में नगर की सफाई व्यवस्था और सड़क निर्माण, इंटरलॉकिंग, सड़क मरम्मत आदि पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। जहां सफाई व्यवस्था के लिए 500 करोड़ रुपये से अधिक का बजट प्रस्तावित किया जाएगा, वहीं सड़क निर्माण आदि के लिए 300 करोड़ रुपये का बजट प्रस्तावित किया जाएगा।

मैत्री मैच में वीसी इलेवन ने 18 रन से जीत दर्ज कराई

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के परांजपे ग्राउण्ड पर रविवार को मैत्री मैच के दौरान हुए मुकाबले में 18 रन से मीडिया इलेवन की टीम को वीसी इलेवन की टीम ने हरा कर ट्राफी पर कब्जा किया। मैच के समाप्त होने पर विवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने विजेता और उप विजेता टीमों को ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया। परांजपे मैदान पर वीसी इलेवन ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी की और 20 ओवर में पांच विकेट खोकर 102 रन बनाए। राजीव मनोहर ने सात चौकों की सहायता से 35 रनों की पारी खेली। आशुतोष सिंह ने नाबाद 29 रन बनाये। मीडिया इलेवन की ओर से ऋषि सिंह सेंगर और आशुतोष त्रिपाठी ने दो-दो विकेट चटकाए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी मीडिया इलेवन की टीम आठ विकेट खोकर 84 रन ही बना सकी। रोहित ने 19 और अंजनेय सिंह ने 18 रनों की पारी खेली। वहीं वीसी इलेवन की ओर से विनीत ने चार और प्रवीण गुप्ता ने दो विकेट चटकाए।

छह घंटे की सर्जरी के बाद अंडकोष कैंसर से पीड़ित मरीज की बचाई जान

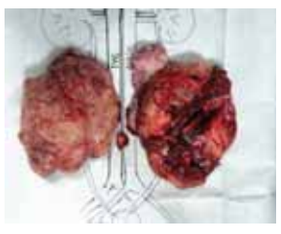

लखनऊ। किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के यूरोलॉजी विभाग के विशेषज्ञों ने एक अंडकोष कैंसर से पीड़ित मरीज की सर्जरी कर उसकी जान बचाई है। मरीज को पेट में गंभीर सूजन, दर्द और उल्टी हो रही थी। साथ ही रोगी भोजन नहीं कर पा रहे थे। बहराइच निवासी 21 वर्षीय मरीज को कार्सिनोमा टेस्टिस (अंडकोष कैंसर) नामक बीमारी थी। जिसने मरीज के जीवन को खतरे में डाल दिया था। सर्जरी और कीमोथेरेपी के बावजूद भी उनके रोग की स्थिति गंभीर हो गई। उन्हें दोनों तरफ बड़े रेट्रोपेरिटोनियल ट्यूमर्स हो गए। उन्हें कार्सिनोमा टेस्टिस का निदान हुआ था और उन्होंने सर्जरी और कीमोथेरेपी करवाई थी, जो आमतौर पर सकारात्मक परिणाम देती है। लेकिन एक दुर्लभ स्थिति में, कैंसर फैल गया। उनके शरीर में दोनों तरफ बहुत बड़ा कैंसर हो गया—एक बाएं तरफ 25 सेंटीमीटर और दूसरे दाएं तरफ 20 सेंटीमीटर व्यास का। ये विशाल कैंसर रेट्रोपेरिटोनियल स्पेस में स्थित थे और प्रमुख रक्त वाहिकाओं और अन्य महत्वपूर्ण पेट के अंगों, जैसे आंतों के पास थे, जिससे जीवन के लिए खतरा पैदा हो रहा था। इन ट्यूमर्स के कारण पेट में गंभीर सूजन, दर्द और उल्टी हो रही थी, जिससे रोगी भोजन नहीं कर पा रहे थे। उनकी स्थिति तेजी से बिगड़ गई और वे अत्यधिक कमजोर हो गए, जिसके बाद उन्होंने कई निजी और सरकारी अस्पतालों से मदद ली। अंततः मरीज के परिजन उसे लेकर केजीएमयू के यूरोलॉजी विभाग में भर्ती कराया, जहां विशेषज्ञों ने इस जटिल मामले को संभालने का निर्णय लिया। मरीज की स्थिति अत्यधिक गंभीर थी, क्योंकि ट्यूमर्स केवल बड़े नहीं थे, बल्कि ये शरीर की सबसे बड़ी रक्त वाहिकाओं को दबा रहे थे, जिससे सर्जरी के दौरान जानलेवा रक्तस्राव का खतरा था। इसके बावजूद, यूरोलॉजी सर्जिकल टीम, जिसमें डॉ. अपुल गोयल, डॉ. मनोज यादव और डॉ. अवनीत गुप्ता शामिल थे, ने सर्जरी करने का निर्णय लिया। सर्जरी छह घंटे तक चली, और यह एक बहुत ही संवेदनशील और चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया थी, क्योंकि ट्यूमर्स प्रमुख रक्त वाहिकाओं और अन्य महत्वपूर्ण पेट के अंगों के पास थे। इसके अतिरिक्त, रोगी की कमजोर स्थिति, जो कैंसर के कारण थी, सर्जरी को और भी कठिन बना रही थी। लेकिन सर्जिकल टीम ने सटीकता और विशेषज्ञता के साथ दोनों ट्यूमर्स को बिना किसी जटिलता के सफलतापूर्वक हटा लिया। सर्जरी के सिर्फ सात दिन बाद मरीज को डिस्चार्ज कर दिया गया है।

मोहनलालगंज विद्युत उपकेन्द्र बदहाली का शिकार

मोहनलालगंज। जेई और एसडीओ के तबादले के बाद भी मोहनलालगंज सबडिविजन में बदइंतजामी की तस्वीर नही बदल सकी है। लिहाजा आने वाली गर्मियों में उपभोक्ताओं को बेहतर बिजली देने की तैयारियां प्रभावित हो रही हैं। जिसे लेकर कई लोगों ने एक्सइएन से शिकायत दर्ज कराई है। मोहनलालगंज के जबरौली और गौतम खेड़ा के मध्य तकरीबन एक किलोमीटर बबूल के घने जंगल में 11 केवी लाइन बेहद जर्जर है। दशकों पुराने जीआई वायर नही बदले जाने से अक्सर तार टूटकर जंगल में गिरते रहते हैं। लाइन में पोल के बीच की दूरी काफी अधिक होने से लटकते तार बिजली संकट की वजह बनते रहते हैं। जिसका खामियाजा सिसेंडी फीडर से पोषित गौतम खेड़ा जबरौली सेवा खेड़ा और परसपुर थट्टा समेत अन्य गांव के उपभोक्ताओं को अक्सर बिजली संकट झेलकर चुकाना पड़ता है। इसी तरह जिला जेल के लगभग साढ़े चार हजार कैदियों को निर्बाध बिजली देने के लिए मोहनलालगंज पुराने सबस्टेशन में अलग फीडर बनाया गया था। लेकिन पिछले कई माह से केबल फॉल्ट की वजह से उक्त फीडर शोपीस बना हुआ है। जबकि जेल की बिजली नए सबस्टेशन के मऊ फीडर से टेपिंग कर चलाई जा रही है। जिससे उपभोक्ताओं को लो वोल्टेज की समस्या का डर सता रहा है। वहीं पुराने और नए सबस्टेशन की सफाई व्यवस्था और टॉयलेट की हालत भी अच्छी नही है। जबकि फत्तेखेड़ा व यूपीएएल सेकेंड फीडर में स्टाफ की बेहद कमी उपभोक्ताओं का दर्द बढ़ा रही है। वहीं नाइट गैंग में इकलौता स्टाफ रहने से अब गर्मियों में उपभोक्ताओं को बिजली संकट की चिंता सता रही है। एक्सइएन श्रवण कुमार सिंह ने बताया समस्याओं की जानकारी मिली है। एसडीओ स्वयं फील्ड विजिट कर समस्याओं का निराकरण कराने में जुटे हुए हैं।

आपूर्ति विभाग घर-घर जाकर बना रहा राशन कार्ड

मोहनलालगंज। गरीबों को मुफ्त खाद्यान्न योजना का लाभ दिलाने के लिए जिला प्रशासन ने घर घर राशन कार्ड बनाने की मुहिम छेड़ दी है। जीरो पावर्टी लाइन के तहत अकेले मोहनलालगंज तहसील में ही साढ़े पांच सौ लोगों के राशन कार्ड बनाने का लक्ष्य है। जिसके लिए आपूर्ति विभाग की टीम गांव के हर जरूरतमंद शख्स से सम्पर्क कर रही है। मोहनलालगंज तहसील के दोनों ब्लॉक में जीरो पावर्टी लाइन के तहत किए गए सर्वे में तकरीबन 550 ऐसे गरीब परिवार चिन्हित किए गए हैं। जिन्हें अब तक सरकार की गरीब कल्याण योजना का लाभ नही मिल सका है।

सरकार ने जिला प्रशासन को इन सभी परिवारों से सम्पर्क कर अतिशीघ्र उनके राशन कार्ड बनाने के निर्देश दिए हैं। ग्राम पंचायत सचिवों से जीरो पावर्टी लाइन का सर्वे कराने के बाद जिला प्रशासन ने लगभग दो हजार जरूरतमंद परिवारों की सूची आपूर्ति विभाग के अधिकारियों को सौंपी है। मोहनलालगंज के सप्लाई इंस्पेक्टर सत्यम मिश्र ने बताया 1467 लोगों की सूची में अधिकांश लोगों के राशन कार्ड पूर्व से बने पाए जा रहे हैं। 295 लोगों के राशन कार्ड बनाए जाने हैं। इन परिवारों से आधार कार्ड और आय प्रमाण पत्र लेकर उनके राशन कार्ड जारी किए जा रहे हैं। जिनके पास आय प्रमाण पत्र नही है तहसीलदार की मदद से ऐसे परिवारों के आय प्रमाण पत्र भी जारी कराए जा रहे हैं।

गोसाईंगंज की सप्लाई इंस्पेक्टर अर्पिता पाण्डेय ने बताया 1389 लोगों की सूची में 255 लोगों के राशन कार्ड बनाए जाने हैं। कोटेदारों को ऐसे सभी परिवारों की लिस्ट देकर उनके अभिलेख एकत्र कराकर प्रतिदिन राशन कार्ड जारी करने का कार्य किया जा रहा है। मोहनलालगंज के बघौना की श्रीमती के परिवार का राशन कार्ड नही होने से उन्हें मुफ्त राशन नही मिल पा रहा था। जीरो पावर्टी लाइन के सर्वे की लिस्ट में उनका नाम शामिल होने के बाद सप्लाई इंस्पेक्टर सत्यम मिश्र ने खुद फोन कर उनके परिवार के कागजात लेकर राशन कार्ड जारी किया तो श्रीमती के परिवार की खुशी का ठिकाना नही रहा। उन्होंने जिला प्रशासन की मुहिम का आभार जताया।

गोसाईंगंज के रायपुर सदरा की बुजुर्ग पच्चो देवी के परिवार को काफी भागदौड़ के बाद भी राशन कार्ड नही मिल सका था। जीरो पावर्टी लाइन सर्वे के बाद सप्लाई इंस्पेक्टर अर्पिता पाण्डेय ने कोटेदार के जरिए उनसे सम्पर्क कर राशन कार्ड जारी किया। राशन कार्ड पाकर बुजुर्ग पच्चो देवी की आंखों से खुशी के आंसू छलछला उठे। उन्होंने प्रशासन को धन्यवाद दिया। गोसाईंगंज की ममता देवी का परिवार राशन कार्ड नही बन पाने से मायूस हो चुका था। जीरो पावर्टी लाइन के सर्वे में उनके परिवार को शामिल किया गया। सप्लाई इंस्पेक्टर अर्पिता पाण्डेय ने उनके घर फोन कर परिवार के आधार कार्ड और आय प्रमाण पत्र लेकर राशन कार्ड उनके घर भिजवाया तो परिवार के लोग खुशी से झूम उठे। उन्होंने आपूर्ति विभाग का आभार जताया।

'महिलाओं को डर के साए में नहीं रहना चाहिए'

● बाइक रैली को सीएम रेखा गुप्ता और एलजी वीके सक्सेना ने किया संबोधित

● सामाजिक कार्यकर्ताओं और पैरालिंपियन सहित सात महिलाओ का सम्मान

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

बाइक रैली में उपराज्यपाल वीके सक्सेना और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने रविवार को पैरालिंपियन सहित सात महिलाओं को सम्मानित किया।

दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने रविवार को यहां एक कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकर्ताओं और पैरालिंपियन सहित सात महिलाओं को सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने आयोजित एक महिला बाइक रैली को संबोधित करते हुए कहा कि महिला बाइक चालक सशक्तीकरण का प्रतीक हैं। उन्होंने कहा, आपने उन लोगों को गलत साबित कर दिया है जो कहते हैं कि महिलाएं कुछ चीजें नहीं कर सकतीं।

सम्मानित होने वाली सात महिलाओं में जम्मू-कश्मीर की पहली अंतरराष्ट्रीय कार रेसर हुमैरा मुश्ताक, अर्जुन पुरस्कार विजेता पहलवान दिव्या काकरान, घरेलू हिंसा से पीड़ित और समान संघर्ष वाली महिलाओं के लिए गैर सरकारी संगठन की स्थापना करने वाली स्वीटी मेहता, मादक पदार्थों के लती लोगों के पुनर्वास के क्षेत्र में व्यापक रूप से काम करने वाली रेखा जिंदल, झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों को कंप्यूटर सिखाने के लिए खुद को समर्पित करने वाली नलिनी अस्थाना, पैरा एथलीट कंचन लखानी और सामाजिक कार्यकर्ता नीतू चौधरी शामिल थीं। बाइक रैली रविवार पूर्वाह्न करीब 11 बजे कॉनॉट प्लेस से शुरू हुई। गुप्ता ने कहा कि यह कार्यक्रम 2013 से हर साल आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने कहा, इससे पहले दिल्ली में एक बड़ी त्रासदी हुई थी।

महिलाओं को डर में नहीं रहना चाहिए, क्योंकि डर के आगे ही जीत है। मुख्यमंत्री ने यह भी याद किया कि वह अपने विश्वविद्यालय के दिनों में काइनेटिक स्कूटर चलाया करती थीं। उपराज्यपाल सक्सेना ने कहा कि बाइक रैली महिलाओं के साहस का प्रदर्शन है। उन्होंने रेखांकित किया कि भारत में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। उप राज्यपाल ने कहा, वास्तव में, कुछ क्षेत्रों में वे पुरुषों से आगे निकल रही हैं। दिल्ली विधानसभा चुनावों के दौरान हमने देखा कि महिला मतदाताओं की संख्या पुरुषों से अधिक थीं।

विशेष स्कूलों में प्रवेश के लिए नियम जारी

● शिक्षा निदेशालय द्वारा जारी परिपत्र के अनुसार सभी प्रवेश वेबसाइट पर ऑनलाइन होंगे

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली सरकार द्वारा संचालित विशेष स्कूलों में प्रवेश स्तर और कक्षा 1 से 9 और 11 में प्रवेश के लिए शिक्षा निदेशालय (डीओई) ने दिशा-निर्देश जारी किए हैं। पिछले सप्ताह निदेशालय द्वारा जारी एक परिपत्र में दिशा-निर्देश जारी किए गए थे।

शिक्षा निदेशालय द्वारा परिपत्र के अनुसार, सभी प्रवेश आधिकारिक वेबसाइट पर ऑनलाइन आयोजित किए जाएंगे। निदेशालय ने यह भी कहा कि प्रवेश सीट की उपलब्धता के अधीन होंगे और यदि आवेदन उपलब्ध सीटों से अधिक हैं तो लॉटरी निकाली जाएगी। दिशा-निर्देशों के अनुसार, जिन छात्रों ने किसी मान्यता प्राप्त स्कूल से पिछली कक्षा उत्तीर्ण की है, उन्हें कक्षा 6 से 9 में सीधे प्रवेश मिलेगा। कक्षा 6 में प्रवेश चाहने वालों को उनकी बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल की जांच के लिए मूल्यांकन से गुजरना होगा।

कक्षा 7 और 8 के लिए आवेदन करने वाले छात्र जिनके पास किसी मान्यता प्राप्त स्कूल से डिग्री नहीं है, उन्हें उनके माता-पिता से एक साधारण वचनबद्धता के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा। दूसरी ओर, कक्षा 9 में प्रवेश चाहने वाले छात्रों को किसी मान्यता प्राप्त स्कूल से डिग्री प्रस्तुत करना आवश्यक होगा।

दिशा-निर्देशों के अनुसार, सरकारी विशेष स्कूलों में प्रवेश के लिए आयु मानदंड शैक्षणिक वर्ष के 31 मार्च तक कक्षा के स्तर पर आधारित हैं। नर्सरी में प्रवेश चाहने वाले छात्रों के लिए आयु सीमा तीन से सात वर्ष, किंडरगार्टन के लिए चार से आठ वर्ष, कक्षा 1 के लिए पांच से नौ वर्ष, कक्षा 2 के लिए छह से 11 वर्ष, कक्षा 3 के लिए सात से 12 वर्ष, कक्षा 4 के लिए आठ से 13 वर्ष और कक्षा 5 के लिए नौ से 14 वर्ष है। कक्षा 6 के लिए आयु सीमा 10-16 वर्ष, कक्षा 7 के लिए 11-17 वर्ष, कक्षा 8 के लिए 12-18 वर्ष और कक्षा 9 के लिए 13-19 वर्ष है। कक्षा 11 में प्रवेश चाहने वाले छात्रों की आयु 15 से 21 वर्ष के बीच होनी चाहिए।

उन्हें माध्यमिक विद्यालय परीक्षा (कक्षा 10) भी उत्तीर्ण करनी चाहिए। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान से कक्षा 10वीं पास करने वाले छात्रों के पास कौशल रहित मानविकी विषय चुनने के लिए पांच विषयों में कम से कम 50 प्रतिशत अंक होने चाहिए और कौशल वाले मानविकी विषय के लिए 45 प्रतिशत अंक होने चाहिए।

दिशानिर्देशों में कक्षा स्तर और स्कूल के विवेक के आधार पर कुछ मामलों में छह महीने तक की छूट का भी उल्लेख किया गया है। विकलांग बच्चों के लिए, शिक्षा विभाग ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि नेत्रहीन छात्रों के लिए स्कूलों में प्रवेश के लिए विकलांगता प्रमाण पत्र या विशिष्ट विकलांगता पहचान पत्र (यूडीआईडी) कार्ड की आवश्यकता होती है। बौद्धिक विकलांग छात्रों के लिए, प्रवेश केवल उन लोगों तक सीमित है जिन्हें आईक्यू स्तरों के आधार पर मध्यम से गहन विकलांगता के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। परिवहन सीमाओं के कारण यमुना पार क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों को प्राथमिकता दी जाएगी।

श्रवण-बाधित छात्रों के लिए, शिक्षा विभाग ने निर्दिष्ट किया है कि केवल गंभीर से गहन श्रवण हानि (61 डीबी से ऊपर) वाले छात्र ही पात्र होंगे परिपत्र में कहा गया है कि यदि आवेदक शिक्षा निदेशालय के किसी विशेष विद्यालय में अध्ययनरत है और उसके अभिभावक आवेदक को उसी विशेष विद्यालय में दाखिला देना चाहते हैं तो आवेदक के भाई-बहन का विवरण ऑनलाइन पंजीकरण फॉर्म में देना होगा। इसके लिए आवेदक/अभिभावक को भाई-बहन का छात्र आईडी और स्कूल का नाम (स्कूल आईडी के साथ) देना होगा, जिसे भाई-बहन के छात्र आईडी-कार्ड/मार्कशीट से या सीधे उस स्कूल से प्राप्त किया जा सकता है, जहां भाई-बहन पढ़ रहा है। उन छात्रों को वरीयता दी जाएगी जिनके भाई-बहन सरकारी विशेष स्कूलों में पढ़ रहे हैं।

दिल्ली में रहने वाले बच्चों को प्राथमिकता दी जाएगी, वहीं गैर-निवासी छात्रावास की सुविधा के लिए आवेदन कर सकते हैं, यदि पात्र दिल्ली स्थित छात्रों को दाखिला देने के बाद सीटें खाली रहती हैं। वैध दस्तावेजों के साथ फीडर स्कूलों से स्थानांतरित होने वाले छात्रों को आयु मानदंड से छूट दी गई है । हालांकि, दिल्ली में रहने वालों को प्राथमिकता दी जाएगी छात्रावास में प्रवेश के लिए आवेदकों की संख्या रिक्तियों से अधिक होने पर, स्कूल से दूरी के अनुसार प्राथमिकता दी जाएगी।

महिलाओं को 2500 रुपए देने का वादा जुमला निकला: आप

● भाजपा ने कमेटी बनाकर स्कीम ठंडे बस्ते में डाला: आतिशी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए देने की भाजपा की गारंटी जुमला साबित होने के बाद आम आदमी पार्टी ने भाजपा की नियत पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं।

आप का कहना है कि भाजपा की विपदा सरकार ने एक कमेटी बनाकर दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए देने की स्कीम को ठंडे बस्ते में डाल दिया है। 8 मार्च को 2500 रुपए देने का मोदी जी का वादा जुमला साबित हो चुका है। मोदी जी ने दूसरा वादा दिल्लीवालों को 500 रुपए में सिलेंडर और होली-दिवाली पर एक-एक सिलेंडर मुफ्त देने का वादा किया था। पांच दिन बाद होली है। भाजपा दिल्लीवालों को होली पर मुफ्त सिलेंडर देकर मोदी जी की दूसरी गारंटी पूरी करे। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री व नेता विपक्ष आतिशी का कहना है कि मोदी जी ने 2500 रुपए को लेकर जानबूझ कर झूठ बोला और महिलाओं को धोखा दिया। नेता विपक्ष आतिशी ने पीएम मोदी की गारंटी जुमला साबित होने के बाद रविवार को मीडिया से बातचीत में कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वादा किया था कि 8 मार्च को सभी महिलाओं के खाते में 2500 रुपए की राशि पहुंच जाएगी।

उन्होंने महिलाओं से कहा था कि अपने फोन नंबर को बैंक खाते से लिंक करा लीजिए, 8 मार्च को मोबाइल पर मैसेज आएगा कि बैंक खाते में 2500 रुपए पहुंच गए हैं। 8 मार्च को भाजपा सरकार की कैबिनेट बैठक हुई। इसमें महिलाओं को 2500 रुपए देने की दूर की बात रही, कौन पात्र है, इसका भी फैसला नहीं हुआ।

पंजाब सरकार कब महिला भत्ता देगी : सचदेवा

● दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने आप प्रमुख और पंजाब सीएम को घेरा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने रविवार को महिलाओं के सम्मान राशि को लेकर केजरीवाल और पंजाब की भगवंत मान सरकार को घेरा।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि, महिला दिवस पर दिल्ली सरकार द्वारा 2025-26 वर्ष के बजट में महिलाओं के सहयोग एवं समानार्थ महिला समृद्धि योजना के अंतर्गत रूपये 5100 करोड़ के प्रवाधान के साथ ही सम्मान राशि वितरण के लिए पंजीकरण नियम आदि बनने की कमेटी की घोषणा के बाद दिल्ली से पंजाब तक आम आदमी पार्टी नेताओं से जवाब देते नहीं बन रहा है। उन्होंने कहा, दिल्ली की मुख्य मंत्री द्वारा बजट 2025-26 में 5100 करोड़ के प्रवाधान से स्पष्ट है कि भाजपा सरकार अब शीघ्र समाज के उपेक्षित वर्ग की महिलाओं को सम्मान राशि देना शुरू करेगी । सचदेवा ने कहा है की पंजाब से मिल रही मीडिया - सोशल मीडिया जानकारी बता रही है की दिल्ली की रेखा गुप्ता सरकार की घोषणा के बाद अब पंजाब की महिलाएं पूछ रही हैं की केजरीवाल - भगवंत मान सरकार हमें कब से घोषित महिला भत्ता देगी।

नव-निर्वाचित विधायकों को जल्द आवंटित होंगे ऑफिस

● विस अध्यक्ष ने जारी किए आदेश

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

विधान सभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने नव-निर्वाचित विधायकों के लिए उनके विधानसभा क्षेत्रों में कार्यालय आवंटित करने की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश जारी किए हैं।

यह निर्णय विधायकों को अपने क्षेत्र की जनता के साथ संपर्क स्थापित करने और प्रभावी जनसेवा सुनिश्चित करने में सहायक होगा। विधानसभा चुनाव 2025 के दौरान, प्रोटोकॉल के अनुसार, पूर्व विधायकों को आवंटित कार्यालय वापस ले लिए गए थे। अब, नए विधायकों के शपथ ग्रहण के बाद, उनके विधायी और क्षेत्रीय कार्यों को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए नए कार्यालयों के आवंटन की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। विधान सभा सचिवालय ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए हैं कि वे विधायकों की आवश्यकताओं और अनुरोधों को ध्यान में रखते हुए कार्यालय आवंटन की प्रक्रिया को शीघ्र पूरा करें। इस पहल का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि नव-निर्वाचित विधायक बिना किसी बाधा के अपने क्षेत्र की जनता की समस्याओं को सुन सकें और उनके समाधान की दिशा में प्रभावी कदम उठा सकें। विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा, हमारे निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को प्रभावी तरीके से जनता की सेवा करने के लिए सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता है। विधानसभा क्षेत्र कार्यालय विधायकों और जनता के बीच सीधा संवाद स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसलिए, हमने यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए हैं कि विधायकों को समय पर कार्यालय उपलब्ध कराए जाएं।

उन्होंने आगे कहा कि यह पहल सुशासन को मजबूत करने और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

विधानसभा क्षेत्र कार्यालयों के माध्यम से विधायक अपने क्षेत्र के नागरिकों से सीधे संवाद कर सकेंगे और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए उचित कदम उठा सकेंगे। यह निर्णय दिल्ली की लोकतांत्रिक प्रणाली को अधिक प्रभावी और उत्तरदायी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संक्षिप्त समाचार

होली मिलन समारोह में रंगारंग कार्यक्रम

नई दिल्ली। सेवा भारती ने प्रांत कार्यालय पर रविवार को होली मिलन के एक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया। इस आयोजन में सेवा भारती द्वारा संचालित विद्यालयों और हॉस्टल के छात्रों ने भाग लिया। सभी कार्यकर्ताओं ने रंग और गुलाल के साथ भारतीय व्यंजनों का भरपूर आनंद लिया। सभी ने एक दूसरे को गुलाल लगाया और गले मिले। मनोरंजन से भरपूर अनेक प्रकार की सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, जिनमें यहाँ के छात्रों द्वारा प्रस्तुत लोक नृत्य, रंगोली, गायन आदि प्रमुख आकर्षण रहे, ने सबका दिल जीत लिया। अनेक प्रकार के मिष्ठान और गोलगप्पों ने कार्यक्रम को और मनमोहक बना दिया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य समाज में समरसता और सद्भावना को बढ़ावा देना रहा। सेवा भारती द्वारा संचालित अनेक प्रकार के सेवा केंद्र, विद्यालय और हॉस्टल न केवल सेवा व शिक्षा का माध्यम हैं, बल्कि समाज को अपनी संस्कृति से जोड़ने और उनके सर्वांगीण विकास का मंच भी हैं।

छात्राओं ने सीखे आत्मरक्षा के दांव पेच

नई दिल्ली। भीमराव अंबेडकर कॉलेज की जेंडर सेंसेटाइजेशन कमेटी ने कॉलेज छात्राओं को आत्मरक्षा के गुरु सिखाने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। दिलली पुलिस की ट्रेनर ने कॉलेज परिसर में छात्राओं के लिए इस कार्यशाला का आयोजन किया। सीलमपुर पुलिस उपायुक्त कार्यालय की हेड कांस्टेबल योगेंद्री, अंशु और मंजू ने कॉलेज की छात्राओं को छेड़छाड़ से बचने और उसका मुंहतोड़ जवाब देने के तौर तरीके का प्रशिक्षण दिया। डॉ मीतू दास ने बताया कि दुष्टों से ना ध्यान हटाइए बल्कि चौकन्ना रहें। कॉलेज प्राचार्य प्रोफेसर सदानंद प्रसाद ने कहा आत्मरक्षा में सबसे बड़ा हथियार आपका आपका मानसिक संबल है। कार्यक्रम की संयोजिका दीपाली जैन ने अपने वक्तव्य में कहा कि आगे भी ऐसी महिला सुरक्षा कार्यशाला आयोजित की जाएंगी।

सट्टेबाजी गिरोह का भंडाफोड़, 11 गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने गोविंदपुरी में एक सट्टेबाजी गिरोह का भंडाफोड़ कर इसके सरगना समेत 11 लोगों को गिरफ्तार किया है। एक पुलिस अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गिरोह के सरगना की पहचान अशोक कुमार उर्फ काले (55) के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि काले अपने बेटे संजू और भतीजे रोहित गुलाटी की मदद से गोविंदपुरी में दो स्थानों से गिरोह चलाता था। इसने कहा कि यह गिरोह खेलों के लिए दांव लगवाता था। अधिकारी के अनुसार, पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर चार मार्च को गोविंदपुरी में दो स्थानों पर छापेमारी की। गिरफ्तार किए गए लोग इन स्थानों पर सट्टा लगाते पाए गए। उनके पास से करीब 83,000 रुपए नकद और अन्य सामग्री जब्त की गई।

सूरज ने दिखाई तल्खी, चढ़ा पारा

नई दिल्ली। दिल्ली में रविवार को अधिकतम तापमान सामान्य से 4.4 डिग्री अधिक 32.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने यह जानकारी दी। दिन में सापेक्षिक आर्द्रता 40 से 91 प्रतिशत के बीच रही और न्यूनतम तापमान 13.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने सोमवार को धुंध छाए रहने का पूर्वानुमान जताया है और अधिकतम व न्यूनतम तापमान क्रमश: 32 डिग्री और 15 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार, राष्ट्रीय राजधानी में शनिवार को वायु गुणवत्ता मध्यम श्रेणी से खराब श्रेणी में पहुंच गई और शाम छह बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 208 दर्ज किया गया।

156 किलोग्राम गांजा बरामद, दो गिरफ्तार

● मादक पदार्थ की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत 77 लाख

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस ने एक अंतरराज्यीय मादक पदार्थ गिरोह का भंडाफोड़ कर दो तस्करों को गिरफ्तार किया है और उनके पास से 156 किलोग्राम गांजा बरामद किया है, जिसकी कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में 78 लाख रुपए है। एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी।

पुलिस के एक अधिकारी ने बताया, दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने हाल ही में विशेष सूचना के आधार पर कार्वाई शुरू की। 24 फरवरी को राजा गार्डन पुल के पास जाल बिछाया गया।

इस दौरान राजस्थान के रहने वाले विजय सिंह (43) को रोका गया और उसकी एसयूवी की तलाशी ली गई, जिसमें 75 प्लास्टिक की बोरियों में गांजा भरा हुआ था। पुलिस ने बताया कि पूछताछ के दौरान विजय ने बताया कि वह मादक पदार्थ की तस्करी करने वाले विनीत नामक व्यक्ति के लिए काम करता है और नागपुर से मादक पदार्थ खरीदता है। उसने बताया कि आरोपी का मुख्य काम दिल्ली के सोनिया विहार निवासी अमित को मादक पदार्थ की खेप पहुंचाना था। अमित को 28 फरवरी को ही गिरफ्तार कर लिया गया था। पुलिस ने बताया कि जांच के दौरान पता चला कि अमित, विनीत का करीबी रिश्तेदार था और दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में संभावित खरीदारों को गांजा पहुंचाता था।

उसने बताया कि अमित पहले भी अपराधों में शामिल रह चुका है। वह आबकारी से संबंधित चार मामलों और बलात्कार के एक मामले में भी संलिप्त था।

वृद्धा से चार लाख रुपये के गहने ठगने वाले तीन धरे

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने एक वृद्ध महिला को धोखा देकर उसके चार लाख रुपए के गहने ठगने के आरोप में एक गिरोह के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस के अनुसार, आरोपियों की पहचान प्रेम (22), राहुल (25) और पूनम (35) के रूप में हुई है। ये सभी गद्दी गैंग के सदस्य हैं। आरोपियों ने बाजार में एक वृद्ध महिला को नकली नोट दिखाकर उसे ठगने की साजिश रची। उन्होंने महिला को भरोसे में लेकर उससे चार लाख रुपए के गहने ले लिए और बदले में जाली नोट पकड़ा दिए। यह घटना 19 फरवरी को हुई। महिला को जब ठगी का पता चला तो उसने तुरंत पुलिस में शिकायत दर्ज कराई।

विकास लगरपुरिया गिरोह का वांछित शार्प शूटर पकड़ा गया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने विकास लगरपुरिया गिरोह के वांछित शार्पशूटर अमित (32) उर्फ मिट्ठा को गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस अधिकारी के अनुसार, अमित हत्या के प्रयास मामले में वांछित था और उस पर कई गंभीर अपराधों में शामिल होने का आरोप है। वह रोशनपुरा, नजफगढ़ का निवासी है और उसे द्वारका सेक्टर-23 के पास से पकड़ा गया। पुलिस अधिकारी ने बताया, अमित के पास से 0.32 बोर की देसी पिस्तौल और तीन कारतूस बरामद किए गए। पुलिस के अनुसार, अमित दिल्ली-एनसीआर में लूट, हत्या के प्रयास और शस्त्र अधिनियम के उल्लंघन सहित आठ से अधिक गंभीर आपराधिक मामलों में शामिल रहा है।

पुलिस ने बताया कि आरोपी वर्ष 2016 से आपराधिक गतिविधियों में सक्रिय है और गुरुग्राम में वाहन कब्जाने के मामले में गिरफ्तार हो चुका है। पुलिस को सूचना मिली थी कि अमित अपने एक साथी के साथ नई वारदात की योजना बनाने के लिए मिलने वाला है, इसके बाद अपराध शाखा ने जाल बिछाकर उसे पकड़ लिया। पुलिस मामलों की जांच कर रही है।

होली पर 60 हजार करोड़ के व्यापार की उम्मीद: कैट

● त्यौहार पर हर्बल रंगों की भारी खरीद

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

कन्फ़ेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री एवं चांदनी चौक से भाजपा सांसद ने इस बार होली पर 60 हजार करोड़ से अधिक के व्यापार होने की संभावना जताई है। खंडेलवाल ने कहा, होली से आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है, जिससे स्थानीय व्यवसायों, छोटे व्यापारियों, लघु उद्योगों एवं एमएसएमई सेक्टर विशेष रूप से लाभ होता है।

यह होली देश भर में व्यापारियों और खुदरा विक्रेताओं के लिए भी फायदेमंद साबित होगी। उन्होंने कहा, कैट के आंकड़ों के अनुसार, इस वर्ष होली का त्योहार व्यापारियों के लिए 60,000 करोड़ रुपये से अधिक का व्यापार होने की उम्मीद है, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 20 फीसदी अधिक है। पिछले वर्ष यही कारोबार लगभग 50 हज़ार करोड़ रुपये का था। एक अनुमान के अनुसार दिल्ली के बाजारों में ही लगभग 8 हज़ार करोड़ से अधिक के व्यापार होने की संभावना है। खंडेलवाल ने बताया की इस वर्ष भी दिल्ली सहित देश भर में भर में बड़े पैमाने पर होली समारोहों का आयोजन हो रहा है जिसके चलते बैंक्वेट हाल, फार्म हाउस, होटलों, रेस्टोरेंट एवं सार्वजनिक पार्कों में होली समारोहों आयोजनों का तांता लगा हुआ है7 अकेले दिल्ली भर में छोटे बड़े मिलाकर 3 हज़ार से ज़्यादा होली मिलन समारोह आयोजित हो रहे हैं और सभी कार्यक्रमों में शामिल लोगों को चेहरों पर एक नई खुशी तथा उत्साह का वातावरण देखने को मिल रहा है। बड़ी संख्या में व्यापारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संगठन होली मिलन समारोह आयोजित कर रहे हैं।

प्रवीन खंडेलवाल ने कहा की पिछले वर्षों की तरह इस बार भी होली की त्यौहारी बिक्री में चीन का बने हुए सामान का व्यापारियों एवं ग्राहकों ने बहिष्कार किया और केवल भारत में ही निर्मित हर्बल रंग एवं गुलाल, पिचकारी, गुब्बारे, चंदन , पूजा सामग्री, परिधान सहित अन्य सामानों की जमकर बिक्री हो रही है वहीं मिठाइयां, ड्राई फ्रूट , गिफ्ट आइटम्स, फूल एवं फल, कपड़े , फ़र्निशिंग फैब्रिक, किराना, एफएमसीजी प्रोडक्ट, कंज्यूमर ड्युरेबल्स सहित अन्य अनेकों उत्पादों की भी ज़बरदस्त माँग बाज़ारों में दिखाई दे रही है । उपभोक्ता खर्च में वृद्धि के चलते विभिन्न व्यापार के क्षेत्रों में होली की त्यौहारों की बिक्री तेजी से हो रही है। रंग-अबीर खेलने के लिए लोग सफेद टी-शर्ट और कुर्ता-पाजामा, सलवार सूट की मांग कर रहे हैं। वहीं, हैप्पी होली लिखे टी-शर्ट की मांग भी बाज़ार में लगातार बनी हुई है। होली का पर्व नजदीक आते ही दिल्ली के सभी थोक एवं खुदरा बाजार पूरी तरह सजे हुए हैं। सभी बाजारों में दुकानों पर गुलाल और पिचकारी के साथ होली के अन्य सामानों की खरीदारी के लिए भीड़ लगी है। होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि भोजन और व्यंजनों का भी पर्व है।

बांग्लादेश में मोबाइल की तस्करी करने वाले गिरोह का भंडाफोड़

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने चोरी के 48 महंगे मोबाइल फोन लेकर कथित तौर पर भागने की कोशिश कर रहे एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर एक अंतरराष्ट्रीय मोबाइल चोर गिरोह का भंडाफोड़ किया।

अधिकारी ने बताया कि इन चोरी किए हुए मोबाइल फोन को बांग्लादेश में बेचा जाना था। पुलिस ने बताया कि आरोपी अब्दुश (24) को पश्चिम बंगाल में करीब 20 लाख रुपए के मोबाइल फोन ले जाने की कोशिश करते समय गिरफ्तार किया गया। पुलिस उपायुक्त (अपराध) आदित्य गौतम ने बताया, जांच में सामने आया कि संगठित गिरोह दिल्ली-एनसीआर (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) में सक्रिय हैं, जो मेट्रो स्टेशन, बसों और भीड़भाड़ वाले बाजारों में लोगों को निशाना बनाता है।

पायनियर

लखनऊ, सोमवार, 10 मार्च 2025

विधि के छात्रों को आत्मचिंतन करने की जरूरतः न्यायमूर्ति एमसी त्रिपाठी

स्वयं को अपने व्यवसाय के प्रति वफादार बनाएं विद्यार्थीः कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विधि संकाय में राष्ट्रीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता विधि कुंभ ज्ञान और कौशल समागम हुआ संपन्न

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विधि संकाय में दो दिवसीय राष्ट्रीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता विधि कुंभरू ज्ञान और कौशल समागम का शनिवार को संपन्न हो गया। सीनेट परिसर स्थित प्रो ईश्वर टोपा अकादमिक कॉम्प्लेक्स में हुए समापन समारोह में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बतौर विशिष्ट अतिथि शामिल हुए। न्यायाधीश न्यायमूर्ति महेश चंद्र त्रिपाठी को प्रो आदेश कुमार ने स्मृति चिह्न और पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया। न्यायाधीश न्यायमूर्ति नंद प्रभा शुक्ला को डा अंशुमान मिश्रा ने स्मृति चिह्न और पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया। न्यायाधीश क्षितिज शैलेंद्र को डा अजय सिंह ने स्मृति चिह्न और पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया। कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव को विधि संकाय के डीन प्रो आदेश कुमार ने स्मृति चिह्न और पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया। विशिष्ट अतिथि इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति महेश चंद्र त्रिपाठी ने कहा कि विश्वविद्यालयों में नियुक्ति के बाद विधि विभाग नए आयाम स्थापित कर रहा है। पूरब के ऑक्सफोर्ड का गौरव लौट रहा है। उन्होंने कहा कि मूट कोर्ट का उद्देश्य युवाओं में मूलभूत स्किल को विकसित करना है। मूट कोर्ट का अनुभव विद्यार्थियों को एक वकील के तौर कर कार्य करने के तरीके को सीखने में मद्द करेगा। उन्होंने कहा कि विधि के छात्रों को आत्मचिंतन करने की जरूरत है। आप जब ला फर्म वकील और कारपोरेट क्षेत्र में से जहां भी जाना चाहते हैं उससे पहले स्वयं की क्षमताओं का अवलोकन करें। उन्होंने विधि छात्रों को सलाह दी कि पहले किसी सीनियर के चैंबर को ज्वाइन करके तौर तरीके सीखें। थोड़ा धैर्य रखें जब आप सक्षम हो जाएंगे तो बेहतर कर पाएंगे। युवा कृत संकल्पित हैं वह भीड़ से न डरें। पूरी मेहनत से स्वयं को स्थापित करें। न्यायाधीश न्यायमूर्ति नंद प्रभा शुक्ला ने कहा कि सहभाग करने वाले विद्यार्थियों को मूट कोर्ट बहुत कुछ सिखाता है। यह मंच विद्यार्थियों को प्रायोगिक जानकारी देता है। न्यायाधीश न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेंद्र ने विधि विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि कानून का क्षेत्र केवल विश्वास पर आधारित है। अपनी छवि को बनाए रखना ही सबसे महत्वपूर्ण है। ऐसे में विधि क्षेत्र में अपनी सकारात्मक छवि को बनाए रखें। उन्होंने कहा कि किताबें डिजिटल प्लेटफार्म से अतिरिक्त जानकारी उपलब्ध करवा देती हैं। ऐसे में किताबें से लगाव बनाए रखें। विधि के विद्यार्थी सदैव निष्पक्ष रहें। कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव

कार्यक्रम की अध्यक्ष कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि आपको सक्षम वकील बनने के लिए स्वयं को सक्षम बनाना होगा। कार्य के साथ परिश्रम आवश्यक है और कार्य के साथ हमें जिम्मेदारी भी आती है। अपनी गलतियों को पहचानें और स्वयं को सक्षम बनाओ। उन्होंने कहा कि बोलने शोध करने और तथ्यों को सही तरीके से रखने सीखना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि जल्द ही अमिताभ बच्चन स्वयं आकर हरिवंश राय बच्चन सांस्कृतिक केंद्र के परिसर का उद्घाटन करेंगे। उन्होंने कहा कि रविंद्र नाथ टैगोर का जीवन हमें सच के साथ खड़ा रहने की प्रेरणा देता है। विधि के विद्यार्थियों को सदैव निष्पक्ष रहना सिखाता है। उन्होंने विद्यार्थियों को सीख दी कि स्वयं को अपने व्यवसाय के प्रति वफादार बनाएं। इससे पूर्व विधि संकाय के संकायाध्यक्ष प्रो आदेश कुमार ने स्वागत किया। राष्ट्रीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता की आयोजन सचिव डॉ विजय लक्ष्मी सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने मूट कोर्ट की प्रतियोगिताओं के लिए समय देने के लिए न्यायधीशों का भी धन्यवाद दिया। मूट कोर्ट सोसायटी की संयोजिका डॉ सोनल शंकर अंशुमान मिश्र डा अजय सिंह डा हरवंश सिंह डा नवीन वर्मा डा मुक्ता वर्मा डा अनुराग दीप डा प्रिया विजय डा इस्मिता श्रीवास्तव डा संजीव कुमार डा अभिषेक डा नरेंद्र कुमार डा संध्या वर्मा डा भीम सिंह मीना डा रश्मि ठाकुर आदि रहे।

मत रोको सांवरिया घूंघट में, मुझे नील गगन तक जाने दो-दिव्या

काव्य दीप की ओर से आयोजित रंगोत्सव कवि गोष्ठी हुई संपन्न

सोनभद्र। रविवार को चुर्क स्थित कवि दिलीप सिंह दीपक के आवास पर साहित्यिक संस्था काव्य दीप द्वारा वरिष्ठ साहित्यकार अजय चतुर्वेदी कक्का के अध्यक्षता व अशोक तिवारी के संचालन में रंगोत्सव कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का शुभारम्भ मां सरस्वती को माल्यार्पण दीपदान पश्चात कवि दिवाकर द्विवेदी मेघ की वंदना, तेरे चरण की वंदना मां हम सदा करते रहें के साथ हुआ। शहीद स्थल प्रबंधन ट्रस्ट करारी के निदेशक प्रदुम्न त्रिपाठी ने, वीरों ने होली खूंनो से खेली फांसी चढे जै हिंद थी बोली, केसरिया रंग रंगा रसिया फागुन में सुनाया और वाहवाही बटोरी। सुधाकर पांडेय स्वदेश प्रेम ने खेलन आई होरी सुंदरी, खेलन आई होरी, सुनाया और सराहे गए। दयानंद दयालू ने सोनभद्र हमार उड़े जहां रंगवा अबीरिया सुनाया। धर्मेश चौहान ने, लगता है भंवरा बन कर पास तेरे आऊं जब तूं मुस्काती है सुनाया और गतिज ऊर्जा दिये। सोन साहित्य संगम के संयोजक राकेश शरण मिश्र ने आंसू और आह से संबंधित रचना सुनाया और करुण रस का संचार कर सबको भावविह्वल कर दिया। प्रभात सिंह चंदेल ने वीर रस की रचना सरहद के जवानों को समर्पित सुनाया और वाहवाही लूटी। संयोजक दिलीप सिंह दीपक ने रंग उड़ाने लगे मुरारी भस्म उड़ाते हैं त्रिपुरारी सुनाया और शमां बांध दिए। जयराम सोनी ने हास्य व्यंग्य सुनाकर श्रोताओं को देर तक हंसाते रहे। ओजस्वी कवयित्री कौशल्या कुमारी चौहान ने अपनी रचना कितना सुन्दर देश हमारा खुदा ने खुश होकर धरती पर खुद है स्वर्ग उतारा। सुनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया अशोक तिवारी ने, अदब से उल्फत है जुर्म तो फिर ए जुर्म हम सौ बार करेंगे सुनाया। कवयित्री दिव्या राय ने मत रोको सांवरिया घूंघट में मुझे नील गगन तक जाने दो सुनाकर नारी सशक्तिकरण पर चिंतन दिया। अध्यक्षता करते हुए अजय चतुर्वेदी कक्का ने जनजन के मुड्डे पर फगुन सवार हो का करीं, होली के सबही पर चढल बुखार हो का करीं सुनाया। इस अवसर पर निहाल यादव अश्विनी कुमार शुभम मुकेश अनुराग मोहित ऋषभ त्रिपाठी ठाकुर कुशवाहा पुरुषोत्तम कुशवाहा आदि रहे।

जन-जन का अभियान बनेगा एक राष्ट्र एक चुनावः डा. जोशी

प्रयागराज। पूर्व सांसद डा रीता बहुगुणा जोशी को भाजपा के द्वारा एक राष्ट्र एक चुनाव का जिला संयोजक नियुक्त किए जाने के बाद प्रयागराज आगमन पर डा मुरली मनोहर जोशी सेवा समिति एवं भाजपा कार्यकर्ताओं के द्वारा पूर्व सांसद रीता बहुगुणा जोशी का स्वागत किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक राष्ट्र एक चुनाव का विज़न आज देश की आवश्यकता बन चुकी है। उन्होंने कहा कि देश की आजादी के बाद 1965 तक देशभर में सभी चुनाव एक साथ होते रहे लेकिन 1969 के बाद मध्यावधि चुनाव का दौर शुरू हो गया जो अब देश के लिए और जनता के लिए बोझ बनता जा रहा है। इसलिए भविष्य को देखते हुए अब एक राष्ट्र एक चुनाव की आवश्यकता है क्योंकि हर साल देश के अंदर चुनाव होने से विकास के कार्य में रुकावट आती है और चुनावी व्यवस्था को लेकर प्रशासनिक खर्च का देश के ऊपर बोझ पड़ता है और जनता परेशान होती है। कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और संगठन के द्वारा एक राष्ट्र चुनाव की जो जिम्मेदारी दी गई है उसे पूरी तरह से निभाते हुए पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर कार्य करेंगे और अभियान को सफल बनाएंगे मुझे पूरा विश्वास है यह अभियान जन जन का अभियान बनेगा और सफल होगा। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष अनिल भट्ट एवं प्रवक्ता राजेश केसरवानी ने डॉ जोशी को अंग वस्त्रम पहनाकर एवं पुष्प कुछ देकर स्वागत किया। स्वागत करने वालों में भाजपा मंडल अध्यक्ष मनोज श्रीवास्तव भोला सिंह विजय श्रीवास्तव कल्पना राजुल शर्मा विनीता गुप्ता बृजेश श्रीवास्तव ज्ञानेंद्र गुप्ता मीना राय अमन शर्मा विजय पुरुस्वानी सुशील जैन अजय अग्रहरि कमलेश कुमार विष्णु त्रिपाठी शत्रुघ्न जायसवाल आदि अन्य कार्यकर्ता रहे।

सेवराई तहसील आईजीआरएस रैंकिंग में तीसरे पायदान पर

गाजीपुर। जनपद के सेवराई तहसील में आईजीआरएस पोर्टल पर जन शिकायतों का अंबार है। लेकिन आईजीआरएस की रैंकिंग में तहसीलवार प्रगति रिपोर्ट देखा जाए तो सेवराई तहसील ने लंबी उड़ान भरते हुए तीसरा पोजीशन प्राप्त किया है।तहसील की प्रगति रिपोर्ट अपने आप में कार्य कुशलता की परिपक्वता बयां कर रही है। बता दें कि जन शिकायतों की त्वरित कार्रवाई के लिए एसडीएम सेवराई लोकेश कुमार सिंह ने जब तहसील का पद संभाला तब आईजीआरएस रैंकिंग 341 थी। उनके अहर्निश प्रयास व जन शिकायत पोर्टल पर विशेष नजर रखने का परिणाम रहा कि तहसील तीसरे पायदान पर आ खड़ा हुआ है। पत्रकारों से बातचीत में एसडीएम लोकेश कुमार सिंह ने बताया कि जन शिकायतों के पोर्टल को प्रतिदिन डैशबोर्ड पर उनके द्वारा अवलोकन किया जाता है। पीड़ितों के प्रार्थना पत्र को गंभीरता पूर्वक समझने के बाद समस्याओं के समाधान के लिए जमीनी स्तर पर सुलझाने का प्रयास एसडीएम लोकेश कुमार सिंह के द्वारा किया जाता रहा है। प्रशासनिक कार्यों को चुस्त.दुरुस्त करने के लिए निरंतर तहसील में शिकायतों का समाधान सुचारू रूप से करने की कार्रवाई टीम के साथ की गई। इसके लिए तहसीलदार और नायब तहसीलदार भी ग्राउंड पर सक्रिय कार्य करते रहे हैं। शिकायतों का निस्तारण करने के बाद एसडीएम स्वयं पीड़ितों से संपर्क करने एवं संतुष्ट होने के बाद कार्य को पूर्ण मानते रहे हैं। जानकारों की मानें तो कई मामलों में पीड़ितों से टेलीफोनिक बात भी करते थे। यहां तक की न्यायालय में लंबित मामले को भी स्वतरू संज्ञान में लेकर पीड़ितों को सही दिशा निर्देशन देने का काम करते रहे हैं। लोकेश सिंह इन दिनों सेवराई तहसील में अपने कार्यशैली से आम जनमानस को काफी प्रभावित कर रहे हैं। बातचीत के क्रम में उन्होंने बताया कि इन दिनों हिंदू और मुस्लिम दोनों के त्योहार एक साथ पड़ रहे हैंए इसको लेकर संवेदनशील इलाकों पर सीओ रामकृष्ण तिवारी के साथ लोगों से शांतिपूर्वक त्योहार मनाने का अपील भी किया है।

ऑनलाइन डेंटल स्क्रीनिंग टेस्ट में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

वाराणसी। सेंसोडाइन ने 24 घंटे में सबसे ज्यादा ऑनलाइन डेंटल स्क्रीनिंग टेस्ट पूरे कर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। महाकुंभ 2025 में आयोजित इस पहल में लगभग 27 हजार से ज्यादा लोगों ने डेंटल चेकअप कराया। यह भारत में ओरल केयर के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिशा में एक बहुत बड़ी कामयाब कोशिश रही। इस पहल में अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत करते हुए सेंसोडाइन ने अपने नए 20 रूपये के छोटे टूथपेस्ट पैक बाँटेए जो सेंसिटिविटी से सुरक्षा अब कम दाम में उपलब्ध कराएगा। किशले सेठ कैटेगरी लीड ने बताया किए सेंसोडाइन में हमारा लक्ष्य लोगों को उनकी ओरल हेल्थ की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करना है।

पुलिस ने दो अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

सोनभद्र। शनिवार को ग्राम महुआव कला में हुए मार-पीट की घटना के सम्बन्ध में वादी मुकदमा बुच्चु लाल मौर्या पुत्र स्व0 लुरझुर मौर्या निवासी ग्राम महुआंव कला थाना चोपन जनपद सोनभद्र की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर, चोपन प्रभारी निरीक्षक विजय कुमार चौरसिया उ0नि0 अभयनाथ सिंह यादव हे0का0 रुद्रकान्त यादव सच्चिदानन्द यादव द्वारा अभियुक्त श्रीराम मौर्या पुत्र विजय मौर्या उम्र करीब 18 वर्ष, सोनू मौर्या उर्फसुधीर मौर्या पुत्र विजय मौर्या उम्र करीब 26 वर्ष निवासी महुआंव कला थाना चोपन जनपद सोनभद्र को रविवार को मुखबिर की सूचना पर इनके घर महुआंव कला से समय 12.30 बजे गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही कर न्यायालय भेजा दिया।

राष्ट्रीय कर्मयोगी सेवाभाव प्रशिक्षण का आयोजन

वाराणसी। कैपेसिटी बिल्डिंग के माध्यम से गवर्नेंस को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय ने कैपेसिटी बिल्डिंग कमीशन के राष्ट्रीय कर्मयोगी सेवा.भाव कार्यक्रम के तहत आज सफलतापूर्वक एक ट्रेनिंग सेशन आयोजित किया। यह पहल सरकार के व्यापक मिशन कर्मयोगी फ्रेमवर्क का हिस्सा हैए जिसका उद्देश्य सरकारी अधिकारियों के बीच सेवाए जवाबदेही और सहयोग की गहरी भावना पैदा करके सार्वजनिक सेवा की प्रभावशीलता और जवाबदेही को बढ़ाना है। सेशन के दौरानए कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय के सचिव श्री अतुल कुमार तिवारी ने कहाए ष्स्किलिंग केवल व्यक्तियों के बारे में नहीं है . यह संस्थानों को सशक्त बनानेए गवर्नेंस को मजबूत करने और यह सुनिश्चित करने के बारे में है कि हम जो भी निर्णय लेते हैं वह राष्ट्रीय विकास के बड़े लक्ष्य के अनुरूप हो।

महिला दिवस पर सम्मान समारोह का आयोजन

अंबेडकर नगर। जिलाधिकारी अविनाश सिंह की अध्यक्षता में मुख्य विकास अधिकारी आनंद कुमार शुक्ला की उपस्थिति में विकास भवन सभागार में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी को बधाई देते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि हमारी संस्कृति एवं सभ्यता महिलाओं की वजह से है। महिलाएं पुरूषों के बराबर ही नहीं बल्कि उनसे कहीं आगे हैं। वैसे तो महिलाएं स्वयं काफी सशक्त हैं लेकिन आज के इस कार्यक्रम से महिलाओं में और जागरूकता आएगी। उन्होंने कहा कि यदि एक बालिका पढ़ लिख लेती है तो वह अपने परिवार का ही नहीं संपूर्ण समाज का भला करती है। महिलाओं के प्रति समाज में अच्छी सोच बनाने के लिए आवश्यक है कि महिलाओं की सफलता की कहानियों को जन.जन तक पहुंचाया जाए। हमारे देश में आदिकाल से ही नारी शक्ति को पूजनीय माना गया है। महिला दिवस का दिन हमें नारी की हर छोटी.बड़ी लड़ाई को सम्मान देने और उनके सपनों को पंख देने का मौका देता है। यह दिवस हमें महिलाओं द्वारा समाज में दिए गए योगदानए उनके संघर्ष तथा उनके सामने आने वाली चुनौतियों की याद दिलाता है। कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी तथा मुख्य विकास अधिकारी महोदय द्वारा जनपद के 139000 से अधिक समूह सदस्यों में से अच्छा कार्य कर लखपति दीदी क्लब में शामिल दीदियों इंदु वर्मा बुक कीपरएसरिता देवी समूह सखीएसाधना गुप्ता बैंक सखीएअन्तिमा यादव विद्युत सखीएचन्द्रकला बीसी सखीए रीना अग्रहरिएममता देवीएसुनीता सिंहए नीतू त्रिपाठी को पुष्प गुच्छए शाल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

पत्रकार राघवेंद्र की हत्या से पत्रकारों में भय का माहौल

खतरनाक दौर से गुजर रहा है मीडिया जगत

सोनभद। सीतापुर महोली के विकास नगर निवासी पत्रकार राघवेंद्र बाजपेई शनिवार को हेमपुर ओवरब्रिज से सीतापुर की ओर आ रहे थे, तभी ओवरब्रिज से उतरते समय गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई। पत्रकार राघवेंद्र बाजपेई की हत्या के बाद सियासत तेज हो गई हैं। एनएसयूआई के पूर्व राष्ट्रीय सचिव राघवेंद्र नारायण ने बीजेपी की योगी सरकार पर निशाना साधा है उन्होंने ने कहा कि राज्य में जो भी भ्रष्टाचार कालाबाजारी घूसखोरी को उजागर करेगा उसकी जान सुरक्षित नहीं है। पत्रकार राघवेंद्र बाजपेई की मौत से यह तय हो गया है कि सूबे में कानून व्यवस्था के क्या हालत है। ढिंढोरा पीटने से कानून व्यवस्था अच्छी नहीं हो जाती। कानून व्यवस्था को कंट्रोल में रखना एक बात है और कानून व्यवस्था को अपने कंट्रोल में लेने के लिए काम करना दूसरी बात है। बीजेपी की केंद्र व प्रदेश सरकार में मीडिया जगत बहुत ही खतरनाक दौर से गुजर रहा है। देश के चौथे स्तंभ ही जब सुरक्षित नहीं तो आम जनता की जान माल की सुरक्षा का सवाल कौन खड़ा करेगा। राघवेंद्र नारायण ने पत्रकारों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए अलग से आयोग गठित किए जाने कि भी मांग की। इस घटना से सूबे की योगी सरकार के इकबाल पर एक बड़ा सवाल खड़ा हुआ है और प्रदेश के पत्रकारों में भय का माहौल व्याप्त हो गया है। अपराधियों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी और कड़ी कार्यवाही होनी चाहिए और इसके पीछे छुपे सफेद पोस भी नहीं बक्शे जाने चाहिए। उन्होने मृतक परिजनों को 50 लाख रुपए नगद और परिवार के एक व्यक्ति को सरकारी नौकरी तत्काल दिए जाने की मांग किया।

मैत्री क्रिकेट मैच में सीआईएसएफटीम विजेता

बीजपुर/सोनभद्र। सीआईएसएफ ईकाई रिहन्द अपने 56वें स्थापना दिवस अवसर पर शनिवार को एनटीपीसी कर्मचारियों एवं सीआईएसएफबल कर्मिको के बीच सद्भावना क्रिकेट मैच का आयोजन सोनशक्ती स्टेडियम रिहन्द के प्रांगण में खेला गया। जिसमें सीआईएसएफ के कप्तान निरीक्षक के. के सिंह द्वारा टास जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। जिसमें सीआईएसएफक्रिकेट टीम द्वारा पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 12 ओवर में 7 विकेट पर 116 रन बनाए। एनटीपीसी क्रिकेट टीम राजेश मीणा के नेतृत्व में निर्धारित 12 ओवर में 6 विकेट पर मात्र 86 रन बनाए। सीआईएसएफकी टीम ये मैच 36 रन से जीत गई। मैच में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने हेतु आरक्षक राणा हर्षवर्धन सर्वाधिक 40 रन बनाया जिन्हें मैन आफ द मैच पुरस्कार सें पुरस्कृत किया गया। इस मैच में सीआईएसएफ के सहायक कमांडेंट आलोक कुमार चौधरी निरीक्षक यु.बी मिश्रा निरिक्षक मुकेश चौधरी निरीक्षक प्रभात कुमार गौराई के साथ सीआईएसएफ के बल कर्मिक एवं एनटीपीसी रिहन्द के कर्मचारी मौजूद रहें।

नीमा चन्दौली ने की श्रद्धांजलि सभा

चन्दौली । नीमा चंदौली के कैंप कार्यालय चंधासी मुगलसराय जनपद चंदौली में विगत दिनों नीमा के राष्ट्रीय एवं प्रांतीय महासचिव डॉ यू एस पांडेय के निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। नीमा चंदौली के अध्यक्ष डॉ एस के यादव ने उनके तैल चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित किया अपने उद्बोधन में कहा कि डा पांडेय नीमा संगठन के लिए आजीवन संघर्ष किया उनके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। आज हम सभी संकल्प लें कि उनके अधूरे सपने को साकार करेंगे। अन्त में नीमा के सभी पदाधिकारी एवं सदस्यों ने दो मिनट मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित किया। इस अवसर पर नीमा चंदौली के संरक्षक डॉ स्वामी नाथ सचिव डॉ आर के शर्मा डॉ एस एन तिवारी डॉक्टर अनिल पांडे डॉक्टर सचिन दुबे डॉक्टर प्रमोद यादव डॉक्टर सतीश चौहान डॉक्टर दीपू सोनी महेंद्र यादव श्याम चरण इत्यादि भारी संख्या में सदस्यों ने भाग लिया ।

मेडिकल और पैरामेडिकल छात्रों ने ली दहेज मुक्त और नशामुक्त भारत की शपथ

सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूकता के लिए मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज प्रयागराज में हुआ कार्यक्रम का आयोजन

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार महिलाओं की सुरक्षा और सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन के लिए लगातार सख्त कदम उठा रही है। दहेज हत्या और नशे की लत के खिलाफ सरकार की सख्ती का असर दिखने लगा है लेकिन सामाजिक जागरूकता भी उतनी ही जरूरी है। इसी कड़ी में मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज प्रयागराज में मेडिकल एवं पैरामेडिकल छात्रों ने दहेज मुक्त और नशा मुक्त भारत की शपथ ली। इस आयोजन का उद्देश्य समाज को इन बुराइयों से मुक्त करने के लिए युवाओं को प्रेरित करना था। यह कार्यक्रम पढ़े विश्वविद्यालय बढ़े विश्वविद्यालय तथा पढ़े महाविद्यालय बढ़े महाविद्यालय अभियान के तहत आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रधानाचार्या डॉ वत्सला मिश्रा ने कहा कि दहेज प्रथा और नशे की लत से समाज को मुक्त करने के लिए सभी को मिलकर कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी को इस सामाजिक बदलाव का नेतृत्व करना चाहिए। इस मौके पर कई प्रतिष्ठित चिकित्सा शिक्षक भी मौजूद रहे। जिनमें डॉ सूबिया करीम अंसारी डॉ खुर्शीद परवीन डॉ अभिषेक तिवारी डॉ मोनिका डॉ अर्चना मिश्रा डॉ अभिषेक सिंह डॉ ऋचा सिंह डॉ रीना सचान डॉ कविता चावला सहित कई अन्य संकाय के सदस्य शामिल थे। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार महिलाओं की सुरक्षा और अधिकारों को लेकर लगातार सख्त कानून लागू कर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कई बार कहा है कि महिलाओं के शोषण और दहेज हत्या जैसे अपराधों को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मिशन शक्ति अभियान के तहत महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों पर त्वरित कार्रवाई की जा रही है। यही नहीं दहेज उत्पीड़न करने वालों की पहचान कर उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई हो रही है। सरकार के इन प्रयासों के बावजूद दहेज हत्या और महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों को समाप्त करने के लिए समाज की भागीदारी भी उतनी ही जरूरी है। भारत में दहेज हत्या आज भी एक गंभीर समस्या बनी हुई है। सरकारी आंकड़ों के अनुसारए 2017 से 2021 के बीच 35493 महिलाओं की मौत दहेज हत्या के कारण हुई यानी हर दिन औसतन 20 महिलाओं की जान जाती है। विशेषज्ञों का कहना है कि दहेज प्रथा महिलाओं के शोषण का एक बड़ा कारण बनी हुई है। समाज को इस कुरीति से मुक्त करने के लिए युवाओं को दहेज मुक्त विवाह को बढ़ावा देना होगा।

कार्यक्रम में नशे की लत से होने वाले नुकसान पर भी चर्चा की गई। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार हर साल तीस लाख लोग शराब और नशीली दवाओं के कारण अपनी जान गंवाते हैं। वरिष्ठ मनोरोग चिकित्सक डॉ अभिषेक प्रताप सिंह ने कहा कि नशे की लत न केवल स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है बल्कि परिवारों और समाज को भी नुकसान पहुंचाती है। मेडिकल छात्रों को इस दिशा में समाज को जागरूक करने की जिम्मेदारी उठानी चाहिए।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 108345 वाद निस्तारित

गाजीपुर। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरणए नई दिल्ली से प्राप्त निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में 08 मार्च को प्रात: 10:30 बजे जनपद न्यायालय में राष्ट्रीय लोक अदालत का शुभारंभ जनपद न्यायाधीष धर्मेन्द्र कुमार पाण्डेयए के द्वारा मॉ सरस्वती की प्रतिमा पर द्वीप प्रजव्वलित कर एवं मल्यार्पण कर किया गया तथा अन्तर्राश्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर महासचिव सिविल बार एसोसिएषन ज्योत्सना श्रीवास्तवए नगर पालिका ई0ओ0 अमिता वरूणए मुख्य प्रबंधक यूनियन बैंक भारती षर्माए मुख्य प्रबंधक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया ष्वेता सुमन एवं महिला न्यायिक अधिकारीगण को पौधा प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर माननीय जनपद न्यायाधीष महोदय द्वारा 02 महिलाओं को ट्राई साईकिलए 01 महिला को कॉन की मषीनए 01 महिला को लेप्रोसी किट एवं 07 महिलाओं को पेंषन प्रमाण.पत्र प्रदान किये गये साथ ही साथ आज की राष्ट्रीय लोक अदालत में एक पेशन शिविर का भी आयोजन जनपद न्यायाधीष महोदय द्वारा फीता कॉट कर किया गया है। जनपद न्यायाधीष महोदय द्वारा लोक अदालत में बढ़.चढ़ के हिस्सा लेने के लिए आम.जनमानस से अपील की तथा समस्त पीठासीन अधिकारी को लोक अदालत के सफ्लता हेतु सभी अधिकारियों को अधिक से अधिक निस्तारण हेतु प्रोत्साहित किया। पीठासीन अधिकारी प्रधान न्यायाधीषए कुटुम्ब न्यायालय नरेन्द्र कुमार.।।ए द्वारा 26 वादों का निस्तारण एवं 02 जोड़ो को साथ.साथ विदा किया गया तथा पीठासीन अधिकारी एमण्एन्सीण्टीण् संजय हरिशुक्ला द्वारा 39 वादों का निस्तारण किया गया। इस अवसर पर शक्ति सिंह अपर जिला जज प्रथम द्वारा अपने सम्बोधन में यह कहा गया कि लोक अदालत वर्षों से लम्बित मामलों के त्वरित निस्तारण का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है। ऐसे छोटे प्रकरण जिसमें अनावश्यक रुप से मुकदमेबाजी के कारण पक्षकारो के मध्य वैमन्यस्ता विद्यमान रहती हैए को समाप्त कर सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में लोक अदालत द्वारा अपनी सक्रीय भूमिका निभायी जा रही है। उक्त शिविर में वृद्धा पेशनए दिव्यांग पेशन एवं विधवा पेशन में जिन पात्र व्यक्तियों को कोई कठिनाई आ रही हैए उसके समाधान हेतु सम्बंधित विभागों के अधिकृत प्रतिनिधि उपस्थित रहे। उक्त पेंशन शिविर में जनपद के दूरस्थ क्षेत्रों से आये हुए व्यक्तियों द्वारा लाभ उठाया गया। षक्ति सिंहए अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीष कक्ष सं0.01ए विजय कुमार.प्टए अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीषध्सचिव पूर्णकालिक जिला विधिक सेवा प्राधिकरणए द्वारा राश्ट्रीय लोक अदालत में निस्तारण हेतु नियत वादों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की गयी।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
महत्वपूर्ण अवसर

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस एक महत्वपूर्ण अवसर है। लेकिन इसे एक तिथि तक सीमित कर दिया गया है। यह हमें ऐतिहासिक महिला संघर्षों तथा अभी मौजूद चुनौतियों की याद दिलाती है। खासकर भारतीय महिलाओं ने असाधारण आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना किया है। विश्व मंच पर वे अपने विशिष्ट साहस और प्रतिबद्धता से बने बनाए ढांचे तोड़ने में सफल हुई हैं और उन्होंने अनेक पन्नों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है जिन पर अंतर्निहित रूप से पितृसत्तात्मक समाज में ऐतिहासिक रूप से पुरुषों तथा थोड़ी सी महिलाओं का प्रभुत्व था। आज हम इन उपलब्धियों का उत्सव मना रहे हैं, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि अभी भारतीय महिलाओं की सच्ची मुक्ति का काम जारी है और वास्तव में यह निरंतर यात्रा है। अंतिम लक्ष्य पर पहुंचने का मार्ग सीमाबंधन वाले सामाजिक मानकों और जेंडर पूर्वाग्रहों से भरा है जिनको पार करना है। भारतीय महिलाओं को यह काम करना होगा। ऐतिहासिक रूप से चूल्हे चौके से बंधी महिलाओं की शिक्षा और कॅरियर विकल्पों तक सीमित पहुंच थी और भारतीय महिलाओं का रास्ता आसान नहीं था। आज समय के साथ जेंडर विभाजन कमजोर पड़ने के बावजूद आधुनिक भारतीय महिलाओं नेतृत्वकारी भूमिकाओं में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सुरक्षा की चिन्तायें, खासकर जेंडर-आधारित हिंसा और उत्पीड़न महत्वपूर्ण मुद्दे बने हुए हैं जिनसे निपटने के लिए न केवल व्यवस्थागत परिवर्तन, बल्कि सड़ी-गली सोच में व्यापक परिवर्तन जरूरी हैं। सांस्कृतिक उम्मीदों ने महिलाओं पर बोझ डाला है, जिसके कारण अक्सर उनको पेशेवर आकांक्षाओं तथा परंपरागत पारिवारिक भूमिकाओं में संतुलन बनाना होता है। अक्सर इस दुहरी जिम्मेदारी के कारण कॅरियर से समझौता करना पड़ता है तथा अनेक महिलाओं को मातृत्व लाभ तथा लचीले कार्यस्थल परिवेश जैसे संस्थागत समर्थन के अभाव में कार्यबल से हटना पड़ता है। इन बाधाओं के बावजूद भारतीय महिलाओं ने अपनी दृढ़ता एवं उत्कृष्टता सिद्ध करते हुए पुरुष-प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में अपना स्थान बनाया है। एक समय केवल पुरुष प्रभुत्व वाले क्षेत्र सशस्त्र बलों में आज महिलायें फाइटर पाइलटों, कमांडिंग आफिसरों तथा फ्रंटलाइन योद्धाओं के रूप में काम कर रही हैं। बायोटेक्नोलोजी में किरन मजूमदार शॉ, उद्यमिता में फाल्गुनी नायर तथा खेलों में रानी रामपाल ने सफलता को पुन: परिभाषित करते हुए लाखों लोगों को प्रेरणा दी है। महिला पत्रकारों, वैज्ञानिकों और इंजीनियरों ने प्रमुखता प्राप्त की है जिनमें वाइरोलोजी में गगनदीप कांग से लेकर भारत की 'मिसाइल महिला' टेसी थामस तक शामिल हैं। भारतीय न्यायपालिका एक समय पूर्ण पुरुष प्रभुत्व वाली थी, पर अब उसमें महिला जज न्याय दे रही हैं। इनमें जस्टिस बीवी नागरत्ना शामिल हैं जो देश की पहली महिला प्रधान न्यायाधीश बनेंगी। हालांकि, ये उपलब्धियां प्रशंसनीय हैं, पर सच्ची जेंडर समानता अभी आनी बाकी है। राजनीति और कार्पोरेट बोर्ड रूमों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है। उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए कानून हैं, पर अक्सर उनका क्रियान्वयन कमजोर होता है। शिक्षा और वित्तीय स्वतंत्रता महिला सशक्तीकरण हेतु आवश्यक है, लेकिन बहुत सी महिलाओं की अभी इन मूलाधिकारों तक पहुंच नहीं है। इस कमी को दूर करने के लिए नीतिगत सुधारों के माध्यम से समान वेतन, स्मार्ट कार्यस्थल तथा कॅरियर में प्रगति के अवसर सुनिश्चित किए जाने चाहिए। सामाजिक सोच में परिवर्तन लाना जरूरी है जिसमें जेंडर समानता के समर्थन में पुरुष सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं। स्कूलों में समावेशन के मूल्य पढ़ाए जाने चाहिए। शुरुआत से ही जेंडर समानता का विचार समाहित किया जाना चाहिए। लड़कियों से अक्सर उनके माता-पिता द्वारा किया गया भेदभाव निंदनीय है। यह भेदभाव अनेक स्तरों पर है और इसे इक्कीसवीं शताब्दी में स्वीकार नहीं किया जा सकता है। भारत में महिला सहभागिता देश का भविष्य पुन: परिभाषित कर सकती है। नीति निर्माताओं, बिजनेसों तथा समाज के सामूहिक प्रयास से महिलाओं का उत्थान केवल विमर्श से आगे बढ़ कर दिन-प्रतिदिन का यथार्थ बन सकता है। यह रास्ता लंबा है, पर भारतीय महिलाओं ने बार-बार दिखा दिया है कि उनको रोका नहीं जा सकता है। महिला केवल परिवर्तन का हिस्सा न हो कर अपने आप में परिवर्तन है।

महिला सशक्तीकरण का लंबा रास्ता

महिला मुद्दों को हाशिए पर धकेलने के बजाय उनको नीति-निर्माण तथा प्रशासन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। इस अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर हमें प्रतीकात्मक संकेतों तथा लफ्फाजी से आगे बढ़ना चाहिए।

प्रियंका चतुर्वेदी
(लेखिका, राज्यसभा सदस्य हैं)

राजनीति में शामिल महिला तथा राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की पैरोकार के रूप में मैं इस अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर अपनी हार्दिक शुभकामनायें व्यक्त करती हूं। यह अवसर न केवल उत्सव का, बल्कि हमारे द्वारा की गई प्रगति तथा सच्ची जेंडर समानता प्राप्त करने की दिशा में लंबे रास्ते पर विचार करने का समय है। इस वर्ष का महिला दिवस दिल्ली चुनाव के लगभग एक महीने बाद आया है जिसने चौथी महिला मुख्यमंत्री तथा पहली बार विपक्ष की महिला नेता नियुक्त कर इतिहास रचा है। हमने यहां अभूतपूर्व मतदान भी देख जिसमें महिलाओं ने पुरुषों को पीछे छोड़ दिया। 60.2 प्रतिशत पुरुषों की तुलना में 60.9 प्रतिशत महिलाओं ने अपने लोकतांत्रिक अधिकार का प्रयोग किया। दिल्ली में इस बार सबसे अधिक संख्या में महिलाओं ने चुनाव लड़ा जो कुल उम्मीदवारों में 14 प्रतिशत थीं। लेकिन यही बात निर्वाचित प्रतिनिधियों के बारे में नहीं कही जा सकती है।

महिलायें केवल 7 प्रतिशत सीटें प्राप्त कर सकीं जो एक दशक में सबसे कम थीं। इन आंकड़ों को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में महिलाओं के समान प्रतिनिधित्व के रूप में देखने के पहले मैं आपको याद दिलाना चाहती हूं कि 2023 में लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए महिला आरक्षण कानून पास किया गया है। सभी पार्टियों का पूर्ण समर्थन मिलने के बावजूद यह कानून अभी अधर में लटका है और इसके क्रियान्वयन के पहले जनगणना तथा परिसीमन गतिविधियां पूर्ण होने की प्रतीक्षा है।

जनगणना को 2020 में स्थगित किया गया था और 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद इसमें अनिश्चितकालीन विलंब हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं का 33 प्रतिशत प्रतिनिधित्व एक दूर का सपना है, जबकि यथार्थ में यह 10-14 प्रतिशत के निकट बना हुआ है। यही पैटर्न हाल ही में समाप्त राज्य विधानसभा चुनावों में सामने आया है। यहां भी महिला उम्मीदवारों की संख्या 9 प्रतिशत थी तथा महाराष्ट्र विधानसभा में केवल 8 प्रतिशत महिलाओं को ही प्रतिनिधित्व मिला। इसी तरह हरियाणा विधानसभा चुनाव में महिला उम्मीदवारों की संख्या 10 प्रतिशत थी, जबकि 14 प्रतिशत महिलायें विजय प्राप्त करने में सफल रहीं। झारखंड में महिला उम्मीदवारों की संख्या 11 प्रतिशत थी, जबकि 15 प्रतितशत महिला प्रतिनिधि चुनी गईं। हालांकि, हम राजनीति में ज्यादा महिला प्रतिनिधित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं, पर महिलाओं को लक्षित विमर्श प्रतिगामी बना हुआ है। अनेक राजनेताओं ने महिलाओं के पहनने वाले कपड़ों और उनके व्यवहार को लेकर महिला-विरोधी टिप्पणियां की हैं, जबकि स्वयं उनको ही अपना व्यवहार सुधारना चाहिए।

महिलाओं को ही लगातार उनके उत्पीड़न का जिम्मेदार ठहराया जाता है, जबकि जेंडर-आधारित हिंसा का कारण बनने वाले ढांचागत मुद्दों पर ध्यान नहीं दिया जाता है। भारत में अब भी विवाह संबंधों में बलात्कार पर कोई कानून नहीं है। महिलाओं व बच्चों के खिलाफ अपराधों पर लगाम लगाने वाला महाराष्ट्र का प्रस्तावित 'शक्ति विधेयक' केन्द्र की सहमति के बिना वापस कर दिया गया। जिस समाज में महिलाओं की सुरक्षा और गरिमा बहस का विषय हो, वह समानता के रास्ते पर चलने का दावा नहीं कर सकता है। प्रतिनिधित्व में जेंडर अंतर राजनीति से आगे कार्पोरेट दुनिया तक जाता है। कंपनी बोर्डों में कम से कम एक महिला के प्रतिनिधित्व के प्रतीकवादी प्रयासों के बावजूद समानता की दिशा में प्रगति धीमी है।

भारत में कार्पोरेट कंपनियों के बोर्डों में महिलाओं को 2023 में केवल 18 प्रतिशत सीटें मिली थीं, जबकि इनका वैश्विक औसत 23 प्रतिशत है। इस संख्या में भी कंपनी बोर्डों की अध्यक्षता करने वाली महिलाओं की संख्या केवल 4 प्रतिशत है। उच्चतम कार्यकारियों के स्तर पर स्थिति और खराब है। दुनिया भर में केवल 6 प्रतिशत महिला सीईओ हैं, जबकि भारत में यह संख्या केवल 5 प्रतिशत है। मध्यवर्ती प्रबंधन भावी नेतृत्व के लिए महत्वपूर्ण होता है, पर यहां महिलाओं का प्रतिनिधित्व घटा है। मध्यवर्ती प्रबंधन में 2019 में 18-19 प्रतिशत महिलायें थीं, पर कोरोनावायरस वैश्विक महामारी के बाद उनकी संख्या घट कर केवल 14-16 प्रतिशत रह गई। वरिष्ठ एवं मध्यवर्ती प्रबंधन में महिला कर्मचारियों का हिस्सा भारत में केवल 12.7 प्रतिशत है जो पड़ोसी देशों की तुलना में बहुत कम है। यह श्रीलंगा में 24.6 प्रतिशत तथा थाईलैंड में 34.7 प्रतिशत है। महिला उद्यमियों की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। महिला उद्यमियों के सूचकांक में भारत का 57वां स्थान है, जबकि केवल 20 प्रतिशत बिजनेसों का नेतृत्व ही महिलाओं के हाथ में है। फंडिंग में अंतर खासतौर से बहुत अधिक है। भारत में वेंचर कैपिटल की केवल 3 प्रतिशत फंडिंग ही 2021 में महिला-नीत स्टार्टअप को जाती थी। हालांकि, फंडिंग में यह असमानता केवल भारत की समस्या नहीं है, बल्कि विश्व स्तर पर भी महिला-नीत स्टार्टअप को वेंचर कैपिटल का बहुत थोड़ा हिस्सा मिलता है।

अमेरिका में महिलाओं का 40 प्रतिशत बिजनेसों पर स्वामित्व होने के बावजूद उनको केवल 2 प्रतिशत वेंचर फंडिंग मिलती है। यूरोप की भी यही स्थिति है जहां पुरुष-नीत स्टार्टअप लगातार निवेशों का बहुत बड़ा हिस्सा प्राप्त करते हैं। निवेश प्रक्रिया में जेंडर पूर्वाग्रह सुस्थापित है। प्रयोगों से पता चला है कि महिला के बजाय पुरुष नियंत्रण में होने पर समान प्रकार के स्टार्टअप को ज्यादा फंडिंग मिलने की संभावना होती है। निवेशक जहां पुरुष फंडर्स से वृद्धि संभावनाओं पर बात करते हैं, वहीं महिला उद्यमियों से उनकी व्यक्तिगत प्रतिबद्धताओं, जैसे वैवाहिक स्तर, बच्चों तथा बिजनेस के 'लाइफस्टाइल वेंचर' के बारे में पूछा जाता है।

व्यवस्थित व गहरे ये पूर्वाग्रह हर स्तर पर महिला प्रगति को बाधित करते हैं। इसलिए आश्चर्य नहीं हकि हमारे आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस सिस्टमों में भावी तकनीक भी जेंडर-पूर्वाग्रही हो सकती है। हमारे समाज में व्यापत जेंडर पूर्वाग्रह एआई निर्णय-प्रक्रिया में भीा हो सकते हैं जो वर्तमान असमानताओं को और मजबूत करेंगे। यदि हम ज्यादा समतापूर्ण समाज चाहते हैं तो हमें मूलभूत स्तर पर अपनी सोच बदलने की आवश्यकता है ताकि महिलाओं का समावेशन केवल प्रतीकात्मक न होकर एक ढांचागत व टिकाऊ प्रतिबद्धता बने जिसका विस्तार राजनीति, बिजनेस, प्रशासन तथा महिला-नीत विकास व परिवर्तन तक जाए।

सरकार को महिला आरक्षण कानून का समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित करना चाहिए। कंपनियों को कोटा भरने से आगे बढ़ कर नेतृत्वकारी भूमिकाओं में महिलाओं की पदोन्नति पर निगरानी करनी चाहिए। निवेशकों और वेंचर पूंजीपतियों को अपने पूर्वाग्रहों को संबोधित कर महिला उद्यमियों को समुचित अवसर देना चाहिए। शिक्षा और कौशल-प्रशिक्षण कार्यक्रमों से लड़कियों का सशक्तीकरण होना चाहिए ताकि वे भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्वकारी भूमिकायें निभा सकें।

यह भी जरूरी है कि एक समाज के रूप में हम ऐसा परिवेश बनाएं जहां महिलायें सुरक्षित अनुभव करें तथा कार्यस्थल पर, राजनीति में व सार्वजनिक स्थलों पर उनको समर्थन मिले। यौन उत्पीड़न तथा कार्यस्थल पर भेदभाव को कठोर विधिक संरक्षण तथा ज़ीरो-टालरेंस नीतियों से समाप्त कर जन प्रतिनिधियों को ये मूल्य प्रकट करने चाहिए। महिला मुद्दों को हाशिये पर धकेलने या दोयम दर्जे का समझने की प्रवृत्ति के बजाय उनको नीति निर्माण व प्रशासन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। इस महिला दिवस पर हमें प्रतीकात्मक संकेतों से आगे बढ़ना चाहिए। समय आ गया है कि इन संख्याओं को व्यावहारिक कार्रवाई में बदला जाए तथा लफ्फाजी से आगे बढ़ कर ऐसी दुनिया बनाई जाए, जहां महिलायें जीवन के हर क्षेत्र में समान साझीदार बनें।

बलात्कार पीड़ितों को त्वरित न्याय जरूरी

यौन हिंसा के पीड़ितों को सिर्फ़ कानूनी न्याय से ज़्यादा की ज़रूरत है। उन्हें अपने जीवन को फिर से बनाने के लिए समग्र सहयोग की ज़रूरत है।

योगिता भयाना
(लेखिका, बलात्कार पीड़ितमत एक्टिविस्ट हैं)

भारत में यौन हिंसा के खिलाफ लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। हमारे देश में हर महिला को सुरक्षा, सम्मान और न्याय का मौलिक अधिकार है। फिर भी, यौन हिंसा की घटनाएं सामने आती रहती हैं, जो हमारे सामाजिक ढाचे में गहरी जड़ें जमाए बैठी चुनौतियों को उजागर करती हैं। हमें ऐसे अपराधों को रोकने और एक ऐसा भविष्य बनाने के लिए निर्णायक और समाधान-उन्मुख कदम उठाने चाहिए जहां महिलाएं और बच्चे वास्तव में सुरक्षित हों।

पारी फाउंडेशन के संस्थापक के रूप में, मैंने अपना जीवन बलात्कार और यौन हिंसा के पीड़ितों की वकालत करने के लिए समर्पित कर दिया है। 16 दिसंबर, 2024 को, पारी ने महिलाओं और बच्चों के खिलाफ हिंसा की रोकथाम पर पहली बार राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करके एक महत्वपूर्ण कदम आगे बढ़ाया। इस ऐतिहासिक घटना ने यौन हिंसा से निपटने के हमारे प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मोड़ को चिह्नित किया, जिसमें नीति निर्माताओं, कानूनी विशेषज्ञों, नागरिक समाज संगठनों, शिक्षकों और पीड़ितों को रोकथाम, प्रतिक्रिया और पुनर्वास के लिए ठोस उपायों पर चर्चा करने के लिए एक साथ लाया गया। इस पहल के केंद्र में आगाज़ का शुभारंभ था, जो लिंग आधारित हिंसा को संबोधित करने के लिए एक व्यापक, समाधान-संचालित दृष्टिकोण पर केंद्रित एक कार्यक्रम था।

सुधार के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक शिक्षा है। स्कूलों और विश्वविद्यालयों को लैंगिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। लैंगिक समानता, सहमति और दर्शकों के हस्तक्षेप के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए नियमित रूप से अनिवार्य कार्यशालाएँ और सेमिनार आयोजित किए जाने चाहिए। कानून का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए सभी स्कूल और कॉलेज कर्मचारियों के लिए यौन उत्पीड़न की रोकथाम प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए, जबकि यौन अपराधों से बच्चों की सुरक्षा प्रशिक्षण सभी शिक्षकों और प्रशासकों के लिए एक आवश्यकता होनी चाहिए, जिससे उन्हें बच्चों की प्रभावी रूप से सुरक्षा करने के लिए ज्ञान से लैस किया जा सके। सिर्फ़ नीतियों से परे, स्कूलों को अपने पाठ्यक्रम में लैंगिक अध्ययन और भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण को शामिल करना चाहिए, जिससे युवा दिमागों को रिश्तों पर सम्मानजनक और स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करने में मदद मिले। डिजिटल सुरक्षा शिक्षा भी महत्वपूर्ण है, जिससे छात्रों को साइबरस्टॉकिंग, ऑनलाइन उत्पीड़न और डिजिटल सहमति के जोखिमों को समझने में मदद मिले। यौन हिंसा से निपटने के लिए आपराधिक मनोविज्ञान और मीडिया के प्रभाव को समझना महत्वपूर्ण है। यौन अपराधियों की प्रेरणाओं, ट्रिगर्स और व्यवहार पैटर्न की जांच करने के लिए शोध का विस्तार किया जाना चाहिए, जिससे लक्षित रोकथाम रणनीतियों को विकसित करने में मदद मिले। मीडिया द्वारा लैंगिक गतिशीलता के चित्रण का भी आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जाना चाहिए, साथ ही जिम्मेदाराना कहानी कहने को बढ़ावा देने के प्रयास किए जाने चाहिए जो विषाक्त मर्दानगी और हानिकारक रूढ़ियों को चुनौती देते हैं।

इसके अतिरिक्त, यौन हिंसा की समाचार रिपोर्टिंग में सुधार की आवश्यकता है। सनसनीखेज या असंवेदनशील कवरेज अक्सर पीड़ितों को फिर से पीड़ित बनाता है और बलात्कार की संस्कृति को मजबूत करता है। मीडिया को मामलों की रिपोर्टिंग में नैतिक दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिए, ताकि पीड़ितों की पहचान और अधिकारों की रक्षा हो सके।

यौन हिंसा के पीड़ितों को सिर्फ़ कानूनी न्याय से ज़्यादा की ज़रूरत है। उन्हें अपने जीवन को फिर से बनाने के लिए समग्र समर्थन की ज़रूरत है। हर शहर, कस्बे और गाँव में बलात्कार संकट केंद्र (ऋष्ट) स्थापित किए जाने चाहिए, जो पीड़ितों को चिकित्सा, कानूनी, वित्तीय और मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करें। उन्हें स्वतंत्रता और स्थिरता हासिल करने में मदद करने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण और शैक्षिक सहायता प्रदान की जानी चाहिए। पीड़ितों को दोषी ठहराने और पीड़ितों को समर्थन और सशक्त बनाने के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को बदलने के लिए एक राष्ट्रीय आंदोलन शुरू किया जाना चाहिए। बलात्कार से जुड़ी मिथकों को चुनौती देने, पीड़ितों पर विश्वास करने के महत्व पर समुदायों को शिक्षित करने और हिंसा को रोकने के लिए दर्शकों के हस्तक्षेप को प्रोत्साहित करने के लिए सार्वजनिक अभियान शुरू किए जाने चाहिए। पुलिस सुधार भी उतने ही जरूरी हैं। कानून प्रवर्तन की अक्षमता और असंवेदनशीलता अक्सर पीड़ितों को अपराधों की रिपोर्ट करने से हतोत्साहित करती है। यौन हिंसा के मामलों को सहानुभूति और दक्षता के साथ संभालने के लिए प्रशिक्षित कर्मियों के साथ समर्पित आपातकालीन डायल नंबरों पर स्टाफ होना चाहिए। प्रथम उत्तरदाताओं और फोरेंसिक टीमों को साक्ष्य संग्रह, पोस्टमार्टम और फोरेंसिक जांच के लिए सख्त प्रोटोकॉल का पालन करना चाहिए। पुलिस विभागों के भीतर विशेष जांच इकाइयाँ (स्क्वॅ) बनाई जानी चाहिए, जिसमें फोरेंसिक विशेषज्ञ, परामर्शदाता और कानूनी सलाहकार शामिल हों, जिन्हें यौन हिंसा के मामलों को संभालने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया हो। सभी पुलिस कर्मियों के लिए अनिवार्य लिंग संवेदीकरण प्रशिक्षण प्रेरण के दौरान और वार्षिक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के रूप में आयोजित किया जाना चाहिए। कार्यस्थल सभी के लिए सुरक्षा और सम्मान का स्थान होना चाहिए, फिर भी उत्पीड़न और हिंसा जारी रहती है। क्कस॥ प्रशिक्षण और ऑडिट को सभी संगठनों में सख्ती से लागू किया जाना चाहिए, ताकि उत्पीड़न विरोधी नीतियों का अनुपालन सुनिश्चित हो सके। यौन उत्पीड़न की शिकायतों से निपटने में उनकी प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए आंतरिक समितियों (आईसी) को वार्षिक ऑडिट से गुजरना चाहिए। महिला मजदूरों और निर्माण श्रमिकों के लिए विशेष सुरक्षा शुरू की जानी चाहिए, जिससे सुरक्षित कार्य स्थितियों, कानूनी सहारा और स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच सुनिश्चित हो सके। बेघर महिलाओं और बच्चों के लिए आश्रय गृह शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किए जाने चाहिए, ताकि उन्हें सुरक्षित वातावरण प्रदान किया जा सके। कार्यस्थलों को सुरक्षित और आरामदायक वातावरण प्रदान करना चाहिए।

आप की बात

जन औषधि योजना

भारत सरकार की जन औषधि योजना से आम जनता के औषधियों पर होने वाले खर्च में काफी कमी आई है। औषधि निर्माताओं द्वारा उत्तम गुणवत्तापूर्ण औषधियां प्रधानमंत्री जन औषधि केन्द्रों पर अत्यन्त कम मूल्य में उपलब्ध हैं। भारत सरकार आयुर्वेद को भी प्रोत्साहित कर रही है किन्तु दुर्भाग्य से अच्छे निर्माताओं द्वारा निर्मित आयुर्वेद औषधियों के बहुत अधिक मूल्य के कारण सामान्य उपभोक्ता इनका लाभ उठाने में असमर्थ हैं। अधिक उपयोग वाले शास्त्रीय आयुर्वेद योगों को अच्छे निर्माताओं द्वारा निर्मित करवा कर न्यूनतम मूल्य पर जन औषधि केन्द्रों पर उपलब्ध करवाया जाना चाहिए। इससे जनसामान्य में आयुर्वेद के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। आयुर्वेद विशेषज्ञों से ऐसी औषधियों की सूची सरलता से बनवाई जा सकती है। जन औषधि केन्द्रों की संख्या बढ़ाने का निर्णय स्वागत योग्य है। लेकिन इसके साथ-साथ एलोपैथिक डाक्टरों व अस्पतालों द्वारा मरीजों को जेनेरिक नामों से दवा के पर्चे देना भी अनिवार्य किया जाना चाहिए ताकि वे आसानी से जन औषधि केन्द्रों से दवायें खरीद सकें। देश में आयुर्वेद की लोकप्रियता बढ़ाने तथा जनता को यथासंभव स्वास्थ्यरक्षा में आत्मनिर्भर बनाने हेतु व्यापक स्वाथ्य शिक्षण अभियान चलाने की भी जरूरत है।

– **जय प्रकाश गुप्त,** अम्बाला

महिला सशक्तीकरण

महिला सशक्तीकरण और लैंगिक समानता के मुद्दे पर छत्तीसगढ़ में एक दिलचस्प मामला सामने आया है जहां महिला प्रतिनिधियों के बदले उनके पतियों ने पद की शपथ ली और अपना स्वागत करवाया। 6 महिला पंचों की जगह उनके पतियों को पंचायत सचिव ने शपथ दिलाई। यह मामला हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम वास्तव में महिला सशक्तीकरण की दिशा में बढ़ रहे हैं? सरकार द्वारा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आरक्षण और अन्य प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन फिर भी अधिकांश महिला प्रतिनिधियों का सारा कामकाज पति ही देखते हैं और जनता भी पतियों के पास ही काम करवाने जाती है। इस प्रकरण से स्पष्ट है कि हमारे समाज में अभी भी पितृसत्तात्मक मानसिकता हावी है। महिलाओं को घरेलू कामों तक सीमित और राजनीति को पुरुषों का क्षेत्र माना जाता है। हालांकि, महिलाएं राजनीति में अपनी भूमिका निभा रही हैं और सफलता प्राप्त कर रही हैं। कई महिलाएं मुख्यमंत्री और मंत्री के पदों पर आसीन हुई हैं। इसलिए हमें महिला सशक्तीकरण के लिए काम करने वाले सभी व्यक्तियों और संगठनों को सलाम करने के साथ ऐसी विकृतियां दूर करने को प्राथमिकता देनी चाहिए।

– **मधु सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

चीन की अपील

चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने भारत से अपील की है वो ट्रम्प के टैरिफ या व्यापार युद्ध से जूझने एवं लड़ने के लिए चीन के साथ एक मंच पर आये। भारत और चीन को सबसे बड़ा पड़ोसी बताते हुए वांग यी ने कहा कि चीन का मानना है कि दोनों को साझेदार होना चाहिए और एक दूसरे की सफलता में योगदान देना चाहिए। ड्रैगन और हाथी के सहयोगी बनने से दोनों पक्षों को लाभ होगा। भारत के साथ सहयोग की इच्छा जाहिर करते हुए चीनी विदेश मंत्री ने कहा कि आधिपत्यवाद और सत्ता की राजनीति का विरोध करने में अग्रणी भूमिका निभाने की जिम्मेदारी हमारी है। जब चीन और भारत हाथ मिलाएंगे तो अंतरराष्ट्रीय संबंधों में अधिक लोकतंत्र और एक मजबूत वैश्विक दक्षिण की संभावनाएं बेहतर होंगी। उन्होंने याद दिलाया कि यह चीन.-भारत राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ का साल है। बदली परिस्थितियों में चीन भारत के साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार दिखता है, लेकिन भारत का अतीत के कड़वे अनुभवों से बाहर निकला आसान नहीं होगा। सबसे बड़ा सवाल है कि क्या चीन भारत के साथ अपने मतभेदों व सीमा समस्या का न्यायपूर्ण हल करने के लिए तैयार है या यह अपील केवल एक बयानबाजी है?

– **जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

विदेश मंत्री की सुरक्षा

ब्रिटेन की सुरक्षा एजेंसियों की निष्क्रियता के चलते भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर की यात्रा के दौरान खालिस्तानी अलगाव और आतंकवाद की झलक फिर नजर आई। एक उच्चस्तरीय राजनयिक के सामने उसके देश के राष्ट्रीय झंडे को फाड़ने की घटना अत्यन्त अपमानजनक व निंदनीय है। इस घटना से ब्रिटेन की कानून-व्यवस्था पर भी सवाल खड़े होते है। वैसे खालिस्तानी तत्वों का ब्रिटेन में बढ़ता दुस्साहस कोई नई बात नही है। खालिस्तानी समर्थकों की अलगाववादी गतिविधियां कई बार ब्रिटेन, कनाडा और अमेरिका में नजर आई हैं। ब्रिटेन ने इस घटना की निंदा करके औपचारिकता निभाई है लेकिन केवल निंदा करना ही काफी नहीं है। ब्रिटेन में काफी लंबे समय बाद लेबर पार्टी की सरकार आई है। ऐसे में यदि वह अपने देश को अलगाववादी व अतिवादी तत्वों का अड्डा बनने देती है तो यह लेबर पार्टी तथा स्वयं ब्रिटेन के लिए भी ठीक नहीं होगा। ब्रिटिश नेताओं को समझना चाहिए कि लोकतंत्र का अर्थ भीड़तंत्र या अराजकता नहीं हो सकता है। भारत-ब्रिटिश संबंधों के लिए ऐसी घटनायें हानिकारक हो सकती हैं।

– **अमृतलाल मारू,** इंदौर

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

पुलिस फोर्स को एसपी ने दिया प्रशिक्षण, हुई मॉक ड्रिल

संवाददाता। संतकबीरनगर

पुलिस अधीक्षक सत्यजीत गुप्ता के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक सुशील कुमार सिंह के मार्गदर्शन व समस्त क्षेत्राधिकारी के नेतृत्व में पुलिस लाइन परेड ग्राउंड पर जनपद में शांति व सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखने तथा किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति से निपटने के उद्देश्य बलवा ड्रिल का पूर्वाभ्यास किया गया, रिजर्व पुलिस लाइन्स में कार्यरत उपनिरीक्षकों/मुख्य आरक्षियों/आरक्षियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस दौरान पुलिस टीम को दंगा निरोधक/बल्वा निरोधक उपकरणों का प्रशिक्षण एवं अभ्यास कराया गया।

पुलिस बल के कर्मियों को विभिन्न प्रकार के शस्त्रों एवं दंगा नियंत्रण उपकरणों के संचालन का प्रशिक्षण प्रदान किया गया व पुलिस बल को दंगाईयों से निपटने के लिए विभिन्न तरीके/गुर सिखाये गये। अभ्यास के दौरान भीड़ को तितर बितर करने के विभिन्न तरीकों के साथ फायर ब्रिगेड की गाड़ी से पानी की बौछार/लाठी चार्ज/आँसू गैस के गोले और दंगाईयों पर रबर के गोले/एंटी राइट गन/रबर बुलेट गन/टीयर गैस गन/हैंड ग्रेनेड/मिर्ची बम आदि शस्त्रों को चला कर पूर्वाभ्यास किया गया साथ ही विभिन्न टीमें बनाकर दंगा नियत्रंण हेतु अमल में लाये जाने वाले सभी विधिक प्रावधानों का क्रमवार अभ्यास किया गया।

इस दौरान क्षेत्राधिकारी खलीलाबाद अजीत कुमार चौहान, क्षेत्राधिकारी धनघटा अजय कुमार सिंह, क्षेत्राधिकारी मेहदावल सर्व दमन सिंह, क्षेत्राधिकारी प्रियम राज शेखर पाण्डेय, प्रतिसार निरीक्षक रजनीकांत ओझा पीआरओ दुर्गेश कुमार पाण्डेय, समस्त थाना प्रभारी/थानाध्यक्ष सहित अन्य अधिकारी/ कर्मचारीगण उपस्थित रहे। आगामी त्यौहारों को लेकर दिशा-निर्देश पुलिस अधीक्षक सत्यजीत गुप्ता ने इस अवसर पर उपस्थित पुलिस कर्मियों और अधिकारियों से आगामी होली, ईद, रमजान और अन्य धार्मिक और सांस्कृतिक त्यौहारों के दौरान विशेष सतर्कता बरतने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा कि ऐसे अवसरों पर पुलिस प्रशासन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, सभी थाना प्रभारी/चौकी प्रभारी/हल्का प्रभारी / बीट प्रभारी अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए धर्मगुरू/जनमानस से संवाद स्थापित कर समस्याओं से अपने उच्च अधिकारी को तत्काल अवगत कराये। किसी प्रकार की लपरवाही क्षम्य नहीं है ,क्योंकि इन त्यौहारों के दौरान कभी भी कानून व्यवस्था बिगड़ सकती है। पुलिस कर्मियों को यह भी निर्देश दिए कि वे किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए पूरी तरह से तैयार रहें। उन्होंने बताया कि यह ड्रिल इस उद्देश्य से की गई है कि पुलिस बल को सभी प्रकार की आपातकालीन परिस्थितियों का सामना करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सके, ताकि वे शांति व्यवस्था बनाए रखने में सक्षम हों। इस दौरान पुलिस कर्मियों को दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि ष्हमारा उद्देश्य है कि आगामी त्यौहारों के दौरान शांति और सद्भावना बनी रहे। हमें हर परिस्थिति में शांति बनाए रखने के लिए सतर्क रहना होगा।

किसी भी उपद्रवी या बलवाइयों से निपटने के लिए दंगा निरोधक उपकरणों का प्रभावी और सुरक्षित तरीके से उपयोग किया जाना चाहिए। पुलिस अधीक्षक ने यह भी कहा कि पुलिस को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति या समूह किसी भी प्रकार की हिंसा या अव्यवस्था को बढ़ावा न दे। इसीलिए, पुलिस बल को अत्यधिक सतर्कता बरतनी होगी और किसी भी अनहोनी से निपटने के लिए तत्पर रहना होगा।

हारजीत की बाजी लगाते चार जुआड़ी पकड़े गए

जालौन, उरई। चौकी पुलिस ने सार्वजनिक स्थान पर हार जीत की बाजी लगा रहे चार लोगों को पकड़ा है। जिनके पास से पुलिस ने 1760 रुपये बरामद किए हैं। पुलिस ने पकड़े गए आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। चौकी प्रभारी जितेंद्र सिंह को सूचना मिली कि नगर क्षेत्र में सारंगपुर मार्ग पर हिरदेशाह में स्थित कब्रिस्तान के पास कुछ लोग हार जीत की बाजी लगा रहे हैं। पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंची पुलिस को देखते हुए जुआरियों में भगदड़ मच गई। पुलिस ने मौके से मिथुन कपारिया निवासी चिमरौडी कालीकुंआ बांदा, टिंकू कुशवाहा हिरदेशाह, दीपक याज्ञिक पुरानीहाट, वीरबहादुर कुशवाहा हिरदेशाह को पकड़ लिया।

छात्राओं ने गांव की महिलाओं को किया साक्षरता के लिए जागरूक

संतकबीरनगर। प्राथमिक विद्यालय भुजैनी में चल रहे गंगा देवी कपिल देव तिवारी पी0जी0 कॉलेज भुजैनी के राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत साप्ताहिक विशेष शिविर का पंचम दिवस लक्ष्य गीत से प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात स्वयंसेवियों द्वारा साक्षरता जागरूकता अभियान के अंतर्गत भव्य रैली निकाली गई। जिसमें स्वयंसेवियों द्वारा लोगों को जागरूक करने के लिए विभिन्न प्रकार के स्लोगनो नारों एवं पोस्टरों आदि का प्रयोग किया गया। साक्षरता जागरूकता विषय पर आयोजित गोष्ठी में मोहम्मद शाहिद ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है। जिसका उपयोग हम दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं। वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 रंगनाथ तिवारी ने कहा कि नि:संदेह रूप से शिक्षा परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है और विश्व के विकास में एक प्रभावकारी कारक है। कनिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 विनीत कुमार ने कहा कि शिक्षा मनुष्य को संस्कृत बनती है जिससे वह समझ में रहने लायक सभी प्राणी बनता है श्रीमती शशि चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा व्यक्तिगत सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है

सड़क निर्माण में कार्यदायी संस्था गुणवत्तापूर्वक कार्य पूर्ण करायेः डीएम

उरई, जालौन। अधूरे निर्माण कार्यों को निर्धारित समय में पूर्ण कराने के मिशन में जुटे जिलाधिकारी निरंतर ऐसे स्थलों का निरीक्षण कर जरूरी दिशा निर्देश ही नहीं बल्कि निर्माण सामग्री की गुणवत्ता का आंकलन करने से नहीं चूक रहे हैं। ताकि ऐसे कार्यों का जनपद की जनता को लंबे समय तक लाभ मिलता रहे। रविवार को डीएम ने चाकी गांव से बंगेश्वर धाम आश्रम तक निर्मित करायी जा रही सड़क का निरीक्षण कर कार्य समय से पूरा कराने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय ने ग्राम चाकी में स्थित अस्थायी गौशाला से बंगेश्वर धाम आश्रम तक क्रिटिकल गेप से बनाई जा रही निर्माणाधीन सड़क का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने सड़क निर्माण कार्य की प्रगति का जायजा लिया और संबंधित कार्यदायी संस्था को जल्द से जल्द कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि इस सड़क मार्ग की कुल लंबाई 1.0 किलोमीटर है, जिसमें जीएसबी स्तर तक का कार्य पूरा हो चुका है। उन्होंने निर्देश दिया कि शेष कार्य में तेजी लाई जाए ताकि यह मार्ग जल्द ही जनता के उपयोग के लिए तैयार हो सके।

बच्चों के गुजराती व राजस्थानी लोकनृत्य ने सबको किया मंत्रमुग्ध

संवाददाता। रायबरेली

अमावां ब्लॉक के उच्च प्राथमिक विद्यालय हिलगी वर्ष 2024-25 का 'उमंग' वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इंजीनियरिंग व प्रबंधक कॉलेजों की तरह ही यहां पर आयोजित उमंग उत्सव (वार्षिकोत्सव) में छात्र-छात्राओं ने अपनी प्रस्तुति से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि खण्ड विकास अधिकारी संदीप सिंह और विशिष्ट अतिथि आरएसएम के जिलाध्यक्ष वीरेंद्र सिंह, एसआरजी सुनील यादव, डीपीए के प्रदेश महामंत्री अशोक प्रियदर्शी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व प्रधानाध्यापक शफीकुरहमान उर्फ गुड्डू मास्टर ने की।

पूर्व माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय के बच्चों की तरफ से सांस्कृतिक कार्यक्रम में सरस्वती वंदना और स्वागत गीत के साथ में की गई। बच्चों की तरफ से प्रस्तुत किया गया कॉमेडी नृत्य के साथ ही राजस्थान का कालबेलिया लोकनृत्य भी प्रस्तुत किया गया। आदिवासी की वेशभूषा में उनके ही कदम ताल को मिलाकर प्रस्तुत की गई छात्राओं की खास प्रस्तुति ने सबको ताली बजाने पर मजबूर कर दिया। छात्रों के चुनरी डांस ने सभी का खूब मनोरंजन किया। विज्ञान से संबंधित कंकाल तंत्र, पाचन तंत्र, श्वसन तंत्र, उत्सर्जन तंत्र एवं परिसंचरण तंत्र के बारे में धाराप्रवाह के साथ संबंधित का चित्र लगाकर उसका प्रस्तुतीकरण किया।

बीडीओ संदीप सिंह ने कहा कि मैं पूरी तरह से मन बनाकर आया था कि विद्यालय परिवार के बीच में महज दस मिनट का दूंगा क्योंकि अन्य बहुत सारे जरूरी प्रशासनिक कार्य पूर्ण कराने थे लेकिन बच्चों के कार्यक्रमों ने मुझे पूरा समय देने के लिए बाध्य किया। छात्रों का कांफिडेंस स्वयं बयां कर रहा था कि इस तैयारी के पीछे उनकी तथा उनकी शिक्षिका की कितनी कठिन मेहनत लगी है। उन्होंने बच्चों की मांग पर जल्द ही बच्चों को अपने स्तर से स्मॉर्ट क्लॉस दिलाने का वादा किया। उन्होंने राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृति परीक्षा में परचम लहराकर विद्यालय का नाम रोशन करने वाले तीनों बच्चों वंदना, रेशमी तथा शिवा सहित सभी प्रतिभागी बच्चों एवं कक्षा 8 में अध्ययनरत बच्चों को सम्मानित भी किया। गुड्डू मास्टर ने कहा कि बच्चों के शानदार कार्यक्रमों एवं प्रधानाध्यापक की प्रशंसा करते हुए कहा हमें फक्र है कि आपने अपनी कठिन मेहनत और लगन से विद्यालय को बुलंदियों पर पहुंचाने का कार्य किया है। कार्यक्रम में अन्य अतिथियों ने भी बच्चों की प्रस्तुति की प्रशंसा करते हुए प्रधानाध्यापक मीना की तरफ से कराई गई तैयारी व शैक्षणिक माहौल की तारीफ की। इस मौके पर एआरपी डॉ. एसएस श्रीवास्तव, रितेश, अब्दुल मन्नान, सलाउद्दीन अंसारी और जेपी रावत का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन संकुल नोडल शिक्षक बल्ला नीरज रावत ने किया।

इस मौके पर आरएसएम के जिला संगठन मंत्री मधुकर सिंह, एससी एसटी बेसिक टीचर वेलफेयर एसोसिएशन के जिला महामंत्री रोहित चौधरी, जूनियर हाई स्कूल संघ के ब्लाक अध्यक्ष सुरेश सिंह, आरएसएम के ब्लॉक अध्यक्ष बृजेंद्र सिंह, शिक्षक राजेश सिंह, अभय श्रीवास्तव, अनीता प्रियदर्शी, ग्राम प्रधान फूलचंद्र, एसएमसी अध्यक्ष रामदेव, शिक्षिका ऊषा, गरिमा सिंह, रामभरत राजभर, कमल कुमार अहिरवार, डॉ मनोज, , हनी गुलाटी, मनीषा चौधरी, राखी वर्मा, वरुणेंद्र, विनीता आदि शिक्षक व अभिभावक मौजूद रहे।

क्विक न्यूज

राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर का आयोजन

मुसाफिरखाना,अमेठी। रविवार को दुष्यन्त सिंह भाले सुल्तान पी.जी कॉलेज सादीपुर में चल रहे राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय शिविर के छठवें दिन छात्र छात्राओं ने लक्ष्य गीत, योगाभ्यास, प्राणायाम के साथ संकल्प गीत गाया। छात्र छात्राओं ने योग करते हुए उसके प्रति सबको जागरूक किया। सभी छात्र छात्राओं ने महाविद्यालय के प्रांगण में साफ सफाई करते हुए, स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत के अंतर्गत महाविद्यालय में स्वच्छता अभियान चलाया । इसके पश्चात छात्राओं ने सड़क सुरक्षा से संबंधित रैली निकाल करके सड़क पर आ जा रहे दो पहिया वाहन चालकों को रोक कर हेलमेट एवं चार पहिया वाहनों को सीट बेल्ट के लिए प्रेरित किया। सायंकालीन बौद्धिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहाँ शिविर यात्रियों के बीच महिला शिक्षा,महिला सशक्तिकरण एवं नारी चेतना पर छात्राओं को प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन एन.एस.एस की कार्यक्रमाधिकारी डॉ. पुनीत कुमार ने किया।

श्रीमद्भागवत महापुराण कथा में श्रोताओं की भीड़ उमड़ी

अमेठी। श्रीमद्भागवत महापुराण संगीतमय कथा मे श्रोताओ की भीड उमड़ पडी। कथा व्यास आचार्य अखिलेश जी महराज ने रविवार को वृन्दावन मे गोवर्धन पूजा पर कथा सुनाई। भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओ पर चर्चा की। पूतना की कथा सुनाई। इस महोत्सव मे ब्राह्मणो मे संस्कार के गिरवाट पर चर्चा की। यज्ञोपवीत अब नही होता है। बच्चो मे पाश्चात्य सभ्यता की ओर बढ रहे है। बच्चे जनेऊ धारण नही कर रहे है। गुरु की महत्ता पर प्रकाश डाला।माता पिता को धर्म बताया। गुरु की कृपा सदैव बनी रहे। गुरु के रहते अमंगल नही होता। परिवार की रक्षा सदैव होती है। मुख्य यजमान राजाराम मिश्र सपत्नीक ने छप्पन भोग भगवान गोवर्धन के लगाये। इस अवसर पर कार्यक्रम मे भाजपा किसान मोर्चा अमेठी जिलाध्यक्ष देव नारायण तिवारी,भाजपा किसान मोर्चा काशी प्रान्त क्षेत्रीय अध्यक्ष काशी प्रसाद तिवारी,जिला पंचायत सदस्य जगन्नाथ पाण्डेय,पूर्व जिला पंचायत सदस्य अमरेन्द्र सिंह पिन्टू,अधिवक्ता राम शिरोमणि शुक्ल,बृजेश कुमार मिश्र,पूर्व प्रधान भारत लाल द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

गैगेंस्टर एक्ट में वांछित 2 अभियुक्त गिरफ्तार

जामों, अमेठी। थाना जामो पुलिस द्वारा गैगेंस्टर एक्ट में वांछित 02 अभियुक्त गिरफ्तार किया गया है। जिले में अपराध एवं अपराधियों के धर पकड़ हेतु अभियान चलाया जा रहा है। थाना प्रभारी विनोद कुमार सिंह ने वांछित अभियुक्तों के गिरफ्तारी की जानकारी देते हुए बताया कि निरीक्षक भानू प्रताप यादव थाना जामो मय हमराह द्वारा तलाश वांछित, देखभाल क्षेत्र व चेकिंग संदिग्ध व्यक्ति, वस्तु, वाहन के दौरान मुखबिर की सूचना पर मु0अ0सं0 47/25 धारा 2(द्व)ख/3 उ0प्र0 गिरोहबन्द समाज विरोधी क्रियाकलाप नि0 अधि0 थाना जामो जनपद अमेठी में वांछित 02 अभियुक्त सुमित सिंह पुत्र शिवकुमार सिंह उर्फ पप्पू सिंह निवासी ग्राम जनापुर थाना जामो जनपद अमेठी उम्र करीब 27 वर्ष रमेश सिंह पुत्र शिवशरण सिंह निवासी ग्राम लालपुर थाना जामो जनपद अमेठी समय करीब 10.20 बजे रात्रि में गिरफ्तार किया गया । गिरफ्तारी के संबंध में थाना जामो पुलिस द्वारा विधिक कार्यवाही की जा रही है ।

दबंगों ने पिता-पुत्र से मारपीट कर किया लहूलुहान

जालौन, उरई। पिता व बेटे को रास्ते में रोककर गांव के ही भाइयों ने मिलकर गाली, गलौज करते हुए लाठी, डंडों से मारपीट कर घायल कर दिया। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम उदोतपुरा निवासी राजकिशोर ने पुलिस को बताया कि वह व उनका बेटा हिमांशु किसी काम के चलते शनिवार को जालौन आए थे। देर रात वह बाइक से वापस अपने गांव लौट रहे थे। गांव के नजदीक ही उन्हें उमाशंकर व शिवशंकर मिल गए। दोनों ने जबरन उसे रास्ते में रोक लिया और रंगबाजी दिखाते हुए उनके साथ गाली, गलौज शुरू कर दी। जब उसने गाली देने से मना किया तो उन्होंने लाठी, डंडों से मारपीट शुरू कर दी। इसी बीच उन्होंने उसके सिर में अचानक लाठी का प्रहार कर दिया। जिससे उसके सिर में चोट आई है। मारपीट के दौरान शोरगुल होता देख आसपास के लोग वहां आ गए।

जीआरपी व पालिका ने अवैध कब्जा हटाया

कालपी, जालौन। रेलवे की जमीन में अवैध कब्जा करना अतिक्रमणकारियों को भारी पड़ गया। रविवार को नगर पालिका परिषद के राजस्व निरीक्षक के नेतृत्व में जीआरपी पुलिस के जवानों की मौजूदगी में अवैध कब्जे को ध्वस्त करके जमीन को खाली कराया गया। मालूम हो कि कालपी नगर में रेलवे लाइन के किनारे मोहल्ला आलमपुर में रेलवे की भूमि में अवैध कब्जा हो रहा था। इसकी शिकायत शनिवार को थाना समाधान दिवस में तहसीलदार अभिनव कुमार तिवारी तथा कोतवाली निरीक्षक परमहंस तिवारी के नेतृत्व में मीरा देवी की ओर से प्रस्तुत की गई थी। तहसीलदार के निर्देशन पर रेलवे पुलिस चौकी के सिपाहियों तथा नगर पालिका के राजस्व निरीक्षक रामभवन सिंह के नेतृत्व में संयुक्त टीम के द्वारा अवैध कब्जा हटाने की कार्रवाई की गई।राजस्व निरीक्षक ने बताया की अतिक्रमणकारियों के द्वारा पशु बाड़े के लिए तीन सेट का हाता बनाया जा रहा था। टीम ने अतिक्रमण हटाकर सरकारी भूमि को कब्जा मुक्त कर दिया।

सुदामा चरित्र ,परीक्षित कथा और कलयुग के वर्णन के साथ भागवत कथा का समापन

संवाददाता। लालगंज, रायबरेली

मध्य प्रदेश छतरपुर से भागवताचार्य श्री राजन जी महाराज ने एफबी इंटरनेशनल स्कूल में चल रही कथा के समापन दिवस पर कहा कि कलयुग में सिर्फ भागवत भजन सुमिरन और परमपिता परमात्मा की शरण में जाने से ही मन को शांति प्राप्त हो सकती है। भागवत कथा वाचक श्री राजन जी महाराज ने सुदामा चरित्र के साथ-साथ राजा परीक्षित की कथा और कलयुग के प्रभाव का वर्णन किया। कथावाचक श्री राजन जी महाराज ने कहा कि

सुदामा चरित्र परीक्षित कथा एक प्राचीन कथा है, जो भगवान कृष्ण के मित्र सुदामा की कहानी बताती है। सुदामा एक गरीब ब्राह्मण थे, जो अपने परिवार के साथ रहते थे। एक दिन, सुदामा ने भगवान कृष्ण से मिलने का फैसला किया और उन्हें एक मुट्ठी चावल के साथ उपहार दिया। भगवान कृष्ण ने सुदामा का स्वागत किया और उन्हें अपने महल में ले गए। भगवान कृष्ण ने सुदामा को बहुत सारा धन और समृद्धि दी, जिससे सुदामा का जीवन बदल गया।इस कथा का संदेश यह है कि सच्ची मित्रता और भक्ति की शक्ति से हमें जीवन में सफलता और समृद्धि मिल सकती है। लेकिन कलयुग में इस कथा का प्रभाव कम होता जा रहा है, क्योंकि लोग सच्ची मित्रता और भक्ति की जगह धन और शक्ति को अधिक महत्व दे रहे हैं।

आजकल के लोग अपने स्वार्थ के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं, जिससे समाज में अपराध और अन्याय बढ़ रहे हैं। इसलिए, हमें सुदामा चरित्र परीक्षित कथा के संदेश को अपने जीवन में उतारने की जरूरत है, ताकि हम एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें। कार्यक्रम का सफल संचालन शिवसागर चौधरी के द्वारा किया गया।कथा व्यास पीठ का पूजन आरती मुख्य यजमान और कथा के आयोजक पूर्व ब्लाक प्रमुख जयशंकर सिंह और श्रीमती उपासना सिंह के द्वारा किया गया।

गौशाला व आरआरसी सेंटर का जिलाधिकारी ने किया निरीक्षण

उरई, जालौन। रविवार को जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय ने विकास खंड माधौगढ़ की ग्राम पंचायत चाकी स्थित अस्थायी गौशाला पहुंचकर वहां की व्यवस्थाओं का का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने गौशाला में मौजूद व्यवस्थाओं का जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने गौशाला में गोवंश के चारे-पानी, चिकित्सा सुविधा और सुरक्षा व्यवस्था की स्थिति को परखा। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि गौशाला में रह रहे गोवंश को पर्याप्त मात्रा में हरा चारा और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया जाए। इसके साथ ही, बीमार या कमजोर पशुओं के लिए नियमित चिकित्सा जांच और उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। जिलाधिकारी ने गौशाला की स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। उन्होंने संबंधित कर्मचारियों से कहा कि सफाई की नियमित व्यवस्था होनी चाहिए ताकि गोवंश को स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण मिल सके। उन्होंने स्पष्ट किया कि निराश्रित गोवंश की देखभाल शासन की प्राथमिकता है और सभी संबंधित अधिकारियों को अपनी जिम्मेदारियों का गंभीरता से निर्वहन करना होगा।

निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने ग्राम चाकी स्थित आरआरसी सेंटर का भी दौरा किया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी माधौगढ़ मनोज कुमार, जिला पंचायत राज अधिकारी राम अयोध्या प्रसाद, ग्राम प्रधान सहित अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

बीएसएनएल का नेटवर्क सप्ताह भर से ध्वस्त, मोबाइल उपभोक्ता त्रस्त

संवाददाता। जालौन, उरई

सरकारी दूर संचार कंपनी बीएसएनएल के नेटवर्क से उपभोक्ता परेशान हैं। आए दिन मोबाइल के नेटवर्क गायब हो जाते हैं। नगर क्षेत्र में एक सप्ताह से इंटरनेट सेवा भी ध्वस्त चल रही है। इसके बाद भी विभागीय अधिकारी समस्या का समाधान नहीं कर पा रहे हैं। उपभोक्ताओं ने समस्या का समाधान कराने की मांग उच्चाधिकारियों से की है। नगर क्षेत्र में भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) की सेवाएं ध्वस्त चल रही। एक सप्ताह से नगर में उपभोक्ताओं को इंटरनेट की सुविधा नहीं मिल पा रही है। बीती तीन मार्च को दोपहर से शाम तक सिग्नल गायब रहे, जिसके कारण कॉल व इंटरनेट समेत सभी तरह की सेवाएं पूरी तरह से बंद रहीं। शाम को सेवाएं शुरू हुई। लेकिन इसके बाद से ही नेटवर्क की समस्या आ रही है। उपभोक्ता अशफाक राईन, जावेद, मनोज, विनोद आदि ने बताया कि आए दिन घंटों के हिसाब से नेटवर्क गायब हो जाते हैं। नेटवर्क आते भी हैं तो कॉल करने में दिक्कत आती है। इंटरनेट सेवा तो ध्वस्त ही है। न तो कोई ब्राउजर काम कर रहा है और न ही अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग कर पा रहे हैं।

सबसे अधिक परेशान वह उपभोक्ता हैं जिनके पास मात्र बीएसएनएल की सिम ही है। प्रयागराज बोर्ड की हाईस्कूल व इंटरमीडिएट की परीक्षाएं चल रही है। बच्चे आनलाइन पढ़ाई कर रहे हैं। ऐसे में नेट न चलने के कारण परीक्षार्थियों को पढाई करने में असुविधा हो रही है। उपभोक्ताओं ने इसकी शिकायत ट्राई व दूर संचार मंत्रालय को भी भेजी है, लेकिन अभी तक समस्या का समाधान नहीं हो पाया है।

उपभोक्ताओं ने बताया कि स्थानीय कर्मचारियों से शिकायत करने पर वह बता देते हैं कि सेवाएं ऊपर से प्रभावित है। उनके स्तर से कुछ नहीं किया जा सकता है। ऐसे में उपभोक्ता विभाग को कोसते नजर आते हैं। इस संदर्भ में अवर अभियंता गजेन्द्र सिंह ने बताया कि स्थानीय स्तर पर दिक्कत नहीं है। ऊपर से काम आने के कारण समस्या आ जाती है। उसका समाधान करा दिया जाता है।

एसजेएस लालगंज में संपन्न हुआ वार्षिक परीक्षा फल वितरण

लालगंज, रायबरेली। क्षेत्र के अग्रणी व बहुचर्चित अंग्रेजी माध्यम शिक्षण संस्थान एस.जे.एस. पब्लिक स्कूल लालगंज में वार्षिक परीक्षा फल वितरण कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रबंध तंत्र समिति द्वारा मां वीणा-वादिनी का माल्यार्पण करके किया गया।

कार्यक्रम के इस अवसर पर विद्यालय के छात्र छात्राओं द्वारा अभिभावकों को भाव विभोर कर देने वाले अनेक मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। विद्यालय की सह-प्रबंधिका डॉक्टर अनुश्री सिंह ने अपने संबोधन में विद्यालय प्रबंध तंत्र समिति की ओर से शिक्षा के क्षेत्र में अनवरत किए गए प्रयासों का उल्लेख करते हुए आए हुए समस्त अभिभावकों व क्षेत्र वासियों को आने वाले पर्व होली की अग्रिम शुभकामनाएं दी। वहीं विद्यालय के प्रबंधक अग्रज सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा में गुणवत्ता बनाए रखने के लिए तथा छात्रों को समाज का कुशल मार्गदर्शक बनाने के लिए विद्यालय व अभिभावक दोनों का योगदान होना अति आवश्यक है। साथ ही नई शिक्षा नीति के तहत शिक्षा के क्षेत्र में हुए बदलावों के बारे में भी अभिभावकों को अवगत कराया गया।

पुष्पेंद्र पुष्प के गजल संग्रह 'ख्वाहिशों के सिलसिले' का बेमिसाल रहा लोकार्पण

संवाददाता। उरई, जालौन

देश और प्रदेश में अपनी गजलों और गीतों से काव्य मंचों पर अपनी अलग छवि बनाने वाले युवा गीतकार पुष्पेंद्र पुष्प के प्रथम गजल संग्रह ख्वाहिशों के सिलसिले का आज रविवार को यहां नगर के राठ रोड स्थित मंडपम सभागार में भव्य लोकार्पण किया गया प्रथम सत्र के समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार पंडित यज्ञ दत्त त्रिपाठी ने व मुख्य आतिथ्य जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी चंद्र प्रकाश ने तथा संचालन सुप्रसिद्ध कवित्री डॉक्टर रेनू चंद्रा ने किया इस दौरान दूसरे सत्र में कवि सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें देश के जाने-माने कवियों ने अपनी रचनाएं पढ़कर समारोह को यादगार बना दिया।

साहित्य और संस्कृति के संवर्धन के लिए अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले मंडपम सभागार में रविवार की दोपहर जनपद के सुप्रसिद्ध युवा गीतकार पुष्पेंद्र पुष्प की प्रथम पुस्तक ख्वाहिशों के सिलसिले गजल संग्रह का भव्य लोकार्पण किया गया इस अवसर पर जनपद के वरिष्ठ साहित्यकार पंडित यज्ञ त्रिपाठी ने कहा कि पुष्पेंद्र पुष्प की यह पुस्तक उनकी सामाजिक संवेदना का प्रतिरूप है उन्होंने उनके साहित्यिक समर्पण और निष्ठा को सच्ची साहित्यिक चेतना बतलाया तो वहीं वरिष्ठ साहित्यकार एवं जिला प्रोबेशन अधिकारी डॉ अमरेंद्र पोतस्यायन ने कहा कि साहित्य संवर्धन और सामाजिक चेतना में पुष्पेंद्र पुष्प की साहित्य की यात्रा प्रभावशाली है वह साहित्य को नई दिशा देंगे।

वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार अनिल शर्मा ने उन्हें शुभकामनाएं और बधाई दी उन्होंने कहा कि सामाजिक चेतना और परिवर्तन में साहित्यकार का योगदान महत्वपूर्ण होता है। अन्य मंचासीन अतिथियों में सुप्रसिद्ध शायर नासिर अली नदीम समारोह संचालन कर रही सुप्रसिद्ध कवियित्री डॉ रेनू चंद्रा और डॉ. माया सिंह माया ने गजल संग्रह ख्वाहिशों के सिलसिले पर अपने उदगार जताते हुए कहा कि पुष्पेंद्र पुष्प की सामाजिक संवेदना उनकी कविताओं गीतों और गजलों में दृष्टिगोचर होती है वह साहित्य के क्षेत्र में नए आयाम बनाएंगे उन्होंने पुष्पेंद्र पुष्प को मंगलमय शुभकामनाएं प्रदान की।

दूसरे सत्र में आयोजित कवि सम्मेलन में युवा कवित्री प्रतीक्षा ने बड़ी ही प्रभावशाली सरस्वती स्तुति कर कवि सम्मेलन का आगाज किया। इसी क्रम में अनूप शर्मा अनुपम, अभिषेक अडजरिया छतरपुर, शिवा अवस्थी कानपुर, संजीव अग्निहोत्री गाजीपुर, गोविंद गजब रायबरेली, पंकज अभिराज झांसी, अनुज अब लखनऊ तथा कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे राजीव राज इटावा ने अपनी अपनी रचनाओं से उपस्थित साहित्य प्रेमियों को साहित्य की विविध विधाओं से सराबोर और कर दिया।

आबकारी विभाग व पुलिस ने मारा छापा

●होली के मद्देनज़र अवैध शराब के खिलाफ तेज हुआ अभियान

●होली निकट आते ही तेज हुआ अवैध शराब का धंधा

संवाददाता। मौदहा, हमीरपुर

होली का त्योहार करीब आते ही शराब माफ़िया पहले की अपेक्षा अधिक सक्रिय हो जाते हैं और मौदहा कोतवाली क्षेत्र के गांव सिजनौडाए छिमौली पढोरी सहित चंद्रावल नदी की कटरी में बसे गावों के साथ ही सिसोलर थाना क्षेत्र के भुलसी बक्छा खैर सहित केन नदी की कटरी के गावों और खेतों में अवैध शराब बनाने का काम तेज हो जाता है।जिसके चलते आबकारी विभाग और मौदहा पुलिस की संयुक्त छापेमारी में एक शराब भटठी का भण्डाफोड़ करते हुए पुलिस ने भारी मात्रा में बनीए अधबनी शराब के साथ लहन बरामद कर नष्ट किया है और शराब बनाने के उपकरण बरामद किए हैं।इस आपरेशन की अगुवाई क्षेत्राधिकारी विनीता पहल ने की।लेकिन शराब बनाने वाली महिला मौके से फरार हो गई।

होली के त्यौहार पर देशी और अंग्रेजी शराब के ठेके बंद होने के कारण मोटा मुनाफा कमाने के उद्देश्य से शराब माफिया पहले की अपेक्षा अधिक सक्रिय हो जाते हैं।और जंगलों में खेतों पर और घरों में शराब बनाने का काम शुरू कर देते हैं। इसी को देखते हुए क्षेत्राधिकारी विनीता पहल की अगुवाई में आबकारी विभाग के साथ कोतवाली पुलिस ने संयुक्त आपरेशन चलाकर कोतवाली क्षेत्र के ग्राम छिमौली में एक स्थान पर चल रही शराब भटठी पर छापेमारी कर लगभग तीन कुंतल लहन और साठ लीटर कच्ची शराब के साथ शराब बनाने के उपकरण और अधबनी शराब बरामद की है।जबकि शराब बनाकर बेचने वाली महिला सुकर्तीन पत्नी मुन्ना पुलिस को देखते ही मौके से फरार होने में कामयाब हो गई है जिसकी तलाश की जा रही है। जल्द गिरफ्तार किया जाएगा। इस सम्बंध में कोतवाली प्रभारी उमेश कुमार सिंह ने बताया कि अवैध शराब के खिलाफ पुलिस और आबकारी विभाग की टीम ने मिलकर संयुक्त आपरेशन चलाया है और यह आपरेशन चलता रहेगा।शराब बनाने के उपकरण और लहन के साथ बनी अधबनी शराब बरामद की गई है लेकिन महिला फरार हो गई है जिसकी तलाश की जा रही है और मुकदमा दर्ज किया जा रहा है।

जिले में होली का पर्व नजदीक आते ही अवैध शराब का धंधा जोर पकड़ लेता है हालाकि आबकारी विभाग में भारी भरकम फोर्स होने के बाद भी छापामारी अभियान नही चलता है जिससे इस धंधे में लगे लोग निर्भय होकर काम करते हैं। यही नही शराब के अड्डों की जानकारी पुलिस को भी रहती है।

मगर आबकारी विभाग का हवाला देकर पुलिस अपना पिंड छुड़ा लेती है। जानकारी के मुताबिक जिले में यमुना व बेतवा नदी के किनारे बसे गांवो में अवैध शराब बनाने का धंधा कई दशकों से हो रहा है। यही नही इसकी खुफिया रिपोर्ट भी शासन को कई साल पहले भेजा जा चुकी थी

मौदहा के गांव खंडेह में दिनदहाड़े लाखों की चोरी

मौदहा, हमीरपुर। खंडेह गाव में दिनदहाड़े चोरी की घटना से लोगो में दहशत व्याप्त है, इसके पहले क्षेत्र में कई मर्तवा चोरी की घटनाएं हो चुकी है मगर पुलिस उनका खुलासा करने में नाकाम रही है। कोतवाली क्षेत्र के गांव खण्डेह निवासी कौशल्या पत्नी बबलू ने पुलिस को दिए शिकायती पत्र में बताया है कि 8 मार्च की दोपहर में वह अपने घर का ताला बंद करके परिवार सहित खेतों में काम करने गई थी।देर शाम घर लौटी तो दरवाजे का ताला बंद था लेकिन जब अंदर देखा तो उसके पैरों की जमीन खिसक गई। मकान के भीतर कमरे खुले थे और लाखों रुपए कीमत के सोने चांदी के जेवरात व दश हजार रुपए नकदी चोरों ने पार कर दिया है। पुलिस को दी तहरीर में पीड़िता ने अपने पड़ोसी बरदानी सोनी पुत्र दीनदयाल और उसकी पत्नी पर चोरी करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि उक्त लोगों का मकान जुड़ा हुआ है। पति पत्नी ने दोपहर का सन्नाटा देख दीवार फांद कर चोरी की घटना को अंजाम दिया है।

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अंतर्गत 100 जोड़े बंधे परिणय बंधन में

संवाददाता। गुरसहायगंज, कन्नौज

उत्तर प्रदेश सरकार की मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत विकासखंड तालग्राम के अंतर्गत पाईका मैदान तेराजाकेट में सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। जिसमें सौ जोड़ों का विवाह बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जहां डीएम, विद्यायक, ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि सहित अधिकारियों ने आशीर्वाद देकर नवविवाहित जोड़ों को शुभकामनाएं दीं। रविवार को विकासखंड तालग्राम के अंतर्गत, पाईका मैदान तेराजाकेट में सामूहिक विवाह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर विद्यायक अर्चना पाण्डेय, जिलाधिकारी शुभ्रांत कुमार शुक्ला, ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि राजीव सिंह उर्फ पुच्ची ठाकुर और खंड विकास अधिकारी मनोज कुमार गुप्ता, समाज कल्याण अधिकारी एसपी सिंह ने नवविवाहित सौ जोड़ों को जीवन के इस नए सफर की शुभकामनाएं दी। इस दौरान विद्यायक अर्चना पाण्डेय नें कहा कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों के विवाह को प्रोत्साहित करना और समाज में समानता लाना है।

जिलाधिकारी शुभांत कुमार शुक्ला ने अपने संबोधन में कहा कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना राज्य सरकार की एक अहम पहल है, जिससे न केवल गरीबों को लाभ हो रहा है, बल्कि समाज में सामाजिक समरसता भी बढ़ रही है। ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि राजीव सिंह उर्फ पुच्ची ठाकुर ने कहा कि यह योजना समाज के पिछड़े वर्ग के लिए वरदान साबित हो रही है। इस तरह के आयोजनों से समाज में एकजुटता और भाईचारे की भावना मजबूत होती है। अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों ने नवविवाहित जोड़ों को अच्छे स्वास्थ्य और सुखी जीवन की कामना की। योजना के तहत वर और वधू को शादी से संबंधित सभी जरूरी सामान और सहायता प्रदान की गई। विवाह के इस सामूहिक आयोजन में सैकड़ों परिवारों ने हिस्सा लिया।

अवैध शराब पर अंकुश लगाने को की गई छापेमारी की कार्रवाई

बांदा। आगामी होली त्यौहार के दृष्टिगत आबकारी विभाग द्वारा प्रदेश भर में चलाए जा रहे विशेष प्रवर्तन अभियान के तहत जिलाधिकारी बांदा के निर्देशन में उप आबकारी आयुक्त चित्रकूटधाम प्रभार बांदा के पर्यवेक्षण में तथा जिला आबकारी अधिकारी बांदा के नेतृत्व में दिनांक 8 मार्च 2025 को आबकारी पुलिस और राजस्व की संयुक्त टीम के द्वारा अतर्रा क्षेत्र के बदौसा थाना अंतर्गत बाघे नदी कछार में केवटनपुरवा, केवटरा में दबिश की कार्यवाही की गई। दबिश के दौरान कछार के किनारे बसे लगभग दर्जन भर से अधिक घरों की सघन तलाशी ली गई ,साथ ही नदी के किनारे खेतों झाड़ियों तथा अन्य जंगली क्षेत्र में भी शघन तलाशी अभियान चलाया गया। इस पूरी कार्यवाही के दौरान अलग-अलग जगहों से लगभग 20 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद की गई तथा खेतों में प्लास्टिक के डिब्बो में दबाकर रखी गई लगभग 200 किलो महुआ लहन बरामद कर मौके पर नष्ट किया गया।

इस कार्रवाई के तहत एक अभियुक्त को मौके से गिरफ्तार कर थाने में एफआईआर दर्ज कराई गई तथा उसे जेल भेज दिया गया। जिला आबकारी अधिकारी बांदा द्वारा बताया गया कि अवैध शराब के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई जारी है।

विद्यालय में हुआ उमंग महोत्सव छात्रों को किया गया सम्मानित

संवाददाता। रसूलाबाद, कानपुर देहात

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी रसूलाबाद कस्बे में स्थित स्नेहलता गुप्ता मेमोरियल डिग्री कॉलेज में उमंग महोत्सव का आयोजन किया गया। लगातार 4 दिन तक विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन हुए। अंतिम दिवस के सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि राजेश कुमार द्विवेदी ने किया तो वहीं कॉलेज के प्रबंधक विनीत कुमार गुप्ता व प्रवेश यादव छुन्नू ने सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

वहीं मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे महाविद्यालय विकास परिषद के निदेशक राजेश कुमार द्विवेदी का फूल माला पहनाकर व स्मृति चिन्ह देकर विद्यालय के शिक्षकों ने उनका स्वागत किया। रविवार को बच्चों ने विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्सा लिया कार्यक्रम में बच्चों ने होली गीत पर नृत्य किया और अबीर गुलाल उड़ाया तो वही महाकुंभ व राष्ट्रीय गीत पर भी बच्चों ने प्रस्तुति दी। जिला पंचायत सदस्य ऋषि सिंह व चेयरमैन देवशरण कमल ने बीएड. बीकॉम के मेधावियों को स्मृति चिन्ह व मेडल देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे डॉ.राजेश कुमार द्विवेदी ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन बच्चों को प्रेरणा देते हैं। उन्होंने मेधावियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि वह आगे बढ़े इसके साथ ही इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि जीवन में शिष्टाचार और संस्कार का होना बहुत जरूरी है। शिष्टाचार और संस्कारी लोग ही आगे बढ़ते हैं ।इंटरमीडिएट तक हमने देखा है कि बच्चे शिष्टाचार में रहते हैं लेकिन इंटरमीडिएट के बाद डिग्री कॉलेज पहुंचने के बाद बच्चे अनुशासनहीन होने लगते हैं जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए ।उन्होंने कहा कि पीएम मोदी का जो सपना है 2047 तक देश को समृद्ध बनाना है उसको पूरा करें और शिष्टाचार और सदाचार में रहे। कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रबंधक विनीत कुमार गुप्ता सराग ने आए हुए सभी लोगों, शिक्षकों, विद्यार्थियों,अभिभावकों का आभार प्रकट किया।

पुलिस की बदमाश से मुठभेड़, हुआ घायल

फतेहपुर। औंग थाना क्षेत्र में पुलिस और एक बदमाश के बीच मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में बदमाश को गोली लगी, जिससे वह घायल हो गया। पुलिस ने उसे हिरासत में लेकर इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है। आरोपी के पास से पुलिस टीम ने तमंचा, कारतूस, चोरी करने के उपकरण, बाइक बरामद की है। प्रभारी इंटेलिजेंस विंग अरूण चतुर्वेदी, थानाध्यक्ष हनुमान प्रताप सिंह और उनकी टीम शनिवार की रात थाना क्षेत्र के बडाहार तिराहे के पास चेकिंग कर रहे थे। तभी एक संदिग्ध बाइक से आता हुआ दिखाई दिया। पुलिस टीम ने रोकने का इशारा किया तो वह बाइक मोड कर भागने लगा इसी दौरान गाडी फिसल जाने से वह गिर गया। पुलिस को अपनी ओर आता देख आरोपी ने पुलिस पर फायर करनी शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में पुलिस ने भी फायरिंग की। गोली लगने से लल्लू सोनकर निवासी ओखरा कुंवर पुर मलवा घायल हो गया। पुलिस ने उसे गिरफ्तार करते हुए अस्पताल में भर्ती कराया।

क्विक न्यूज

शहर के मार्गों पर घूमी अखंड सदभावना यात्रा

फतेहपुर। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल फाउंडेशन के तत्वाधान में प्रदेश अध्यक्ष जन सेवक राजेश सिंह के नेतृत्व में लौह पुरुष, भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल जी की 150 वीं जयंती वर्ष पर रविवार को अखंड सद्भावना यात्रा नऊवाबाग से प्रारंभ हुई। जिसे प्रमोद सिंह मास्टर, आचार्य अमलेश योगी, बलबीर सिंह ने संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यात्रा कर्पूरी ठाकुर चौराहा, डाक बंगला, सदर अस्पताल, ज्वालागंज, वर्मा चौराहा, राधानगर, जयराम नगर चौराहा, जूनियर चौराहा, अहिल्याबाई होल्कर चौराहा, छत्रपति साहू जी महाराज चौराहा, लाल बहादुर शास्त्री चौराहा, गणेश शंकर विद्यार्थी चौराहा, अवंतीबाई चौराहा, शादीपुर चौराहा से पटेल नगर चौराहा में मुख्य अतिथि जहानाबाद विधायक राजेश पटेल ने सरदार पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया तत्पश्चात विचार गोष्ठी को संबोधित करते हुए सरदार वल्लभभाई पटेल जी के जीवन से संबंधित विभिन्न स्मृतियों को साझा किया एवं उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला।

गायत्री तपोभूमि में 71 बटुकों का यज्ञोपवीत संस्कार

सुमेरपुर, हमीरपुर। ब्रह्मलीन स्वामी रोटरीराम महाराज की पावन तपोस्थली श्री गायत्री तपोभूमि में रविवार को भव्य यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन किया गया। आचार्य माधव नारायण की अध्यक्षता में बल्देव शास्त्रीए उमादत्त सहित अन्य विद्वानों द्वारा 71 बटुकों का विधि.विधान से यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न कराया गया। हर वर्ष की भांति इस बार भी ब्राह्मण बालकों का उपनयन संस्कार बड़े उत्साह के साथ आयोजित किया गयाए लेकिन खास बात यह रही कि इस वर्ष बटुकों की संख्या पिछली बार की तुलना में दोगुनी से भी अधिक रही। इस आयोजन में क्षेत्र के अलावा अन्य जनपदों से भी बटुक शामिल हुएए जिससे कार्यक्रम और अधिक भव्य हो गया। बटुकों को काशी जाने से रोकने वाली परम्परा का निर्वहन अखिलेश त्रिपाठी और बउआ द्विवेदी द्वारा निभाई गईए संस्कार के दौरान तपोभूमि परिसर में बटुकों के परिजन और सगे.संबंधियों की भारी भीड़ उमड़ी रही। आयोजन के पश्चात भंडारे का आयोजन हुआ जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। हालाकि, कार्यक्रम के दौरान एक अप्रत्याशित घटना भी घटी। यज्ञोपवीत संस्कार के बीच अचानक मधुमक्खियों ने हमला कर दिया जिससे अफरा.तफरी मच गई। इस हमले में लगभग आधा दर्जन लोग घायल हो गए। हालाकि थोड़ी देर बाद स्थिति सामान्य हो गई और कार्यक्रम निर्विघ्न रूप से संपन्न हुआ। कार्यक्रम की सफलता में स्वामी जगन्नाथ स्वामी सुखानंद अरुण कुमार दुबे उर्फपप्पू भैया अनिल पालीवाल नवल शुक्ला रामबिलास गुप्ता योगेश गुप्ता सहित समिति के सदस्यों का सराहनीय योगदान रहा जिन्होंने आयोजन को व्यवस्थित और भव्य रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अस्पतालों में बढ़े बुखार, जुखाम के मरीज, हुई निशुल्क जांचें

गुरसहायगंज, कन्नौज। नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में प्रतिदिन की भांति स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें करीब आधा सैकडा मरीजों का परीक्षण किया गया और उन्हें निशुल्क दवाइयां वितरित की गईं। इस शिविर में एक दर्जन से अधिक लोगों की विभिन्न स्वास्थ्य जांचें भी की गईं। रविवार को नगर के मोहल्ला अफसरी स्थित नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में डा. अजीत कुमार के नेतृत्व में आयोजित शिविर में बुखार के 32, सामान्य 32, जुखाम 09, स्किन 05, कान 03, आंख के 02 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। वहीं शिविर में एक रोगी की सीवीसी, पॉच की शुगर और की ब्लड जांचें की गईं। इसके अलावा वृद्धों और बच्चों के लिए विशेष स्वास्थ्य परीक्षण किए गए। साथ ही चिकित्सक द्वारा निशुल्क दवाओं का वितरण भी किया गया। इस दौरान नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी डॉ. अजीत कुमार ने बताया कि इस तरह के शिविरों का आयोजन आगे भी जारी रहेगा ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों को निशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें और वे अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो सकें।

आबकारी विभाग व गोला पुलिस की छापामार कार्रवाई

गोला, खीरी। पुलिस अधीक्षक, संकल्प शर्मा के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक महोदय खीरी के निकट पर्यवेक्षण में सम्पूर्ण जनपद में शराब के निष्कर्षण, बिक्री व परिवहन के विरुद्ध अभियान के दौरान क्षेत्राधिकारी गोला व प्र0नि0 गोला के दिशा-निर्देशन में आज दिनांक 09.03.2025 को ग्राम जहानपुर थाना गोला खीरी से थाना गोला पुलिस व आबकारी टीम द्वारा अभियुक्तगण 1.शिवम पुत्र रामचन्दर उम्र करीब 32 वर्ष 2.डालचन्द पुत्र अमर सिंह उम्र करीब 20 वर्ष 3.रोहित पुत्र गुड्डू वर्मा उम्र करीब 19 वर्ष 4.विनोद कुमार पुत्र गंगाराम उम्र करीब 40 वर्ष 5.रिंकू पुत्र विपिन चन्द्र उम्र करीब 32 वर्ष 6.महेश पुत्र सुन्दर लाल उम्र करीब 32 वर्ष 7.मंजू पत्नी प्रेमशंकर उम्र करीब 40 वर्ष 8.किरन पत्नी मौजीराम उम्र करीब 40 वर्ष 9.प्रीति पत्नी शिवम उम्र करीब 32 वर्ष 10.ऊषा पत्नी प्रहलाद उम्र करीब 25 वर्ष सर्व निवासी ग्राम जहानपुर थाना गोला जिली खीरी के कब्जे से 155 ली0 अवैध अपमिश्रित शराब व अवैध कच्ची शराब व शराब बनाने के उपकरण के साथ गिरफ्तार किया गया।

प्रशासनिक अनदेखी के चलते हो रहा अवैध निर्माण, सरकारी जमीन पर कब्जा

संवाददाता। बिंदकी, फतेहपुर

बिंदकी तहसील क्षेत्र में सरकारी भूमि पर अवैध कब्जे का मामला सामने आया है, जिसमें राजस्व विभाग के कर्मचारियों की मिलीभगत के आरोप लग रहे हैं।

ग्रामीणों और युवा विकास समिति का कहना है कि प्रशासनिक अनदेखी के चलते यह अवैध निर्माण तेजी से हो रहा है, लेकिन शिकायतों के बावजूद कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। ग्राम सभा सौरा की गाटा संख्या 172, जिसका कुल क्षेत्रफल 2.6230 हेक्टेयर है, राजस्व रिकॉर्ड में ऊसर भूमि के रूप में दर्ज है।

इसका एक हिस्सा, 0.1380 हेक्टेयर, रज्जब पुत्र भिखारी के नाम दर्ज है। सरकार द्वारा सड़क निर्माण के लिए इसी गाटा संख्या से भूमि अधिग्रहीत की गई थी। लेकिन आरोप है कि राजस्व विभाग के कुछ कर्मचारियों की मिलीभगत से रज्जब ने संपूर्ण गाटा संख्या का प्रतिकर (मुआवजा) प्राप्त कर लिया। इतना ही नहीं, अब वह इस भूमि पर अवैध रूप से पक्का निर्माण करवा रहा है।

जब ग्रामीणों और युवा विकास समिति के सदस्यों ने इसका विरोध किया और आगे बढ़कर प्रशासन से इसकी शिकायत की, तो अधिकारियों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

ग्रामीणों और युवा विकास समिति ने इस अवैध कब्जे की शिकायत लेखपाल और नायब तहसीलदार बिंदकी से की, लेकिन अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया।

आरोप है कि राजस्व विभाग के कुछ कर्मचारियों की मिलीभगत के चलते इस मामले को दबाया जा रहा है। समिति के सदस्यों का कहना है कि यदि समय रहते कार्रवाई नहीं हुई, तो सरकारी भूमि पर कब्जे का यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा और अन्य लोग भी इसी तरह सरकारी जमीनों पर कब्जा करने का प्रयास कर सकते हैं।

प्रशासन की चुप्पी पर इसके चलते सवाल उठ रहे हैं। सरकार एक ओर भू-माफियाओं के खिलाफ अभियान चला रही है, वहीं दूसरी ओर राजस्व विभाग के ही कर्मचारी नियमों को ताक पर रखकर सरकारी भूमि पर अवैध कब्जे को बढ़ावा दे रहे हैं।

युवा विकास समिति ने प्रशासन से मांग की है कि इस मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं दोबारा न हों।

पचास किलो सौंफ व दस किलो सरसों का तेल जब्त

फतेहपुर। होली पर्व के दृष्टिगत सहायक आयुक्त खाद्य-द्वितीय देवेंद्र पाल सिंह सिंह के निर्देश पर तहसीलदार सदर विजय प्रताप सिंह के नेतृत्व में खाद्य सुरक्षा टीम ने पुलिस बल के साथ प्रवर्तन अभियान चलाया। नगर पालिका क्षेत्र से कुल छह नमूने संग्रहीत किए। कार्यवाही के दौरान संदिग्ध खाद्य पदार्थ 50 किलोग्राम सौंफ और 10 किलोग्राम सरसों तेल को जब्त किया। जिनकी अनुमानित कीमत 14200 है। खाद्य सुरक्षा टीम ने होटल डिप्लोमेट जीटी रोड से पनीर व बेसन का एक-एक नमूना, संतोष किराना स्टोर नई तहसील के निकट से सौंफ एवं सरसों तेल का एक-एक नमूना संग्रहित करते हुए संदेह के आधार पर 50 किलोग्राम सौंफ अनुमानित मूल्य 12500 रुपए एवं 10 किलोग्राम सरसों का तेल अनुमानित मूल्य 1700 को जब्त किया। इसके अलावा जगदीश किराना स्टोर चौक बाजार से हल्दी पाउडर व धनिया पाउडर सीकेएस ब्रांड का एक-एक नमूना संग्रहित किया।

डीएम के मार्गदर्शन में जीएसटी चोरी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई

कानपुर देहात। उच्च स्तर से प्राप्त गुप्त सूचना के आधार पर जिलाधिकारी आलोक सिंह के मार्गदर्शन में तहसील प्रशासन ने जीएसटी चोरी के खिलाफ एक बड़ी कार्रवाई की। इसके तहत उप जिलाधिकारी अकबरपुर अवनीश कुमार सिंह,तहसीलदार अकबरपुर पवन कुमार द्वारा अकबरपुर तहसील अंतर्गत पेप्सी फैक्ट्री के पीछे जैनपुर औद्योगिक क्षेत्र में प्रात: 11 बजे संदिग्ध अवस्था में चार ट्रकों को पकड़ा गया। प्रशासन को सूचना मिली थी कि कुछ व्यापारी और ट्रांसपोर्टर बिना उचित बिलिंग और कर भुगतान के माल की आपूर्ति कर रहे हैं। इस सूचना को गंभीरता से लेते हुए जिलाधिकारी आलोक सिंह ने एसडीएम अकबरपुर के नेतृत्व में टीम गठित की।

टीम ने रणनीतिक रूप से मुख्य मार्गों पर निगरानी बढ़ाई और संदेहास्पद ट्रकों की तलाशी शुरू की। जांच के दौरान चार ट्रकों को पकड़ा गया,जिसमें सुपाड़ी भरा हुआ था। जब दस्तावेजों की जांच की गई तो जीएसटी से संबंधित कई अनियमितताएं पाई गईं। इनमें से कुछ ट्रक बिना ई-वे बिल के चल रहे थे। अग्रिम कार्रवाई हेतु संबंधित विभाग को गाड़ियां सौंपी गई।

पत्रकार राघवेंद्र बाजपेई की हत्या पर मोहम्मदी के पत्रकारों मैं रोष

मोहम्मदी, खीरी। महोली (सीतापुर) में पत्रकार राघवेंद्र वाजपेई की हत्या को लेकर मोहम्मदी क्षेत्र में पत्रकारों में रोष व्याप्त है। मोहम्मदी नगर में प्रेस क्लब और प्रेस वेलफेयर एसोसिएशन के माध्यम से पत्रकारों द्वारा अंबेडकर चौराहा से पुलिस उपाध्यक्ष कार्यालय तक शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन किया गया। जिस में नारेबाजी कर पुलिस उपाध्यक्ष अरुण कुमार सिंह को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंप कर तत्काल दोषियों की गिरफ्तारी कर कड़ी कार्रवाई करने, मृतक के परिवार को 50 लाख का मुआवजा, एक व्यक्ति को सरकारी नौकरी, पत्रकार सुरक्षा कानून बनाने की और परिवार को सुरक्षा की मांग की गई। वहीं मृतक आत्मा की शांति के लिए 2 मिनट का मौन भी रखा गया। इस मौके पर प्रेस क्लब मोहम्मदी के अध्यक्ष अब्बास नकवी, संरक्षक डॉ. जेड खान, प्रेस वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष शिवम राठौर, शिब्लू , हरिश्चंद्र, पंकज मिश्रा, मोहम्मद इलियास, ,तनवीर सिद्दीकी, आकाश सैनी,हरिश्चंद्र सिह,अश्विनी राजपूत, इरफान अहमद, मो.साहिल, किशन निषाद, मो.तौहीद, सिदाकत मसूरी, शीबू सिददीकी, रवी उल्ला खा, आशाराम सैनी, अतुल मिश्रा, फिरोज मसूरी, गोपाल मिश्रा, बब्बली सहित अन्य पत्रकार मौजूद रहे

अभियान चलाकर शातिर अपराधियों पर कसें शिकंजा: पुलिस अधीक्षक

संवाददाता। चित्रकूट

पुलिस कार्यालय स्थित राघव प्रेक्षागार में रविवार को पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह की अध्यक्षता में अपराध समीक्षा गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें एसपी ने उपस्थित सभी थाना, चौकी व शाखा प्रभारियों के कार्यों का मूल्यांकन कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। साथ ही सैनिक सम्मेलन कर अधिकारियों व कर्मचारियों की समस्याओं को सुनकर सम्बन्धितों को उचित निस्तारण के निर्देश दिए।

बैठक में एसपी ने सभी थाना, चौकी व शाखा प्रभारियों के कार्यों की समीक्षा करते हुए तीन माह से अधिक लम्बित विवेचनाओं के शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए। कहा कि आईजीआरएस, आईटीएसएसओ पोर्टल तथा अन्य माध्यमों से प्राप्त सभी प्रकार के प्रार्थना पत्रों का समय से गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें। ऑपरेशन कन्विक्शन एवं ऑपरेशन त्रिनेत्र के अन्तर्गत की जा रही कार्यवाही में प्रगति लाने व कार्यवाही के सम्बन्ध में अवगत कराने के निर्देश दिए। एसपी ने समस्त थाना क्षेत्रों में आवासित घुमंतू लोगो के सत्यापन के निर्देश दिए। उन्होंने भारी संख्या मे लंबित आरोप पत्र एवं अंतिम रिपोर्ट न्यायालय में एक सप्ताह के अंदर दाखिल करने को कहा तथा हत्या, लूट, चोरी आदि के मामलों के खुलासे के निर्देश दिए। कहा कि सात वर्षों से अधिक सजा के अभियोगों में कार्यवाही कर शेष आरोपियों की गिरफ्तारी की जाए। भादवि 363, 366 के बरामदगी के लिए शेष लम्बित अभियोगों के निस्तारण के निर्देश दिए।

कहा कि स्थानीय थानों में लंम्बित चरित्र प्रमाण पत्रों का सत्यापन करें। इसके साथ ही दर्पण डैसबोर्ड की रैकिंग में सुधार, बरामद किए गए माल के निस्तारण, क्राइम अगेस्ट वुमेन पोर्टल में लम्बित विवेचनाओं के निस्तारण व आगामी होली व रमजान पर्व को सकुशल सम्पन्न कराने के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

ट्रक लूटकांड के खुलासे पर व्यापार मंडल ने किया पुलिस टीम का सम्मान

खागा, फतेहपुर। कोतवाली पुलिस ने चार दिन पूर्व हुए लूटकांड का खुलासा कर बड़ी सफलता हासिल की। इस उपलब्धि पर व्यापार मंडल गर्ग गुट ने पुलिस टीम का भव्य स्वागत किया। प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप गर्ग ने सीओ बृजमोहन राय, कोतवाल हेमंत कुमार मिश्र और चौकी इंचार्ज विकास सिंह को माला पहनाकर सम्मानित किया। चार दिन पहले खागा कस्बे में एक व्यापारी का ट्रक चार दिन पूर्व कौशांबी के पूरा मुक्ति से गायब हुआ था, जिससे स्थानीय व्यापारियों में आक्रोश था। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए जांच शुरू की और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया। लूटी गई रकम भी बरामद कर ली गई। व्यापार मंडल गर्ग गुट ने पुलिस की त्वरित कार्रवाई की सराहना की। प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप गर्ग ने कहा कि पुलिस प्रशासन की मुस्तैदी से अपराधियों को पकड़ने में सफलता मिली, जिससे व्यापारियों का विश्वास बढ़ा है। कोतवाल हेमंत कुमार मिश्र ने व्यापारियों को सुरक्षा का भरोसा दिलाया।

सशक्त होने के साथ ही महिलाओं को जागरूक रहने के लिए किया गया प्रेरित

चित्रकूट। श्री सदुरु सेवा संघ ट्रस्ट, सदुरु शिक्षा समिति एवं सदुरु महिला समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के उपलक्ष्य में 'नारी गौरव सम्मान समारोह' का आयोजन किया गया। जिसमें संस्था के विभिन्न सेवा एवं शैक्षणिक प्रकल्पों में विशेष योगदान देने वाली महिलाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए जिलाधिकारी की धर्मपत्नी डॉ तनुषा टीआर ने महिलाओं को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सभी ग्रामीण महिलाओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए सदुरु ट्रस्ट के प्रयास सराहनीय है। उन्होंने विविध सेवा प्रकल्प में महिलाओं की बढ़ती हिस्सेदारी पर प्रसन्नता व्यक्त की। ट्रस्टी डॉ बी के जैन ने कहा कि आज की महिलाओं को सशक्त होने के साथ जागृत होने की आवश्यकता है एवं नारी से ही परिवार, समाज, नगर और देश एक सूत्र में बंधा रहता है। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ पूनम आडवाणी ने महिलाओं में बढ़ रहे कैंसर रोग से बचाव के लिए जागरूक किया। कार्यक्रम में विद्याधाम विद्यालय एवं सदुरु पब्लिक स्कूल की छात्राओं द्वारा विभिन्न गीत एवं नाट्य प्रस्तुतियां प्रदर्शित की गई। इस दौरान संस्था के विभिन्न सेवा एवं शैक्षणिक प्रकल्पों में विशेष योगदान देने के लिए सुशीला पाण्डेय, रत्नू यादव, रीना सिंह एवं हेमा कालरा को संस्था द्वारा शाल, स्मृति चिन्ह श्रीफल देकर सम्मानित किया।

सहकारिता मंत्रालय ने अब तक 60 पहल कीं सहकारी समितियों का भविष्य उज्ज्वल : शाह

भाषा। अहमदाबाद

केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने रविवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सहकारिता का भविष्य उज्ज्वल है और उनके मंत्रालय ने अपने गठन के बाद से 60 से अधिक पहल शुरू की हैं। शाह ने अहमदाबाद जिला सहकारी (एडीसी) बैंक के स्वर्णिम शताब्दी समापन समारोह को संबोधित करते हुए एडीसी को छोटे लोगों के लिए एक बड़ा बैंक बताया, जिसने पीढ़ियों से लाखों किसानों और पशुपालकों के जीवन में समृद्धि लाने का काम किया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा, जब से (मोदी ने सहकारिता मंत्रालय की स्थापना की है) तब से इसने 60 से अधिक पहल की हैं। हमने पांच वर्षों में दो लाख प्राथमिक सहकारी समितियों का पंजीकरण सुनिश्चित किया है। इसमें सेवा सहकारी समितियां और प्राथमिक दूध उत्पादक सहकारी समितियां शामिल हैं, जो सहकारी आंदोलन की नींव हैं।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सहकारिता का भविष्य उज्ज्वल है। शाह ने कहा कि देश में एक भी पंचायत ऐसी नहीं होनी चाहिए, जिसमें प्राथमिक सेवा सहकारी समिति या प्राथमिक दुग्ध उत्पादक समिति न हो। उन्होंने कहा कि समितियों के संविधान में अनेक आदर्श उपनियम बनाकर उन्हें अनेक नए कार्यों से जोड़ा गया है। शाह ने कहा कि ऐसी सहकारी समितियां सस्ती दवा की दुकान भी खोल सकती हैं और पेट्रोल पंप तथा गैस वितरण सेवाओं के लिए उन्हें कोटा दिया गया है। मंत्री ने कहा कि सब्सिडी वाले अनाज के वितरण में भी उन्हें प्राथमिकता मिलती है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा, वे गोदाम भी बना सकते हैं और जलापूर्ति परियोजनाएं भी शुरू कर सकते हैं। जब तक सहकारी समिति मजबूत नहीं होगी, तब तक (सहकारी) बैंक मजबूत नहीं हो सकता। और जब तक बैंक मजबूत नहीं होगा, तब तक जिले या राज्य का डेयरी क्षेत्र फल-फूल नहीं सकता...। उन्होंने कहा कि तीन राष्ट्रीय सहकारी समितियां पंजीकृत की गई हैं, जो गुणवत्तापूर्ण बीज, निर्यात और जैविक खेती के लिए है तथा मंडल (स्थानीय सहकारी समितियां) अब उनके साथ जुड़ गई हैं। शाह ने कहा कि देश के 260 जिला सहकारी बैंकों में से एडीसी बैंक एकमात्र ऐसा बैंक है, जिसमें भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के दिशानिर्देशों के अनुसार 100 प्रतिशत ई-बैंकिंग सुविधा है। उन्होंने कहा, बैंक ने असंख्य खाताधारकों का विश्वास जीता है। यह कठिन दौर से गुजरा है, लेकिन जिसने भी इसका नेतृत्व किया, उसने इसे बेहतरीन तरीके से चलाने का काम किया, यही वजह है कि हम बैंक के अगले 100 साल का सपना देख सकते हैं। शाह ने याद किया कि जब 25 साल पहले उन्हें बैंक का चेयरमैन चुना गया था, तो इसके अस्तित्व को लेकर संदेह जताया गया था। उन्होंने आश्वासन दिया था कि एक साल के भीतर बैंक मुनाफा कमाएगा और लाभांश वितरित करेगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि तत्कालीन चेयरमैन को संदेह था, लेकिन बैंक ने महज एक वर्ष में ही मुनाफा कमाना शुरू कर दिया और लाभांश भी वितरित किया। शाह ने कहा, बैंक ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और पिछले साल 100 करोड़ रुपए का मुनाफा कमाया। आज इसका एनपीए (फंसा हुआ कर्ज) शून्य है। यह हम सभी के लिए गर्व की बात है। इससे पहले दिन में केंद्रीय मंत्री ने अहमदाबाद में ट्रस्ट द्वारा आयोजित अखंड आनंदोत्सव में मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में सस्तु साहित्य मुद्रणालय ट्रस्ट द्वारा पुनर्मुद्रित 24 पुस्तकों का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि गोवर्धनराम त्रिपाठी, महात्मा गांधी, नर्माद, काकासाहेब कालेलकर, नरसिंह मेहता और सुंदरम जैसे अनेक गुजराती लेखकों की साहित्यिक विरासत को संरक्षित और संवर्धित करना गुजराती भाषा के प्रशंसकों और भाषाविदों की जिम्मेदारी है। शाह ने कहा कि गुजरात में पठन-पाठन को बढ़ावा देने के लिए मोदी ने तत्कालीन मुख्यमंत्री के तौर पर वांचे गुजरात अभियान शुरू किया था। उन्होंने कहा कि पढ़ने से विचारों को सही दिशा मिलती है। शाह ने कहा कि अगर कोई बच्चा या विद्यार्थी छोटी उम्र से ही पढ़ने की आदत डाल ले और इंटरनेट के आकर्षण के बीच भी उसे बनाए रखे, तो वह किसी भी मुश्किल परिस्थिति में टिक सकता है या जीवन में आने वाली किसी भी बाधा को पार कर सकता है। शाह ने जैन आचार्य श्रीमद बुद्धिसागर सूरीश्वरजी महाराज की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में एक स्मारक सिक्का भी जारी किया। इस अवसर पर उपस्थित मुख्यमंत्री पटेल ने कहा, सस्तु साहित्य मुद्रणालय ट्रस्ट केवल एक प्रिंटिंग प्रेस नहीं है, बल्कि एक संस्था है जो हमारी शिक्षा और साहित्य को जीवित रखती है और यह हमारी अनूठी विरासत है। उन्होंने कहा कि 1907 में स्थापित यह संस्था एक शताब्दी से भी अधिक समय से भाषा, साहित्य और शिक्षा के प्रकाश के माध्यम से समाज को मार्गदर्शन एवं प्रेरणा दे रही है।

मातृशक्ति हमारी संस्कृति की शान

रेलवे बोर्ड के चेयरमैन सतीश कुमार ने महिला रेलकर्मियों को किया सम्मानित

प्रयागराज। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर रेलवे महिला कल्याण केंद्रीय संगठन द्वारा नेशनल रेल म्यूज़ियम ऑडिटोरियम नई दिल्ली में भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।समारोह के मुख्य अतिथि रेलवे बोर्ड के चेयरमैन एवं सीईओ सतीश कुमार ने भारतीय रेल के प्रत्येक जोन प्रोडक्शन यूनिट और कुछ सार्वजनिक उपक्रमों से चयनित 33 उत्कृष्ट महिला कर्मचारियों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि नारी न सिर्फ पुरुषों के बराबर बल्कि उनसे अधिक काम कर देश के विकास में योगदान दे रही है। सतीश कुमार ने भारतीय रेल में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रेलवे में महिलाओं की भागीदारी सिर्फ कार्यक्षेत्र तक सीमित नहीं है बल्कि वह हमारे संगठन की शक्ति और सफलता का अभिन्न हिस्सा हैं। उनकी मेहनत समर्पण और नेतृत्व ने भारतीय रेल को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने एक कविता का पाठ करते हुए कहा कि नारी मान है सम्मान है। नारी हमारी संस्कृति की शान है। नारी शक्ति है भक्ति है नारी जीवन ज्योति की अभिव्यक्ति है। इस अवसर पर संगठन की अध्यक्ष डॉ रूबी रानी सिंह ने महिला कर्मचारियों के सशक्तिकरण कार्यस्थल पर उनकी सुरक्षा और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए भारतीय रेल द्वारा उठाए जा रहे विभिन्न कदमों की चर्चा की। इस अवसर पर संगठन की सचिव अमृता शर्मा कोषाध्यक्ष निर्देश सिंह और संयुक्त सचिव अंजलि वर्मा आदि मौजूद रहीं। सम्मानित होने वाली महिलाओं में दीपा संजय कैथवास रित्विका सरकार पिंकी कुमारी सुसोभिनी नाइक वीणा रचना सुनीता शर्मा नुपुर तापदार पिंकी जाट रजिता मुनागाला सुमिता चौधरी सुनीता दशरथ बरमाइया शिल्पा एस सीमा एस कुशवाहा कल्पना चौरे पूर्णिमा कर्माकर बन्हिशिखा चक्रवर्ती उषा सिंह एल आर सुबश्री सुनीता देवी हरजीत कौर अनुराधा शर्मा रेनू पांडेय शाइनी स्वरूपी अफ़साना बेगम अश्विनी शालिकराम मेशराम रुचि लौहरी सुनीता स्वामी मंजीता देवी निशा वासन ए दीपिका बालमूचु दीपावली कुहाड़ आदि शामिल रहीं।

केंद्र व्यवस्थापक ने दो नकलचियों को पकड़ा

प्रयागराज। यूपी बोर्ड की 10 वीं और 12 वीं की परीक्षाएं आज सिर्फ प्रयागराज जिले में हुईं।प्रयागराज जिले में 24 फरवरी को होने वाली परीक्षाएं महाकुंभ के चलते स्थगित कर दी गई थी। प्रयागराज में आज हाईस्कूल की हिंदी और प्रारंभिक हिंदी विषय में 92673 परीक्षार्थी परीक्षा में शामिल हुए। इंटर के सैन्य विज्ञान विषय में 94 परीक्षार्थी परीक्षा दिया। पहली पाली में 10 वीं और 12 वीं में कुल 92767 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। इंटरमीडिएट में हिंदी व सामान्य हिंदी विषय में 103843 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। हाईस्कूल और इंटर में मिलाकर प्रयागराज में 196610 परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हो रहे हैं। परीक्षा के दौरान एक केन्द्र व्यवस्थापक ने दो नकलचियों को पकड़ा है। डीआईओएस प्रयागराज पी एन सिंह के नकल विहीन परीक्षा कराने के लिए यूपी बोर्ड की ओर से कड़े इंतजाम किए गए हैं। राज्य स्तर से लेकर यूपी बोर्ड के मुख्यालय प्रयागराज और जिलों में बनाए गए सीसीटीवी कंट्रोल रूम से परीक्षा केंद्रों की निगरानी की जा रही है। प्रयागराज जिले में बनाए गए 335 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षाएं आयोजित की जा रही है। डीआईओएस पी एन सिंह ने बताया कि जिले को 8 जोन 8 सुपर जोन और 33 सेक्टरों में बांटा गया है। सुपर जोन में एसडीएम सुपर जोनल मजिस्ट्रेट के रूप में तैनात किए गए हैं। ?आठ जोन में तहसीलदार जोनल मजिस्ट्रेट बनाए गए हैं। जबकि 33 सेक्टर में बीडीओ व नायब हसीलदार को सेक्टर मजिस्ट्रेट बनाया गया है। जिले में बनाए गए 335 परीक्षा केंद्रों पर स्टेटिक मजिस्ट्रेट और 335 ही वाह्य केंद्र व्यवस्थापक और 335 केंद्र व्यवस्थापक तैनात किए गए हैं। डीआईओएस पी एन सिंह ने बताया कि जिले में शांतिपूर्ण ढंग से परीक्षा आयोजित हो रही है। कहीं से रांग ओपनिंग की कोई खबर नहीं है। दफ्तर में बनाए गए कंट्रोल रूम में 35 अध्यापकों व सहायकों की तैनाती की गई है। जिससे सभी परीक्षा केंद्रों पर कड़ी नजर रखी जा रही है। जिले में नौ सचल दल भी बनाए गए हैं जो लगातार परीक्षा केंद्रों और निरीक्षण कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि जिले में अब तक नकल विहीन और पारदर्शी ढंग से परीक्षा आयोजित हुई है। यूपी बोर्ड की परीक्षाएं 24 फरवरी से शुरू होकर 12 मार्च तक चलेंगी। उन्होंने बताया कि जिले के 10 केन्द्रों पर 19 मार्च से मूल्यांकन की तैयारियां शुरू हो गई है। इस बार यूपी बोर्ड की परीक्षा में 54 38 597 परीक्षार्थी सम्मिलित हो रहे हैं। जिसमें हाई स्कूल में 27 40151 और इंटरमीडिएट में 2698446 परीक्षार्थी पंजीकृत हैं। हालांकि नकल की सख्ती के चलते बड़ी संख्या में परीक्षार्थी परीक्षा भी छोड़ चुके हैं।

जीएसटी 2.0 को पूरी तरह सरल बनाना समय की मांग, कम दंडात्मक हो:कांग्रेस

नई दिल्ली। (भाषा) मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस ने रविवार को कहा कि जीएसटी में कोई भी बदलाव महज दरों में कमी से कहीं अधिक व्यापक होना चाहिए और वस्तु एवं सेवा कर के अगले चरण (जीएसटी 2.0) को पूरी तरह सरल तथा कम दंडात्मक बनाना चाहिए। गौरतलब है कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को कहा था कि जीएसटी दरों में और कमी की जाएगी। कांग्रेस महासचिव और संचार प्रभारी जयराम रमेश ने कहा कि उनकी पार्टी ने 2024 के लोकसभा चुनावों के अपने घोषणापत्र में जीएसटी 2.0 के जरिए एक अच्छे और सरल कर की परिकल्पना की थी। उन्होंने एक बयान में कहा, गेंद अब केंद्र सरकार के पाले में है - क्या वे इस ऐतिहासिक अवसर का लाभ उठाएंगे? रमेश ने कहा, वित्त मंत्री ने घोषणा की है कि जीएसटी दरों में जल्द ही कमी की जाएगी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दोहराती है कि जीएसटी में कोई भी बदलाव महज दर में कमी से कहीं अधिक व्यापक होना चाहिए। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि पॉपकॉर्न के लिए कर की तीन दरों वाली व्यवस्था में बुनियादी सुधार किए बिना सिर्फ कारमेल पॉपकॉर्न पर कर घटाना महज दिखावा है। पॉपकॉर्न में चीनी मिलाने से इसे कारमेल पॉपकॉर्न कहते हैं और इस पर 18 प्रतिशत की दर से जीएसटी लगता है। रमेश ने कहा कि समय की मांग है कि जीएसटी 2.0 को पूरी तरह सरल और कम दंडात्मक बनाया जाए। उन्होंने कहा, जीएसटी 2.0 का पहला लक्ष्य कर स्लैब को सरल बनाना होना चाहिए। पॉपकॉर्न के लिए तीन स्लैब वाली कर व्यवस्था और क्रीम बन तथा सामान्य बन के लिए अलग-अलग कर दरें तो बस एक छोटी सी झलक हैं। कांग्रेस नेता ने कहा कि नरेन्द्र मोदी सरकार के पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रमण्यम ने स्वीकार किया है कि वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) में उपकर सहित 100 से अधिक अलग-अलग दरें हैं। उन्होंने दावा किया, इस जटिलता के कारण व्यवसायों और सरकारी नौकरशाही पर अनुपालन का बोझ बढ़ गया है। दरों की अधिकता ने 2.01 लाख करोड़ रुपए की जीएसटी चोरी को बढ़ावा दिया है, जो वित्त वर्ष 2022-23 में दर्ज 1.01 लाख करोड़ रुपए की कर चोरी से लगभग दोगुना है। उन्होंने आगे कहा कि अब तक धोखाधड़ी करने वाली 18,000 फर्जी संस्थाओं का पता चला है, लेकिन वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक हो सकती है। रमेश ने कहा कि मौजूदा जीएसटी की जटिलता अच्छी और सरल कर व्यवस्था लागू करने के लिए सरकार की गंभीरता में कमी को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि हाल के महीनों में जीएसटी के कुल संग्रह में गिरावट का एक प्रमुख कारण अधिक रिफंड रहा है। उन्होंने कहा कि करदाताओं को दिए गए रिफंड में 45.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और इसका एक बड़ा हिस्सा धोखाधड़ीपूर्ण हो सकता है। जीएसटी प्रणाली की जटिलता के कारण बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी की आशंका बनी हुई है। कांग्रेस नेता ने कहा कि सरकार को कई प्रमुख वस्तुओं पर जीएसटी कम करना चाहिए, उदाहरण के लिए पाठ्यपुस्तकों, स्टेशनरी और स्कूल बैग आदि पर जीएसटी लगाया जाता है। कॉलेज द्वारा विश्वविद्यालय को दी जाने वाली संबद्धता फीस और दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों पर 18 प्रतिशत कर लगाया जाता है। रमेश ने कहा कि ए उच्च जीएसटी दरें केंद्र सरकार के कर राजस्व में बढ़ते असंतुलन को दर्शाती हैं, जहां प्रत्यक्ष करों की तुलना में जीएसटी जैसे प्रतिगामी अप्रत्यक्ष करों का अनुपात बढ़ता जा रहा है।

30लीटर कच्ची शराब व 100किलो लहन बरामद:सोनभद्र। अवैध मदिरा के निर्माण, बिक्री और तस्करी पर प्रभावी रोकथाम हेतु चलाए जा रहे विशेष प्रवर्तन अभियान के अंतर्गत रविवार को आबकारी निरीक्षक रविनंदन एवं अमित कुमार द्वारा थाना शाहगंज अंतर्गत दुगौलिया रामपुर एवं भट्ठा टोला' के अंतर्गत संदिग्ध घरों व स्थानों पर दबिश और छापेमारी की गई। इस दौरान लगभग 30लीटर अवैध कच्ची शराब और 100किलोग्राम लहन बरामद हुआ। लहन को मौके पर नष्ट करते हुए आबकारी अधिनियम की सुसंगत धाराओं में 02 अभियोग पंजीकृत किया गया।

पानी की टंकी साफ करते समय दम घुटने से चार मजदूरों की मौत

मुंबई। (भाषा)दक्षिण मुंबई में एक निर्माणाधीन इमारत में पानी की टंकी साफ करते समय रविवार को चार मजदूरों की दम घुटने से मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अधिकारियों ने इससे पहले मृतकों की संख्या पांच बताई थी। नगर निकाय के एक अधिकारी ने बताया, यह घटना नागपाड़ा इलाके में डिमटीमकर रोड पर स्थित बिस्मिल्लाह स्पेस बिल्डिंग में अपराह्न करीब 12.30 बजे हुई। पांच लोग टंकी की सफाई करने के लिए उसमें दाखिल हुए और बेहोश हो गए। उन्हें दमकल कर्मियों ने निकाला और जेजे अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने चार को मृत घोषित कर दिया। उन्होंने बताया कि मृतकों की पहचान हसीपाल शेख (19), राजा शेख (20), जियाउल्ला शेख (36) और इमांदु शेख (38) के रूप में की गई है, जबकि पांचवें व्यक्ति पुरहान शेख (31) का इलाज जारी है। जेजे पुलिस थाना के एक अधिकारी ने बताया कि एक दुर्घटनावश मृत्यु रिपोर्ट (एडीआर) दर्ज कर ली गई है और यह पता लगाने के लिए जांच की जा रही है कि जिन लोगों ने इन पांचों मजदूरों को काम पर रखा था, उनकी ओर से कोई चूक हुई थी या नहीं और क्या सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन किया गया था। पुलिस अधिकारी ने बताया कि जांच रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि जांच के लिए अग्निशमन सेवा, बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएएमसी) और पुलिस विभाग के कर्मी घटनास्थल पर मौजूद हैं।

नागपुर में पतंजलि फूड पार्क से विदर्भ के किसानों को राहत मिलेगी: गडकरी

नागपुर। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने रविवार को कहा कि नागपुर में नया पतंजलि फूड और हर्बल पार्क विदर्भ क्षेत्र के किसानों के लिए राहत लेकर आएगा। गौरतलब है कि इस क्षेत्र में किसान आत्महत्या की कई घटनाएं हुई हैं। गडकरी और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने नागपुर के मिहान में फूड पार्क का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पतंजलि आयुर्वेद के सह-संस्थापक रामदेव और इसके प्रबंध निदेशक आचार्य बालकृष्ण मौजूद थे। गडकरी ने विदर्भ में संतरा किसानों की भलाई के लिए उनके द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी दी। उन्होंने क्षेत्र में फलों के उत्पादन और गुणवत्ता में सुधार के साथ ही उपज की अच्छी कीमत सुनिश्चित करने के लिए किए गए उपायों के बारे में भी बताया। नागपुर लोकसभा सीट का प्रतिनिधित्व करने वाले गडकरी ने कहा, नया पार्क विदर्भ क्षेत्र के किसानों के लिए राहत लेकर आएगा, जहां किसानों की आत्महत्या के कई मामले सामने आए है। फडणवीस ने कहा, मुझे लगता है कि यह केंद्र (पार्क) न केवल इस परियोजना के लिए, बल्कि संतरा उगाने वाले सभी किसानों के लिए वरदान साबित होगा। फडणवीस ने कहा कि संयंत्र में फलों की छंटाई, ग्रेडिंग और भंडारण का काम किया जाएगा। साथ ही फलों का छिलके और बीज सहित पूरी तरह प्रसंस्करण किया जाएगा।

संभल में तेज आवाज में अजान होने पर मुकदमा दर्ज, पुलिस ने लाउड स्पीकर कब्जे में लिया

संभल। संभल के चंदौसी क्षेत्र में तेज आवाज में अजान होने पर पुलिस ने मस्जिद के इमाम के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लाउड स्पीकर को कब्जे में ले लिया है। पुलिस ने रविवार को बताया कि शनिवार को चंदौसी नगर के पंजाबीयान मोहल्ले की एक मस्जिद में मानक से अधिक ऊंची आवाज में लाउड स्पीकर से अजान दिए जाने की शिकायत मिली थी जिस पर मस्जिद के इमाम हाफिज शकील शम्सी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता और ध्वनि प्रदूषण (विनियमन व नियंत्रण) नियम की सुसंगत धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया। उसने बताया कि पुलिस ने लाउड स्पीकर को जब्त कर लिया है। विधिक कार्वाई जारी है।

।विधायक राजा भैया के खिलाफ दिल्ली में घरेलू हिंसा का मुकदमा दर्ज

नई दिल्ली।उत्तर प्रदेश के कुंडा से विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया के खिलाफ उनकी पत्नी भानवी सिंह की शिकायत के आधार पर घरेलू हिंसा का मामला दर्ज किया गया है। एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि राजा भैया के खिलाफ सात मार्च को दिल्ली के सफदरजंग एन्क्लेव पुलिस थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई। पुलिस के मुताबिक भानवी ने अपनी शिकायत में रघुराज पर कई साल तक शारीरिक और मानसिक शोषण करने का आरोप लगाया है। उसने बताया कि पति-पत्नी विगत कई सालों से अलग-अलग रह रहे हैं। पुलिस के मुताबिक भानवी ने अपनी सास सहित ससुराल वालों पर भी उत्पीड़न का आरोप लगाया है।पुलिस ने बताया कि शिकायतकर्ता ने शुरू में अपनी शादी को बचाने के लिए कानूनी कार्वाई से परहेज किया, लेकिन उत्पीड़न जारी रहने पर उसने आगे आने का फैसला किया। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है और मामले की आगे की जांच जारी है।

पेज 1 का शेष

ट्रॉफी...

कैच लपककर न्यूजीलैंड को सबसे करारा झटका दिया। न्यूजीलैंड ने 12 . 2 ओवर में 75 रन पर तीन विकेट गंवा दिए थे। भारत के चौतरफा स्पिन आक्रमण का कीवी टीम सामना नहीं कर सकी और अगली 81 गेंद में कोई चौका नहीं लगा। ग्लेन फिलिप्स ने कुलदीप को लांग आफ पर छक्का लगाकर इस दबदबे को तोड़ा। यदा कदा सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करने वाले कुलदीप और वरुण को पिच से काफी सहायता मिली। भारतीय स्पिनरों ने 38 ओवर डाले और सिर्फ 144 रन दिए। वरुण ने फिलिप्स को आउट करके पांचवें विकेट की 57 रन की साझेदारी तोड़ी। फिलिप्स उनकी गुगली का शिकार हुए। दूसरे छोर पर मिचेल इक्के दुक्के रन लेकर स्कोर को आगे बढाते रहे और 91 गेंद में अपना अर्धशतक पूरा किया। उन्होंने 46वें ओवर में शमी को दो चौके लगाए और ब्रेसवेल के साथ छठे विकेट के लिए 46 रन की साझेदारी भी की। शमी ने ही उन्हें पवेलियन भेजा और कवर्स में रोहित ने उनका कैच लपका। न्यूजीलैंड ने आखिरी पांच ओवरों में 50 रन बनाए।

कर्नाटक में...

दोनों महिलाओं का कोप्पल के एक सरकारी अस्पताल में इलाज चल रहा है। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार ने सोशल मीडिया पर इस घटना की निंदा की। सिद्धारमैया ने महिलाओं पर हमले को सबसे जघन्य कृत्य बताया। रविवार शाम को प्रेस में जाने के समय तक भी पुलिस तीसरे हमलावर को पकड़ नहीं पाई थी। पुलिस ने कहा कि गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों के नाम हांडी मल्ला (22) और चेतन साई (21) हैं। स्थानीय लोगों को इस घटना के समय से परेशानी है क्योंकि यह हम्पी में पर्यटन का मौसम माना जाता है, जिसमें भारत और विदेश से बहुत सारे पर्यटक आते हैं। बलात्कार और नशीली दवाओं के दुरुपयोग की बढ़ती संख्या के कारण टूर ऑपरेटर और पर्यटक केरल जाने से कतराते हैं, इसलिए हम्पी उनके लिए पसंदीदा गंतव्य है।

पुणे में...

घटना का वीडियो बना रहे एक व्यक्ति की ओर अश्लील इशारा करने के बाद तेजी से भाग जाता हैं। आहूजा और ओसवाल को यहां सत्र अदालत में पेश किया गया, जहां सरकारी अभियोजक ने सात दिन की पुलिस रिमांड मांगी ताकि यह जांच की जा सके कि दोनों ने कोई नशीला पदार्थ लिया था या नहीं।

द्विअर्थी...

के तुरंत बाद उठाया गया है। उनकी याचिका में विशेष रूप से गायक यो यो हनी सिंह के नवीनतम गीत, मेनियाक को निशाना बनाया गया है, जिसमें आपत्तिजनक सामग्री का हवाला दिया गया है। महिला दिवस के अवसर पर इस मुद्दे पर द पायनियर के लिए एक लेख लिखने वाली नीतू ने अदालत से उन भोजपुरी गीतों पर प्रतिबंध लगाने का भी आग्रह किया जो महिलाओं के प्रति घृणा को बढ़ावा देते हैं, उनका तर्क है कि उनके बोल अक्सर महिलाओं को वस्तु के रूप में पेश करते हैं और उनका अपमान करते हैं।

कठुआ...

मामा योगेश सिंह (32) और मामा दर्शन सिंह (40) के शव शनिवार को जिले के ऊंचे इलाकों में सुदूर मल्हार इलाके के ईशू नाले से मिले। तीनों 5 मार्च को लापता हो गए थे। एलजी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, मैंने पूरी तरह से पारदर्शी जांच के आदेश दिए हैं और परिवारों को सभी जरूरी सहायता मुहैया कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि तीनों की नृशंस हत्या से वह स्तब्ध और दुखी हैं। सिन्हा ने कहा, मैं लोगों को भरोसा दिलाता हूं कि अपराधियों को जल्द से जल्द सजा दिलाई जाएगी। न्याय सुनिश्चित किया जाएगा और जवाबदेही तय की जाएगी। उन्होंने मृतकों के परिवारों और दोस्तों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की। हालांकि, केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हत्याएं बहुत चिंता का विषय हैं। कठुआ जिले के बानी इलाके में आतंकवादियों द्वारा तीन युवकों की नृशंस हत्या बेहद दुखद और चिंता का विषय है। इस शांतिपूर्ण क्षेत्र में माहौल खराब करने के पीछे एक गहरी साजिश प्रतीत होती है। कठुआ को कवर करने वाले उधमपुर संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले मंत्री ने एक्स पर कहा, हमने संबंधित अधिकारियों के साथ इस मामले पर चर्चा की है। केंद्रीय गृह सचिव खुद जम्मू पहुंच रहे हैं ताकि मौके पर स्थिति का आकलन किया जा सके। उन्होंने कहा, 'मुझे विश्वास है कि यह सुनिश्चित किया जाएगा कि ऐसी घटनाएं दोबारा न हों और लोगों का विश्वास मजबूत बना रहे।' बिलावर में प्रदर्शनकारियों की एक सभा को संबोधित करते हुए स्थानीय भाजपा नेता गोपाल कृष्ण ने कहा, यह आतंकवादियों द्वारा लक्षित हत्याओं का एक स्पष्ट मामला है, जो शांतिपूर्ण क्षेत्र को भय और क्रोध में डुबो रहा है... हम चाहते हैं कि सरकार पिछले एक साल से जंगलों में छिपे आतंकवादियों को बेअसर करने के लिए जंगलों में आतंकवाद विरोधी अभियान तेज करे। उन्होंने कहा कि लोग आतंकवादियों को उनके मंसूबों में सफल नहीं होने देंगे और चुनिंदा हत्याओं को अंजाम देकर सांप्रदायिक सद्भाव को नुकसान नहीं पहुँचाने देंगे। मृतक परिवार से मिलने गए वरिष्ठ भाजपा नेता और बिलावर विधायक सतीश शर्मा ने कहा कि यह कहना जल्दबाजी होगी कि तीनों नागरिकों की हत्या किसने की। उन्होंने कहा, यह जांच का विषय है क्योंकि किसी ने नहीं देखा कि उन्हें कैसे मारा गया।

संसद के...

लिए कांग्रेस, डीएमके, शिवसेना-यूबीटी सहित अन्य विपक्षी दलों को भी एकजुट किया है। सरकार के लिए वक्फ संशोधन विधेयक को जल्द पारित कराना प्राथमिकता है।

मणिपुर..

सुरक्षा बलों की कार्रवाई का विरोध किया जा सके। आईटीएलएफ ने एक बयान में कहा, कल भारत सरकार द्वारा कुकी-जो क्षेत्रों के माध्यम से मीतेई लोगों की आवाजाही की अनुमति देने के फैसले के कारण कांगपोकपी में आंदोलन और विरोध हुआ... सुरक्षा बलों ने प्रदर्शनकारियों पर अत्यधिक बल का प्रयोग किया।

अमेरिका...

इस बीच, हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन ने सोशल मीडिया पर मंदिर के अपमान की तस्वीरें साझा कीं और संघीय जांच ब्यूरो के प्रमुख काश पटेल, राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड और चिनो हिल्स पुलिस विभाग से हमारे पवित्र स्थलों पर हिंदू विरोधी घृणा अपराधों की श्रृंखला में इस नवीनतम घटना की जांच करने का आह्वान किया। 25 सितंबर, 2024 को कैलिफोर्निया की राजधानी सैक्रामेंटो में बीएपीएस हिंदू मंदिर को अपशब्दों से भरे भित्तिचित्रों से अपवित्र किया गया, जिसमें लिखा था हिंदू वापस जाओ। सैक्रामेंटो की घटना से लगभग 10 दिन पहले, न्यूयॉर्क के मेलविले में एक और श्री स्वामीनारायण मंदिर को घृणित संदेशों से विरूपित किया गया था। न्यूयॉर्क में भारत के महावाणिज्य दूतावास ने इस घटना की कड़ी निंदा की और अमेरिकी अधिकारियों के समक्ष इस मामले को उठाया। पिछले साल मई में जारी कैलिफोर्निया नागरिक अधिकार विभाग की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि कैलिफोर्निया में हिंदू विरोधी घृणा अपराध धार्मिक पूर्वाग्रह का दूसरा सबसे अधिक रिपोर्ट किया जाने वाला रूप बन गया है। रिपोर्ट के अनुसार, धार्मिक रूप से प्रेरित घटनाओं में, हिंदू विरोधी पूर्वाग्रह दूसरे स्थान पर है, जो 23.3 प्रतिशत है। यहूदी विरोधी पूर्वाग्रह या यहूदी विरोधी भावना सबसे अधिक लगभग 37 प्रतिशत थी। मुस्लिम विरोधी घृणा अपराध तीसरे स्थान पर है, जिसमें धार्मिक पूर्वाग्रह की घटनाओं का 14.6 प्रतिशत शामिल है। इस बीच, कांग्रेस ने रविवार को कैलिफोर्निया में हिंदू मंदिर में तोड़फोड़ की निंदा की और कहा कि घृणा और असहिष्णुता के ऐसे कृत्य पूरी तरह अस्वीकार्य हैं। कांग्रेस के मीडिया और प्रचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने कहा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कैलिफोर्निया के चिनो हिल्स में बीएपीएस श्री स्वामीनारायण मंदिर में तोड़फोड़ की कड़े शब्दों में निंदा करती है।

राहुल की...

व्यवस्था की, जहाँ उनकी मुलाकात सुधीर राजभर से हुई, जो एक प्रसिद्ध चमड़ा उद्यमी और डिज़ाइन ब्रांड चमार स्टूडियो के संस्थापक हैं। रामचेत, जो पहले कभी हवाई जहाज़ नहीं चढ़ा था, के लिए यह अनुभव आँखें खोलने वाला था। रामचेत ने सुल्तानपुर में स्थानीय पत्रकारों से कहा, 'मैंने लकड़ी और रबर का उपयोग करके अभिनव जूते और बैग डिज़ाइन देखे। मैंने मशीन-आधारित क्राफ्टिंग तकनीकों के साथ भी प्रयोग किया। राहुल गांधी और सुधीर राजभर ने मुझे अपने कौशल को अगले स्तर तक ले जाने के लिए प्रोत्साहित किया।' तब से, रामचेत ने अपने काम का विस्तार किया है। उन्होंने कुछ कारीगरों के साथ एक छोटी सी कार्यशाला स्थापित की है और बेहतर औजारों में निवेश किया है। उनका बेटा, जिसे पहले इस व्यापार में कोई दिलचस्पी नहीं थी, अब हर दिन घंटों शिल्प सीखने में बिताता है। जो मोची कभी 100-150 रुपये प्रतिदिन कमाता था, अब हजारों में कमाता है और अपना खुद का ब्रांड बनाने का सपना देखता है। राहुल गांधी, जिन्होंने 6 मार्च को सोशल मीडिया पर अपनी मुलाकात को साझा किया, ने राजभर की सफलता की कहानी को दलित उद्यमिता और पारंपरिक कारीगरों की क्षमता का एक उदाहरण बताया, जब उन्हें अवसर दिए जाते हैं। रामचेत के लिए, सपना अब केवल अस्तित्व के बारे में नहीं है। अपने नए ब्रांड के आकार लेने के साथ, उन्हें उम्मीद है कि अन्य स्थानीय कारीगरों को अपने शिल्प पर विश्वास करने और कुछ बड़ा करने का प्रयास करने के लिए प्रेरित करेंगे।

नीतीश ने चयनित करीब 50 हजार शिक्षकों को नियुक्ति पत्र सौंपे

भाषा। पटना

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने रविवार को चयनित 51,389 शिक्षकों को नियुक्ति पत्र सौंपे। इन शिक्षकों की भर्ती बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) द्वारा शिक्षक भर्ती परीक्षा (टीआरई-3) के तीसरे चरण के तहत की गई है। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि तीन चरणों में भर्ती किए गए 2,68,548 शिक्षकों के अलावा, 42,918 अभ्यार्थियों ने प्रधानाध्यापकों की परीक्षा उत्तीर्ण की है और उन्हें अगले महीने नियुक्ति पत्र मिल जाएंगे। उन्होंने कहा, इसके अलावा पूर्व में पहले पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों द्वारा नियुक्त 2,53,961 शिक्षकों ने भी सरकारी कर्मचारी का दर्जा पाने के लिए योग्यता परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है। कुमार ने कहा, अब राज्य में सरकारी शिक्षकों की कुल संख्या 5,65,427 हो जाएगी। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार राज्य में शिक्षा क्षेत्र के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए सभी कदम उठा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा, राज्य बजट में शिक्षा का हिस्सा 22 प्रतिशत तक पहुंच गया है, और इसे और बढ़ाया जाएगा। शुरुआत से ही शिक्षा, खासकर लड़कियों की शिक्षा राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने कहा कि इन शिक्षकों की नियुक्ति की प्रक्रिया पूर्ववर्ती महागठबंधन सरकार के दौरान शुरू हुई थी। तेजस्वी यादव राज्य सरकार की नौकरियों में पिछड़े समुदायों के लिए 65 प्रतिशत आरक्षण लागू करने की मांग को लेकर राष्ट्रीय जनता दल (राजद) द्वारा आयोजित विरोध प्रदर्शन के अवसर पर संवाददाताओं से बात कर रहे थे। उन्होंने कहा, हमारी मांग है कि एससी (अनुसूचित जाति), एसटी (अनुसूचित जनजाति) और पिछड़े वर्गों (ओबीसी)के लिए आरक्षण 65 प्रतिशत तक बहाल की जाए। पिछली महागठबंधन सरकार ने जाति सर्वेक्षण के आलोक में वंचित जातियों के लिए कोटा 50 प्रतिशत से बढ़ाकर 65 प्रतिशत कर दिया था, जिससे कुल आरक्षण 75 प्रतिशत हो गया। हालांकि, पूरा मामला भाजपा और जदयू की वजह से कानूनी लड़ाई में उलझ गया। राजद नेता ने कहा, नीतीश कुमार आरक्षण चोर हैं। आज उन्होंने उन शिक्षकों को नियुक्ति पत्र बांटे, जिनकी नियुक्ति प्रक्रिया पिछली महागठबंधन सरकार के दौरान शुरू हुई थी। टीआरई-3 नियुक्तियों में आरक्षण लागू न होने से इन समुदायों के हजारों उम्मीदवार अवसर से वंचित हो गए।

बांसवाड़ा के गांव में चर्च को हिंदू मंदिर बनाया गया

● ग्रामीण भी स्वेच्छा से हिंदू धर्म में लौटे

भाषा। जयपुर

राजस्थान के आदिवासी बहुल बांसवाड़ा जिले के एक गांव में रविवार को एक चर्च को हिंदू मंदिर में बदल दिया गया और वहां एक हिंदू देवता की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा भी कर दी गई। इसके साथ ही सालों पहले ईसाई धर्म को अपनाने वाले गांव के लोग भी हिंदू धर्म में वापस आ गए। बांसवाड़ा के पुलिस अधीक्षक हर्षवर्धन के अनुसार, चर्च का पादरी गौतम गरासिया अब मंदिर का पुजारी होगा। उन्होंने बताया कि उसने सालों पहले ईसाई धर्म अपना लिया था और गांगड़तलाई क्षेत्र के सोडला गुदा गांव में चर्च का निर्माण कराया था। पुलिस अधीक्षक ने बताया, करीब डेढ़ साल पहले उसने अपनी निजी जमीन पर चर्च बनवाया था। आज उसने कहा कि हिंदू धर्म में लौटने के बाद उसकी निजी जमीन पर निर्मित ढांचा भी अब मंदिर बन गया है। जिला मुख्यालय से करीब 70 किलोमीटर दूर स्थित गांव के निवासी गरासिया ने कहा कि उसके गांव के अधिकतर लोगों ने ईसाई धर्म अपनाया था लेकिन अब वे अपनी इच्छानुसार हिंदू धर्म में लौट आए हैं। उसने बताया कि रविवार को मंदिर में भगवान भैरव की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व जय श्री राम के नारों के साथ मूर्ति को सिर पर रखकर एक जुलूस भी निकाला गया। गरासिया ने कहा कि गांव वालों के हिंदू धर्म में लौटने के बाद उन्होंने सर्वसम्मति से चर्च को भैरव मंदिर में तब्दील करने का फैसला किया और उसके बाद ढांचे को गेरूए रंग में रंग दिया गया। साथ ही उसके ऊपर लगा क्रास भी हटा दिया गया। दीवारों पर हिंदू धार्मिक प्रतीक भी चित्रित किए गए। इस दौरान इलाके में पुलिस बल को भी तैनात किया गया था। गौतम गरासिया ने कहा कि अब से रविवार की प्रार्थना के बजाय मंदिर में हर सुबह और शाम भगवान भैरव की आरती होगी।

भारत विरोधी नाराः परिवार ने कहा कि किशोर मदरसे में पढ़ाई करता था, क्रिकेट में नहीं उसकी रुचि

मुंबई। महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले में एक क्रिकेट मैच के दौरान भारत विरोधी नारे लगाने के आरोपी 15 वर्षीय किशोर और उसके परिवार पर मामला दर्ज होने के कुछ सप्ताह बाद, उन्होने दावा किया है कि किशोर पढ़ाई के लिए मदरसे में जाता था और उसकी क्रिकेट खेलने या मैच देखने में कोई रुचि नही थी। मालवण के तारकर्ली रोड इलाके में 23 फरवरी को भारत-पाकिस्तान क्रिकेट मैच के दौरान कथित तौर पर भारत विरोधी नारे लगाने को लेकर लड़के, उसके पिता (जो कबाड़ के कारोबारी है) और उसकी मां के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई गई थी।मामले मे दंपति को गिरफ्तार किया गया था और किशोर को किशोर न्याय बोर्ड के समक्ष पेश किया गया।घटना के कुछ दिन बाद नगर निगम प्रशासन ने परिवार की दुकान और घर को अनधिकृत संरचना बताकर ध्वस्त कर दिया। स्थानीय लोगों की शिकायत के बाद आरोपी कबाड़ व्यापारी के भाई का गोदाम भी ध्वस्त कर दिया गया और भूस्वामी को नोटिस जारी किया गया। मूल रूप से उत्तर प्रदेश के रहने वाले परिवार ने आरोप लगाया है कि कुछ लोगों ने उनके बेटे को फंसाने के लिए कुछ खास शब्दो का इस्तेमाल कर उसे बातचीत में उलझा लिया था।सिंधुदुर्ग के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया कि मामले की जांच चल रही है, लेकिन उनके पास किशोर द्वारा लगाए गए नारे का कोई ऑडियो या वीडियो क्लिप नही है। मामले की जांच कर रहे एक अन्य अधिकारी ने बताया कि आरोपी जमानत पर है और पुलिस जल्द ही मामले मे आरोपपत्र दाखिल करेगी।आरोपी किशोर ने पीटीआई-भाषा को बताया कि उस कथित घटना के बाद उसकी जिंदगी में बुरा दौर शुरू हो गया। उसने बताया कि वह एक मस्जिद मे रात की नमाज अदा करने के बाद घर लौट रहा था, तभी एक व्यक्ति ने उसे रोकने की कोशिश की और उसका नाम पूछा।किशोरी ने कहा, शुरू मे मैंने डर के कारण गलत नाम बताकर उससे बचने की कोशिश की, लेकिन उस आदमी ने मुझे फिर रोका और पूछा कि क्या मैने क्रिकेट मैच देखा है। मैने उससे कहा कि मै क्रिकेट मैच नही देखता, क्योकि मेरे पास समय नही है और न ही रुचि है। लड़के ने दावा किया कि उस व्यक्ति ने उससे पूछा कि वह भारत-पाकिस्तान मैच के दौरान किस टीम का समर्थन करेगा इसके जवाब मे उसने कहा कि वह भारत को चुनेगा। किशोर ने दावा किया, उस व्यक्ति ने हंगामा खड़ा कर दिया और पीछे खड़े एक अन्य व्यक्ति को बुलाया और दावा किया कि मैने भारत विरोधी नारा लगाया है। उन्होंने मुझे दो-तीन थप्पड़ मारे। किशोर ने बताया कि वे मेरे पिता से मिलने के लिए साथ ही घर आए जो उस समय वहां मौजूद नही थे। उसने दावा किया कि जल्द ही घर के बाहर लोग इकट्ठा हो गए और उन लोगों और उसके माता-पिता के बीच हाथापाई शुरू हो गई। जो लोग पहले उससे बहस कर रहे थे, वे हंस रहे थे।मामले में गिरफ्तार किए नाबालिग के 38 वर्षीय पिता ने कहा कि उनका बेटा निर्दोष है।उन्होने दावा किया, उसे क्रिकेट मे कोई रुचि नहीं है और वह मैच भी नही देखता। दो लोगों ने जानबूझकर ऐसा किया और यह हमे परेशान करने की पूर्व नियोजित चाल थी। पिता के मुताबिक उनका बेटा मदरसे में पढ़ता है और उसे छुट्टियां भी नही मिलती।उन्होंने कहा, मैं अपने भाई-बहनों के साथ 20 साल से अधिक समय से मालवण में रह रहा हूं। हम केवल अपने परिवार और कबाड़ के कारोबार में ही शामिल हैं और किसी विवाद में नही पड़ते। उन्होंने आरोप लगाया कि दो लोग पहले उनके घर आए और शिकायत की कि उनके बेटे ने भारत विरोधी नारे लगाए हैं और उन्होंने उसकी पिटाई कर दी।आरोपी के पिता ने बताया कि बाद मे कुछ अन्य लोग आए और उनसे मामले को न बढ़ाने को कहा और वे वहां से चले गए।उन्होंने कहा, कुछ समय बाद 30-35 से अधिक लोग मेरे घर आए और हमें पीटना शुरू कर दिया। यह सच है कि जब कुछ लोगों ने हमारे बेटे को पीटना शुरू किया तो जवाबी कार्वाई मे मेरी पत्नी ने प्लास्टिक की कुर्सी उठा ली, लेकिन उसने किसी को नही मारा और हाथापाई के दौरान उसे धक्का लग गया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट्स के साथ मनाया जश्न

लखनऊ। एयरटेल पेमेंट्स भारत में बैंकिंग की उपलब्धता बढ़ाने और सभी लोगों को बैंकिंग के दायरे में लाने के लिए प्रतिबद्ध है। इस मिशन में महिलाओं की अहम भूमिका है और बैंक यह सुनिश्चित करता है कि उनका देशभर में वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने में अहम सहयोग रहे। इस अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस परए एयरटेल पेमेंट्स बैंक महिलाओं की इसी अहम भूमिका का जश्न मना रहा हैए जो वित्तीय सेवाओं को बढ़ाने में मदद कर रही हैं। खासतौर पर महिला बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट्स जिन्होंने बैंकिंग और वंचित समुदायों के बीच की दूरी को कम करने में अहम योगदान दिया है। बैंक ने लखनऊ में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में उतार प्रदेश की बेहतरीन महिला बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट्स को सम्मानित किया जो अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में सुश्री निक्की झाए असिस्टेंट लेबर कमीशनर उत्तर प्रदेश और सुश्री सोनाली दासए जनरल मैनेजर वित्तीय समावेशन एवं विकास विभागए भारतीय रिज़र्व बैंक, लखनऊ, ने अपनी प्रेरणादायक उपस्थिति और उत्साहवर्धक शब्दों से बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट्स के हौसलों को बुलंद किया। पिछले कुछ वर्षों मेंए एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने अपने 5 लाख से ज्यादा बैंकिंग पॉइंट्स के साथ देश के सबसे दूर.दराज के ग्रामीण इलाकों तक बैंकिंग सेवाएं पहुंचाई हैं। इन बैंकिंग पॉइंट्स को बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट्स द्वारा संचालित किया जाता है,जिन्हें बैंकिंग सेवाएं देने के लिए प्रशिक्षित कर अधिकार दिया जाता है। उतार प्रदेश मेंए बैंक 127,000 से भी ज़्यादा बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट्स के साथ काम कर रहा है, जिनमें से लगभग 21,500 से भी ज्यादा महिलाएं हैं। इनमें से 80 प्रतिशत से ज़्यादा महिला बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट्स ऐसे क्षेत्रों में काम कर रही हैं जहां बैंकिंग सुविधाएं बहुत कम या ना के बराबर हैं। शिल्पी कपूर चीफमार्केटिंग ऑफिसर एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने बताया कि एयरटेल पेमेंट्स बैंक म हम मानते हैं कि वित्तीय समावेशन सिर्फबैंकिंग सेवाओं को लोगों तक पहुंचना नहीं है, बल्कि यह लोगों के जीवन में बेहतरीन बदलाव लाने का एक बहुत बड़ा जरिया है। हमारी महिला बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट्स इस बदलाव की अगुवाई कर रही हैंए जो जरूरतमंद समुदायों तक बैंकिंग सेवाएं पहुंचाने और जमीनी स्तर पर भरोसा बनाने का काम कर रही हैं। इस अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 100,000 से अधिक महिला बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट्स के साथए हमें उनकी उपलब्धियों का जश्न मनाने और उनकी कहानियों को सामने लाने पर बहुत गर्व है।

मैट केयर देगा महिला और शिशु स्वास्थ्य सेवाएं

वाराणसी। महिला और शिशु स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए मैट केयर ने वाराणसी के महमूरगंज में अपना पहला मातृत्व एवं शिशु अस्पताल शुरू किया है। यह हॉस्पिटल उन्नत सुविधाओं, विशेषज्ञ चिकित्सकों और नवजात शिशुओं के लिए विशेष देखभाल सेवाओं से सुसज्जित है, जो गर्भवती महिलाओं,नवजात शिशुओं और हाई रिस्क प्रेगनेंसी के मामलों में संपूर्ण चिकित्सा सेवाएं प्रदान करेगा। हॉस्पिटल का उद्घाटन वाराणसी के महापौर अशोक तिवारी आईवीएफस्पेशलिस्ट एवं इन्दिरा आईवीएफसेन्ट्रल जोन क्लस्टर बिजनेस डायरेक्टर डा. आर वी सिंह ओबेट्रिक्स एंड गायनेकोलॉजी मैट केयर सेंटर हेड डॉ. सुनील यादव और पीडियाट्रिक्स और नियोनेटोलॉजी मैट केयर की हेड डॉ. निमिषा सिंह ने किया। इन विशिष्टजनों की उपस्थिति ने क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच बढ़ाने में इस पहल को महत्वपूर्ण बताया। इस मौके पर इन्दिरा आईवीएफके पूर्णकालिक निदेशक और सीईओ डॉ. क्षितिज मुर्डिया ने कहा कि मैट केयर का पहला मेटरनिटी एण्ड चाइल्स हॉस्पिटल, मेटरनिटी एवं नवजात शिशु चिकित्सा व देखभाल के क्षेत्र में एक मील का पत्थर है। आईवीएफस्पेशलिस्ट एवं इन्दिरा आईवीएफसेन्ट्रल जोन क्लस्टर बिजनेस डायरेक्टर डॉन् आर वी सिंह ने कहा कि वाराणसी में गुणवत्तापूर्ण मेटरनिटी और नवजात देखभाल की जरूरत बढ़ती जा रही है। वाराणसी के मेयर अशोक तिवारी ने मैट केयर द्वारा उठाए गए इस महत्वपूर्ण कदम की सराहना कीए मैट केयर के प्रयास न केवल वाराणसी में मातृत्व और शिशु स्वास्थ्य सेवाओं में एक नया आयाम जोड़ेंगे बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश में भी।

अमेरिका में हिंदू मंदिर को अपवित्र करने की घटना की योग गुरु रामदेव ने की निंदा

नागपुर। पतंजलि आयुर्वेद के सह-संस्थापक एवं योग गुरु रामदेव ने कैलिफोर्निया मे एक हिंदू मंदिर को विरूपित करने की घटना की निंदा करते हुए रविवार को कहा कि भारत को धार्मिक आतंकवाद पर अंकुश लगाने के लिए पहल करनी चाहिए।रामदेव ने यहां एक कार्यक्रम से इतर संवाददाताओ से कहा कि मराठा राजा छत्रपति शिवाजी महाराज लोगो के आदर्श है, न कि मुगल सम्राट औरंगजेब। कैलिफोर्निया मे एक प्रमुख हिंदू मंदिर को कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने विरूपित किया और दीवारो पर भारत विरोधी नारे लिख दिए। यह अमेरिका मे समुदाय के पवित्र स्थलो को निशाना बनाने की एक नई घटना है। बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बीएपीएस) ने कहा कि सैन बर्नार्डिनो काउंटी के चीनो हिल्स शहर मे स्थित उसके श्री स्वामीनारायण मंदिर को अपवित्र किया गया। चीनो हिल्स लॉस एंजिलिस काउंटी की सीमा पर है।भारत ने रविवार को इस घटना की कड़ी निंदा की और इसमे शामिल लोगो के खिलाफ कड़ी कार्वाई की मांग की। नई दिल्ली ने घटना के मद्देनजर पूजा स्थलो की पर्याप्त सुरक्षा की भी मांग की।रामदेव ने इस घटना के बारे में पूछे जाने पर कहा कि जिस तरह से यूरोप, अमेरिका और ब्रिटेन मे धार्मिक आतंकवादियो द्वारा सनातन धर्म को निशाना बनाया जा रहा है, वह बेहद शर्मनाक है।उन्होने कहा, इस धार्मिक आतंकवाद से पूरी दुनिया पीड़ित है। विभिन्न देशो के प्रमुखो को इससे बाहर निकलने का रास्ता तलाशने की जरूरत है और भारत को इसके लिए पहल करनी चाहिए। रामदेव ने औरंगजेब से संबंधित एक अन्य सवाल के जवाब मे कहा कि मुगल बादशाह भारत के लोगो के लिए आदर्श नही हो सकता।उन्होंने कहा, वह लुटेरो के परिवार से था। चाहे बाबर हो या उसका परिवार, वे भारत को लूटने आए थे। उन्होंने हमारी हजारो महिलाओ पर अत्याचार किया। वे हमारे आदर्श नही हो सकते... छत्रपति शिवाजी महाराज हमारे आदर्श है। पतंजलि के सह संस्थापक ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की शुल्क नीति के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब मे दावा किया कि यह एक तरह का आर्थिक आतंकवाद और शुल्क आतंकवाद है और यह दुनिया को एक अलग युग मे ले जा रहा है।उन्होने कहा कि विश्व मे बन रहे खतरनाक हालात के बीच, हमे भारत को शक्तिशाली और विकसित बनाने की जरूरत है, क्योकि कुछ शक्तिशाली देश विश्व को विनाश की ओर ले जाना चाहते है। रामदेव नागपुर के मिहान में पतंजलि फूड एवं हर्बल पार्क के उद्घाटन के अवसर पर संवाददाताओ से बातचीत कर रहे थे।

राज ठाकरे ने गंगा की सफाई पर उठाए सवाल

पुणे। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख राज ठाकरे ने गंगा नदी की स्वच्छता पर शनिवार को सवाल उठाए और आरोप लगाया कि देश की कोई भी नदी साफ नही है। ठाकरे ने मनसे की स्थापना के 19 साल पूरे होने के मौके पर आयोजित एक कार्यक्रम मे यह टिप्पणी की। मनसे प्रमुख ने कहा कि उनकी पार्टी के नेता बाला नंदगांवकर महाकुंभ से पवित्र जल लेकर आए थे, लेकिन उन्होंने इसे पीने से इनकार कर दिया।राज ठाकरे ने कहा, मैने गंगा नदी की स्थिति के बारे मे सोशल मीडिया पर कई वीडियो देखे है। मैने कुछ लोगों को नदी मे अपना शरीर खुजलाते और स्नान करते भी देखा। उन्होने दावा किया कि कोई भी नदी साफ नही है। ठाकरे ने कहा, जब राजीव गांधी प्रधानमंत्री थे तब से ही मै यह दावा सुनता आ रहा हूं कि गंगा जल्द ही साफ हो जाएगी। अब इस मिथक से बाहर आने का समय आ गया है।

रमजान के दौरान गुलमर्ग में आयोजित फैशन शो की आलोचना

श्रीनगर। रमजान के महीने मे शीतकालीन पर्यटन स्थल गुलमर्ग मे आयोजित फैशन शो की व्यापक आलोचना हुई है। कश्मीर के मीरवाइज उमर फारूक ने कहा है कि पर्यटन को बढ़ावा देने के नाम पर अश्लीलता बर्दाश्त नही की जाएगी। फारूक ने एक्स पर एक पोस्ट मे कहा, यह बेहद शर्मनाक हैउ रमजान के पवित्र महीने मे गुलमर्ग मे एक अश्लील फैशन शो आयोजित किया गया, जिसकी तस्वीरे और वीडियो वायरल हुए है, जिससे लोगो मे नाराजगी है। सूफी संत संस्कृति और लोगो के गहरे धार्मिक दृष्टिकोण के लिए जानी जाने वाली घाटी मे इसे कैसे बर्दाश्त किया जा सकता है? उन्होने कहा कि इस कार्यक्रम के आयोजन मे शामिल लोगों को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। मीरवाइज ने कहा, इसमे शामिल लोगो को तुरंत जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। पर्यटन को बढ़ावा देने के नाम पर इस तरह की अश्लीलता कश्मीर मे बर्दाश्त नही की जाएगी। सामाजिक कार्यकर्ता राजा मुजफ्फर भट ने इस कार्यक्रम को कश्मीर के नैतिक और धार्मिक मूल्यों को नष्ट करने का प्रयास बताया।

अमेजन इंडिया ने होली स्टोर के साथ शुरू करें की खरीदारी

मुंबई। अमेजन इंडिया के होली स्टोर के साथ होली की खरीदारी की शुरुआत करें जो उत्पादों के व्यापक चयन के साथ लाइव हो चुका है। उपभोक्ता पारंपरिक परिधान और ऑर्गेनिक गुलाल, गुझिया जैसी त्योहारी मिठाइयां, अत्याधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स और आधुनिक उपकरण, प्रीमियम स्किनकेयर उत्पाद और सुरुचिपूर्ण घरेलू सजावट का सामान खरीद सकते हैं। त्योहार की तैयारियों के लिए बेजोड़ मूल्य सुनिश्चित करते हुए सभी श्रेणियों में रोमांचक डील्स उपलब्ध कराई गई हैं। होली की खरीदारी के लिए आपके अनुभव को और बेहतर बनाने के लिए अमेजन का एआई.संचालित शॉपिंग सहायक. रूफसए आपको व्यक्तिगत अनुशंसाओं और त्वरित उत्तर के साथ त्योहार के लिए जरूरी वस्तुएं खोजने में मदद करेगा। बस आप रूफस से बेहतर गुलालए वाटर गन या पार्टी सजावट के बारे में पूछें और अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर सुझाव प्राप्त करें। रूफस त्योहारी शॉपिंग को अधिक सहज और मजेदार बनाने के लिए अमेजन की निरंतर बनी रहने वाली प्रतिबद्धता का एक हिस्सा है। यह स्टोर 14 माच 2025 तक लाइव रहेगा।

मुसलमानों को सड़कों पर उतरने को मजबूर किया जा रहा : मदनी

भाषा। नई दिल्ली

जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने रविवार को ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और अन्य संगठनों द्वारा वक्फ (संशोधन) विधेयक के खिलाफ आहूत विरोध प्रदर्शन को समर्थन देते हुए दावा किया कि मुसलमानों को उनके अधिकारों को पुनः प्राप्त करने के लिए सड़कों पर उतरने के लिए मजबूर किया जा रहा है। जमीयत प्रमुख मौलाना अरशद मदनी ने कहा कि 12 फरवरी, 2025 को संगठन की कार्यसमिति की बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि यदि विधेयक पारित होता है, तो जमीयत उलेमा-ए-हिंद की सभी राज्य इकाइयां अपने-अपने राज्य के उच्च न्यायालयों में इस कानून को चुनौती देंगी। उन्होंने कहा कि इसके अलावा, जमीयत इस विश्वास के साथ उच्चतम न्यायालय का भी दरवाजा खटखटाएगी कि न्याय मिलेगा, क्योंकि अदालत हमारे लिए अंतिम सहारा है। उन्होंने 13 मार्च को यहां जंतर-मंतर पर प्रस्तावित ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और अन्य राष्ट्रीय संगठनों के विरोध प्रदर्शन का समर्थन करते हुए कहा कि मुसलमानों को उनके अधिकारों के लिए सड़कों पर उतरने के लिए मजबूर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पिछले 12 वर्षों से मुसलमानों ने बहुत धैर्य और सहनशीलता का परिचय दिया है। मदनी ने एक बयान में कहा, हालांकि, अब जब वक्फ संपत्तियों के बारे में मुसलमानों की चिंताओं की अनदेखी की जा रही है और एक असंवैधानिक कानून जबरन थोपा जा रहा है, तो विरोध करने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है। उन्होंने कहा कि अपने धार्मिक अधिकारों के लिए शांतिपूर्ण प्रदर्शन करना देश के हर नागरिक का लोकतांत्रिक अधिकार है। जमीयत प्रमुख ने कहा कि वक्फ (संशोधन) विधेयक पेश किए जाने के बाद से, हम सरकार को यह समझाने के लिए लोकतांत्रिक तरीके से हर संभव प्रयास कर रहे हैं कि वक्फ पूरी तरह से धार्मिक मामला है। उन्होंने कहा, वक्फ संपत्तियां हमारे पूर्वजों द्वारा समुदाय के कल्याण के लिए दिए गए दान हैं और इसलिए हम उनमें किसी भी सरकारी हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं कर सकते। उन्होंने आरोप लगाया, मुसलमान अपने शरीयत से बिल्कुल भी समझौता नहीं कर सकते, क्योंकि यह उनके अधिकारों का मामला है, न कि केवल उनके अस्तित्व का। मौजूदा सरकार एक नया वक्फ संशोधन अधिनियम लाकर देश के संविधान द्वारा मुसलमानों को दिए गए अधिकारों को छीनना चाहती है। मदनी ने आरोप लगाया, हम संविधान द्वारा हमें दिए गए अधिकारों और शक्तियों को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रदर्शन करने वाले हैं। वक्फ संशोधन विधेयक जैसे कानून लाकर इन संवैधानिक अधिकारों का हनन करने का प्रयास किया जा रहा है। मौलाना मदनी ने कहा कि जमीयत ने सरकार में शामिल उन दलों को, जो खुद को धर्मनिरपेक्ष कहते हैं और जिनकी सफलता में मुसलमानों की भी भूमिका रही है, यह समझाने का प्रयास किया है कि जो कुछ हो रहा है वह बहुत गलत है।

बोफोर्स मामला : पत्रकार ने सबूतों के डिब्बे में से मिली जानकारी को सार्वजनिक करने की मांग की

भाषा। नई दिल्ली

पत्रकार और लेखिका चित्रा सुब्रमण्यम ने केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) से मांग की है कि वह बोफोर्स कांड में रिश्वत के संबंध में स्विट्जरलैंड से प्राप्त सबूतों के डिब्बे से मिली जानकारी को सार्वजनिक करे, जिसके बारे में पूर्व अधिकारियों ने कहा है कि इसका इस्तेमाल जांच में किया गया था और आरोपपत्र में साक्ष्य के रूप में अदालत के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। पीटीआई-भाषा के साथ एक विशेष साक्षात्कार में बोफोर्सगेट: ए जर्नलिस्ट्स परस्यूट ऑफ ट्रुथ की लेखिका सुब्रमण्यम ने कहा, हमें बताया जाना चाहिए कि डिब्बा किसने खोला, कब खोला गया, डिब्बे में क्या था? उन्होंने यह भी आश्चर्य जताया कि क्या सौदे में कमीशन 18 प्रतिशत था, जैसा कि स्वीडन की फर्म बोफोर्स द्वारा भारत सरकार को दिए गए सबूतों से पता चलता है। सुब्रमण्यम ने कहा, दूसरी बात, उस समय रक्षा मंत्री रहे जॉर्ज फर्नांडीज ने 1999 के अंत में मुझे यह क्यों बताया कि उन्हें बृजेश मिश्रा ने डिब्बा न खोलने के लिए कहा था? इस मुद्दे पर अपने रुख पर अडिग रहीं सुब्रमण्यम ने कहा, सीबीआई वही कह रही है जो उसे कहना है। मुझे वही कहना है जो मुझे कहना है। राजस्थान पुलिस के पूर्व महानिदेशक ओ पी गलहोत्रा, जिन्होंने सीबीआई में अपने कार्यकाल के दौरान बोफोर्स मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, ने कहा कि एजेंसी ने स्विट्जरलैंड से प्राप्त दस्तावेजों के आधार पर आरोप पत्र दाखिल किया। उन्होंने पीटीआई-भाषा के सवालों के जवाब में कहा, यह समझना महत्वपूर्ण है कि इन दस्तावेजों को स्विट्जरलैंड की अदालत से भारतीय अदालत को सौंपा गया था, और निर्दिष्ट अदालत के निर्देश पर (सबूतों के) डिब्बे खोले गए थे। गलहोत्रा ने कहा, डिब्बे खोले गए, और हर चीज की जांच की गई। वास्तव में, दस्तावेज महत्वपूर्ण अ्रौर संवेदनशील थे जिसके कारण एजेंसी को पूरक आरोप पत्र दाखिल करना पड़ा। इस विषय पर हाल ही में लिखी गई किताब की लेखिका के बारे में चर्चा करने से इनकार करते हुए गलहोत्रा ने इस बात पर जोर दिया कि जांचकर्ता अदालतों के प्रति जवाबदेह हैं। उन्होंने कहा, आरोप पत्र अदालत में दाखिल किया जाता है और इसे एक सार्वजनिक दस्तावेज माना जाता है। वर्ष 1985 बैच के आईपीएस अधिकारी गलहोत्रा 1996 से 2004 तक और बाद में 2008 से 2015 तक सीबीआई में तैनात रहे।

महाकुंभ के दौरान पानी की गुणवत्ता स्नान के लिए उपयुक्त थी : सीपीसीबी

भाषा। नई दिल्ली

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) ने राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी)को सौंपी अपनी नई रिपोर्ट में कहा गया है कि सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार प्रयागराज में हाल ही में संपन्न महाकुंभ के दौरान पानी की गुणवत्ता स्नान के लिए उपयुक्त थी। सीपीसीबी की रिपोर्ट में कहा गया है कि सांख्यिकीय विश्लेषण इसलिए आवश्यक था क्योंकि एक ही स्थान से अलग-अलग तिथियों और एक ही दिन में अलग-अलग स्थानों से एकत्र किए गए नमूनों में आंकड़ों की भिन्नता थी, जिसके कारण ए नदी क्षेत्र में समग्र नदी जल की गुणवत्ता को प्रतिबिंबित नहीं करते थे। बोर्ड की 28 फरवरी की तारीख वाली इस रिपोर्ट को सात मार्च को एनजीटी की वेबसाइट पर अपलोड किया गया। बोर्ड ने 12 जनवरी से लेकर अब तक प्रति सप्ताह दो बार, जिसमें स्नान के शुभ दिन भी शामिल हैं, गंगा नदी पर पांच स्थानों तथा यमुना नदी पर दो स्थानों पर जल निगरानी की है। रिपोर्ट में कहा गया है, विभिन्न तिथियों पर एक ही स्थान से लिए गए नमूनों के लिए विभिन्न मापदंडों जैसे पीएच, घुलित ऑक्सीजन (डीओ), जैव रासायनिक ऑक्सीजन मांग (बीओडी) और फीकल कोलीफॉर्म काउंट (एफसी) के परिमाण में अहम बदलाव देखे गए है। एक ही दिन एकत्र किए गए नमूनों के लिए उपर्युक्त मापदंडों के परिमाण भी अलग-अलग स्थानों पर भिन्न होते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक जल में ऑक्सीजन की मात्रा या डीओ, जल में कार्बनिक पदार्थों को खंडित करने के लिए आवश्यक ऑक्सीजन की मात्रा को मापता बीओडी, तथा सीवेज संदूषण का सूचक एफसी जल की गुणवत्ता के प्रमुख संकेतक हैं।

जलवायु परिवर्तन और प्रबल हो रहा, तापमान में ला नीना शायद ही प्रभावी हो : वैज्ञानिक

भाषा। नई दिल्ली

वैज्ञानिकों ने आगाह करते हुए कहा है कि जलवायु परिवर्तन अधिक तेजी और प्रबल तरीके से हो रहा है और भविष्य में बढ़ते तापमान की वजह से बहुत संभव है कि शीतलन का कार्य करने वाली धारा ला नीना प्रभावी नहीं हो। वैज्ञानिकों ने देश के बड़े हिस्से में वर्तमान गर्मी की प्रवृत्ति का आकलन करते हुए यह चेतावनी दी है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने इस वर्ष समय से पहले गर्मी पड़ने, सामान्य से अधिक तापमान तथा तीव्र व लंबे समय तक लू चलने की भविष्यवाणी की है।आईएमडी के मुताबिक देश में 1901 के बाद से इस साल सबसे गर्म फरवरी दर्ज किया गया और 2001 के बाद से पिछले महीने पांचवीं सबसे कम वर्षा हुई।वैज्ञानिकों ने कहा कि मानव-जनित जलवायु परिवर्तन तेजी से गर्म सर्दियों और छोटे वसंत द्वारा चिह्नित एक नई सामान्य स्थिति को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने मौसम की इस प्रवृत्ति में वार्षिक परिवर्तनों की ओर भी ध्यान आकर्षित कराया, जिन्हें वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तनशीलता कहा जाता है।भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) बंबई के जलवायु अध्ययन केंद्र की एसोसिएट प्रोफेसर अर्पिता मंडल ने पीटीआई-भाषा को बताया, उदाहरण के लिए, इस वर्ष आईएमडी की अद्यतन जानकारी से पता चलता है कि यह असामान्य रूप से शुष्क सर्दी थी। उन्होंने बताया कि बारिश एक प्राकृतिक शीतलन प्रक्रिया है जो तापमान को कम करने में मदद करती है। आईआईटी बंबई में पृथ्वी प्रणाली वैज्ञानिक और प्रोफेसर रघु मुर्तुगुड्डे ने कहा, मैं दिसंबर-फरवरी के दौरान गर्म और सर्द तापमान विसंगतियों (अपेक्षित परिपाटी से विचलन) की एक वैश्विक लहर देख रहा हूं जो जेट धाराओं के उतार-चढ़ाव से संबंधित हैं। जेट धाराएं वायुमंडल के ऊपरी स्तरों में बहने वाली तेज हवाएं हैं जो उत्तर और दक्षिण की ओर घूमकर मौसम को प्रभावित करती हैं। मंडल ने कहा, हमारे अध्ययन में पाया गया है कि मानसून पूर्व के दौरान इन हवाओं में उत्तर की ओर बदलाव हो रहा है जो सीधे तौर पर हीटवेव की प्रकृति, जैसे इसकी अवधि और तापमान से जुड़ा हुआ है। आईआईटी गांधीनगर में सिविल इंजीनियरिंग के चेयर प्रोफेसर विमल मिश्रा ने कहा कि इसके अलावा, अल नीनो और ला नीना - ईएनएसओ (अल नीनो-दक्षिणी दोलन एक आवर्ती जलवायु परिपाटी है जिसमें मध्य और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में पानी के तापमान में परिवर्तन शामिल है) भी समग्र प्रवृत्तियों में योगदान करते हैं।मिश्रा ने कहा, अतः अल नीनो जैसी परिस्थितियों में, आपको सर्दियों के तुरंत बाद गर्म वसंत या गर्म तापमान देखने को मिलेगा, जबकि यदि ला नीना प्रबल होता है, तो आपको अधिक संख्या में ठंडे दिन देखने को मिलेंगे। विश्व का अधिकांश मौसम अल नीनो-दक्षिणी दोलन (ईएनएसओ) से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित होता है, जिसमें प्रशांत महासागर में तापमान और वायुमंडलीय दबाव में परिवर्तन शामिल होता है।ईएनएसओ चक्र अल नीनो - गर्म चरण जो गर्म समुद्री तापमान से जुड़ा होता है - और इसके समकक्ष ला नीना के बीच दोलन करता है, जो हर बार एक तटस्थ चरण के माध्यम से संक्रमण करता है। एक चक्र आम तौर पर 2-7 वर्षों के बीच रहता है।इस सप्ताह, विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने अधिसूचित किया कि दिसंबर 2024 में उभरने वाला कमजोर ला नीना के अल्पकालिक होने की संभावना है। संयुक्त राष्ट्र एजेंसी ने मई 2024 में शुरू होने वाली ईएनएसओ (तटस्थ स्थितियों के बाद जुलाई-सितंबर के दौरान) ला नीना के उभरने की 60 प्रतिशत संभावना का अनुमान लगाया था।यूरोप की कोपरनिकस जलवायु परिवर्तन सेवा ने इस सप्ताह बताया कि मार्च 2024-फरवरी 2025 के दौरान तापमान 1990-2020 के औसत से 0.71 डिग्री सेल्सियस अधिक और पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 1.59 डिग्री सेल्सियस अधिक था। इसमें कहा गया है कि कई महासागरीय तलों और समुद्री सतह का तापमान असामान्य रूप से ऊंचा बना हुआ है। मुर्तुगुडे ने कहा, यह वास्तव में ला नीना नहीं है। उष्णकटिबंधीय प्रशांत (महासागर) में कुछ ठंडे पानी हैं, लेकिन महत्वपूर्ण पूर्वी प्रशांत में, कुछ गर्म विसंगतियां बनी हुई हैं। और यह दिसंबर-फरवरी के दौरान चरम पर होने के बजाय, वर्ष के अंत में ही उभरी हैं। उन्होंने कहा, यह प्रवृत्ति थोड़ी अप्रत्याशित हैं, लेकिन संभवतः 2023 के रिकॉर्ड तापमान वृद्धि से संबंधित हैं, जो अब भी जारी है। हमने अभी तक तापमान वृद्धि के स्तर की व्याख्या नहीं की है। ध्ययनों से यह अनुमान लगाया गया है कि भविष्य में तापमान बढ़ने से अल नीनो की घटनाएं अधिक सामान्य और तीव्र हो जाएंगी, तथा इनमें से प्रत्एक दो घटनाएं अत्यंत चरम पर होंगी।आईएमडी के मुताबिक भारत में 2024 की गर्मियों के दौरान विभिन्न मौसम संभागों में दर्ज किए गए कुल लू वाले दिनों की संख्या 14 वर्षों में सबसे अधिक है, तथा उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में 1901 के बाद से सबसे गर्म जून महीना दर्ज किया गया। मिश्रा ने कहा, सबसे मजबूत, महत्वपूर्ण संकेत जलवायु परिवर्तन का है। इसलिए, ईएनएसओ (तटस्थ परिस्थितियों में भी) जो इस वर्ष बहुत अधिक संभावित है हम नजरअंदाज नहीं कर सकते, क्योंकि मार्च में ही हमने काफी गर्म तापमान का सामना करना शुरू कर दिया है। मिश्रा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के तहत, अल नीनो हमारे लिए बहुत सारी समस्याएं पैदा करेगा, लेकिन ला नीना हमें राहत देने में सक्षम नहीं हो सकता है।

सीरिया: हिंसा में मृतकों की संख्या 1,000 से पार

भाषा। बेरूत

सीरिया के अपदस्थ राष्ट्रपति बशर अल–असद के वफादारों और सुरक्षाबलों के बीच दो दिन तक जारी संघर्ष और इसके बाद प्रतिशोधी हिंसा में मरने वालों की संख्या बढ़कर 1,000 से अधिक हो गई है, जिनमें लगभग 750 आम नागरिक शामिल हैं। मानवाधिकार संगठन ने शनिवार को यह जानकारी दी। सीरिया में 14 साल पहले शुरू हुए संघर्ष के बाद से यह हिंसा की सबसे घातक घटनाओं में से एक है। ब्रिटेन के मानवाधिकार संगठन सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स ने कहा कि 745 नागरिकों के अलावा, सरकारी सुरक्षाबलों के 125 सदस्य और अपदस्थ राष्ट्रपति बशर अल–असद से संबद्ध सशस्त्र समूहों के 148 चरमपंथी भी मारे गए। मानवाधिकार संगठन ने यह भी बताया कि तटीय शहर लताकिया के आसपास के बड़े इलाकों में बिजली और पेयजल

आपूर्ति बाधित हो गई है तथा कई बेकरी बंद हो गई हैं। सीरिया में तीन महीने पहले असद को अपदस्थ कर सत्ता पर विद्रोहियों के कब्जा करने के तीन महीने बाद बृहस्पतिवार को शुरू हुई यह झड़प दमिश्क की नई सरकार के लिए एक बड़ी चुनौती के रूप में उभरी है। सरकार ने कहा कि वह असद के समर्थकों द्वारा किए गए हमलों के खिलाफ कार्वाई कर रही है। उन्होंने बड़े पैमाने पर हुई इस हिंसा के लिए अलग–अलग व्यक्तियों द्वारा की गई कार्वाइयों को जिम्मेदार ठहराया। सीरिया में हालिया झड़पें तब शुरू हुईं, जब सुरक्षाबलों ने बृहस्पतिवार को तटीय शहर जबलेह के पास एक वांछित व्यक्ति को हिरासत में लेने की कोशिश की। इस दौरान असद के वफादारों ने उन पर घात लगाकर हमला कर दिया। नई सरकार के प्रति वफादार सुन्नी मुस्लिम बंदूकधारियों ने शुक्रवार को असद के समर्थक अल्पसंख्यक अल्वियत संप्रदाय के लोगों की हत्याएं शुरू कर दी थीं। लेकिन यह हयात तहरीर अल–शाम के लिए एक बड़ा झटका है, क्योंकि इसी धड़े के नेतृत्व में विद्रोही समूहों ने असद के शासन का तख्तापलट कर दिया था। अल्वियत संप्रदाय के गांवों और कस्बों के निवासियों ने समाचार एजेंसी एसोसिएटेड प्रेस (एपी) को बताया कि बंदूकधारियों ने अल्वियत समुदाय के अधिकतर पुरुषों को सड़कों पर या उनके घरों के दरवाजे पर ही गोली मार दी। सीरिया के तटीय क्षेत्र के दो निवासियों ने एपी को बताया कि विभिन्न क्षेत्रों में अल्वियत लोगों के कई घरों को लूट लिया गया और फिर उनमें आग लगा दी गई। हिंसा से सबसे अधिक प्रभावित कस्बों में से एक बानियास के निवासियों ने कहा कि शव सड़कों पर बिखरे पड़े थे या घरों और इमारतों की छतों पर पड़े थे और उन्हें उठाकर दफनाने के लिए कोई नहीं था। इस संबंध में एक व्यक्ति ने बताया कि बंदूकधारियों ने शुक्रवार को नजदीक से गोली मारकर कत्ल किए गए पांच लोगों के शवों को हटाने से निवासियों को घंटों तक रोक रखा। अपने परिवार को लेकर घर छोड़कर भागे 57 वर्षीय अली शेहा ने फोन पर बताया कि बानियास के एक मोहल्ले में कम से कम 20 लोगों की हत्या कर दी गई। उनके मुताबिक, कुछ की हत्या उनकी दुकानों में या उनके घरों में की गई।

इजराइल गाजा की बिजली आपूर्ति बंद करेगा

यरुशलम। इजराइल का कहना है कि वह गाजा को बिजली की आपूर्ति बंद कर रहा है। इसका पूरा असर अभी स्पष्ट नही है, लेकिन इस क्षेत्र के विलवणीकरण संयंत्रों को पीने के पानी के उत्पादन के लिए बिजली मिलती है।रविवार को यह घोषणा ऐसे समय में की गई है जब एक सप्ताह पहले इजराइल ने 20 लाख से अधिक लोगों को क्षेत्र में सभी प्रकार की वस्तुओं की आपूर्ति बंद कर दी थी। इसने हमास पर दबाव बनाने की कोशिश की है कि वह अपने संघर्ष विराम के पहले चरण को आगे बढ़ाए। यह चरण पिछले सप्ताहांत समाप्त हो गया।हमास ने युद्ध विराम के अधिक कठिन दूसरे चरण पर वार्ता शुरू करने पर जोर दिया है।युद्ध के कारण गाजा काफी हद तक तबाह हो चुका है और वहां बिजली आपूर्ति के लिए जनरेटर और सौर पैनलो का उपयोग किया जाता है।

इराक को बिजली कटौती का डर, अमेरिका ने ईरान से बिजली खरीद से जुड़ी छूट समाप्त की

भाषा। बगदाद

अमेरिका ने इराक के लिए पाबंदियों में दी गई उस छूट को नवीनीकृत करने से इनकार कर दिया है जिसके तहत उसे प्रतिबंधों का उल्लंघन किए बिना ईरान से बिजली खरीदने की अनुमति दी गई थी। एक अमेरिकी अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। बगदाद में अमेरिकी दूतावास ने एक बयान में कहा कि पाबंदियों में दी गई पिछली छूट शनिवार को समाप्त हो गई और अमेरिकी विदेश विभाग ने इसे नवीनीकृत नहीं किया है। बयान में कहा गया कि यह निर्णय राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ईरान पर अधिकतम दबाव डालने वाले अभियान के हिस्से के रूप में आया है, जिसे ईरान के परमाणु खतरे को समाप्त करने, उसके बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम को रोकने और उसे आतंकवादी समूहों का समर्थन करने से रोकने के लिए डिजाइन किया गया है। बयान में कहा गया है, हम इराकी सरकार से आग्रह करते हैं कि वह जितनी जल्दी हो सके, ईरानी ऊर्जा स्रोतों पर अपनी निर्भरता समाप्त करे और ऊर्जा क्षेत्र में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए इराकी प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता का स्वागत करे। तेल और गैस की अपनी संपदा के बावजूद इराक युद्ध, भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन के कारण दशकों से बिजली की कमी से जूझ रहा है और अपनी बिजली की जरूरतों को पूरा करने के लिए आयातित ईरानी गैस के साथ–साथ ईरान से आयातित बिजली पर बहुत अधिक निर्भर है। इराक में बिजली की कटौती आम बात है, खास तौर पर चिलचिलाती गर्मी के महीनों में। कई इराकियों को डीजल जनरेटर पर निर्भर रहना पड़ता है या 50 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा तापमान में झेलना पड़ता है।जिस छूट की अवधि समाप्त हुई है।

कनाडा: पब में गोलीबारी में 12 लोग घायल

भाषा। टोरंटो

कनाडा के पूर्वी टोरंटो में स्थित एक पब में तीन लोगों ने घुस कर बिना किसी चेतावनी के अचानक अंधाधुंध गोलीबारी कर दी जिससे कम से कम 12 लोग घायल हो गए। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि उन्हें रात करीब 10:40 बजे प्रोग्रेस एवेन्यू और कॉर्पोरेट ड्राइव के निकट कई लोगों को गोली मारे जाने की खबर मिली। टोरंटो के सहायक चिकित्सकों ने कहा था कि 11 वयस्क घायल हुए हैं, लेकिन बाद में पुलिस ने कहा कि 12 लोग घायल हुए हैं। पुलिस ने यह भी बताया कि एक संदिग्ध को सिल्वर कार में भागते देखा गया और वह अब भी फरार है। लोगों को इलाके से दूर रहने की चेतावनी दी जा रही है। पुलिस ने शनिवार की सुबह एक्स पर कहा कि गोलीबारी के मामले में तीन लोगों पर संदेह है तथा दोषियों को जल्द ही गिरफ्तार किया जाएगा।

विदेशी मुद्रा के साथ एक चीनी और नेपाली नागरिक गिरफ्तार

काठमांडू। पुलिस ने रविवार को त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से एक चीनी नागरिक सहित दो लोगों को अवैध विदेशी मुद्रा ले जाते समय गिरफ्तार कर लिया। नेपाल पुलिस ने एक बुलेटिन में कहा कि 22 वर्षीय चीनी नागरिक मेई वेनहाओ को उस समय गिरफ्तार किया गया, जब वह दुबई जाने वाली उड़ान पर चढ़ने वाला था। उसके पास से 10 लाख 42 हजार जापानी एन और 580 अमेरिकी डॉलर बरामद किए गए है। इसी तरह नेपाली नागरिक सनीम राज को एयर इंडिया की उड़ान से दिल्ली के लिए रवाना होने से पहले गिरफ्तार किया गया और उसके पास से 7,500 अमेरिकी डॉलर बरामद किए गए।

दक्षिण पश्चिमी कोलंबिया में भूस्खलन से एक व्यक्ति की मौत, तीन लापता

बोगोटा। दक्षिण-पश्चिमी कोलंबिया में भारी बारिश के कारण भूस्खलन मे कम से कम एक व्यक्ति की मौत हो गई और तीन अन्य लोग लापता है। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। पास्टो शहर के मेयर निकोलस टोरो के अनुसार, शुक्रवार को एक मोटरसाइकिल सवार भूस्खलन के मलबे की चपेट मे आ गया और मलबे के साथ ही दूर तक घिसटता चला गया। राष्ट्रीय जोखिम प्रबंधन इकाई ने शनिवार को शव मिलने से पहले कहा था कि चार लोग लापता है और 38 अन्य को बचा लिया गया है। इसने बताया कि भूस्खलन से 200 से ज़्यादा लोग प्रभावित हुए है और 65 घर क्षतिग्रस्त हुए है।

कोलंबिया में अपहृत 29 कानून प्रवर्तन अधिकारी रिहा कराए गए

बोगोटा। कोलंबिया के रक्षा मंत्री पेड्रो सांचेज ने शनिवार को बताया कि देश के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र से हाल ही मे अगवा किए गए 29 कानून प्रवर्तन अधिकारियों को मुक्त करा लिया गया है। एल प्लेटेडो क्षेत्र में बृहस्पतिवार को एक हमले के दौरान 28 पुलिस अधिकारियों और एक सैनिक का अपहरण कर लिया गया था। सांचेज ने मध्यस्थ की भूमिका निभाने तथा 29 अधिकारियो की रिहाई मे मदद के लिए स्थानीय समुदाय का आभार व्यक्त किया। माना जा रहा है कि इस हमले मे सशस्त्र समूह कार्लोस पैटिनो के सदस्यों का हाथ है। ए लोग कोलंबिया के पूर्व रेवल्यूशनरी आर्म्ड फोर्सेज के बागी है, जिन्होने सरकार के साथ 2016 के शांति समझौते पर हस्ताक्षर नही किए थे। रक्षा मंत्री ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, न्याय होगा।

तुर्किए: आवारा कुत्तों को मारने के लिए कानून लागू करने का संकल्प

इस्तांबुल। तुर्किए के गृह मंत्री ने दो वर्षीय बच्ची की मौत की घटना के बाद लाखों आवारा कुत्तों के खात्मे के लिए रविवार को कानून को पूरी तरह से लागू करने का संकल्प लिया। संसद ने पिछली गर्मियों मे इस कानून को पारित किया था, जिसे पशु कल्याण समूहों ने नरसंहार कानून की संज्ञा दी थी।नगर निकायो के अधिकारियों ने इस कानून को आंशिक रूप से ही लागू किया है।गृह मंत्री अली एरलिकाया ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो संदेश मे कहा, या तो वे (नगर निगम के अधिकारी) यह काम करेंगे या मै कानून द्वारा मुझे दिए गए अधिकार का पूरी तरह से उपयोग करूंगा। मध्य तुर्की के कोन्या मे शुक्रवार को आवारा कुत्तों के झुंड के हमले मे राना एल सेल्सी नामक बच्ची की मौत हो गई थी।बच्ची की मौत के बाद तुर्किए की सड़कों और ग्रामीण इलाकों में घूमने वाले कुत्तों को लेकर नए सिरे से आवाज उठ रही है। सरकार का अनुमान है कि देश में आवारा कुत्तों की संख्या 40 लाख हो सकती है। बच्ची की मौत के बाद आपराधिक जांच शुरू हुई।

महिलाओं पर हमलों, बलात्कार की घटनाओं के खिलाफ प्रदर्शनों के बीच बांग्लादेश ने जांच में तेजी लाने का वादा किया

भाषा। ढाका

बांग्लादेश में मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार ने रविवार को वादा किया कि महिलाओं के साथ बलात्कार और उनके खिलाफ हमलों की घटनाओं की जांच में तेजी लाई जाएगी। ऐसी घटनाओं में वृद्धि के कारण देश भर में विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। विधि सलाहकार आसिफ नजरुल ने कहा कि सरकार ने एक कानून लागू करने की योजना बनाई है जिसके तहत बलात्कार के मामलों की जांच 15 दिनों के भीतर तथा सुनवाई 90 दिन में पूरी करनी होगी। उन्होंने कहा, 90 दिन में मुकदमा पूरा न होने के नाम पर आरोपी को जमानत नहीं दी जा सकती। अगर प्रशासन की ओर से कोई लापरवाही बरती गई तो कानून में सजा के लिए विशेष प्रावधान जोड़े जाएंगे। सरकार ने यह टिप्पणी ऐसे समय में की है तब तीन दिन पहले पश्चिमी मगुरा में आठ वर्षीय बच्ची पर उसकी बहन के ससुर द्वारा कथित रूप से बर्बरता से हमला किए जाने और उससे बलात्कार किए जाने की घटना सामने आई थी। इस घटना ने पूरे देश में आक्रोश पैदा कर दिया है, जिसके बाद प्राधिकारियों को यह घोषणा करनी पड़ी। बांग्लादेश में हाल में सड़कों पर महिलाओं के साथ बलात्कार और उन पर हमले की कई घटनाएं हुई हैं। रमजान से पहले राजधानी में सार्वजनिक रूप से धूम्रपान करने के कारण दो महिलाओं को पीटा गया। इस घटना का सोशल मीडिया के जरिए व्यापक पैमाने पर विरोध हुआ। सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल जहांगीर आलम चौधरी ने कहा, मैंने कानून प्रवर्तन एजेंसियों से बच्चों और महिलाओं के साथ बलात्कार सहित सभी प्रकार की हिंसा के खिलाफ सख्त कार्वाई करने को कहा है। उन्होंने कहा कि अब तक हुई हिंसा की ऐसी घटनाओं को सूचीबद्ध करने के आदेश जारी किए गए हैं। मौजूदा कानून के अनुसार, बलात्कार के मामलों की जांच 30 दिन में और सुनवाई 180 दिन में पूरी हो जानी चाहिए। कानून में प्रावधान है कि बलात्कारियों को अधिकतम सजा के रूप में मौत की सजा दी जा सकती है।

रूस ने कुर्स्क में पीछे से यूक्रेनी सैनिकों पर गैस पाइपलाइन से किए हमले

कीव। यूक्रेन की सेना और रूस के युद्ध ब्लॉगर्स ने दावा किया है कि रूसी विशेष बल कुर्स्क क्षेत्र में यूक्रेनी इकाइयों पर पीछे से हमला करने के लिए एक गैस पाइपलाइन के अंदर कई किलोमीटर पैदल चल कर गए। मॉस्को अपने सीमावर्ती प्रांत के कुछ हिस्सों को फिर से अपने कब्जे में लेने की कोशिश कर रहा है, जिस पर कीव ने एक हमले में कब्जा कर लिया था। अगस्त में यूक्रेन ने कुर्स्क में सीमा के भीतर घुसकर एक दुस्साहसपूर्ण हमला किया था जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से रूसी क्षेत्र पर सबसे बड़ा हमला माना जा रहा है। कुछ ही दिन में, यूक्रेनी इकाइयों ने 1,000 वर्ग किलोमीटर (386 वर्ग मील) क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था जिसमें रणनीतिक सीमावर्ती शहर सुदजा भी शामिल था। कीव के अनुसार, इस अभियान का उद्देश्य भविष्य की शांति वार्ता में मोलभाव करना और रूस को पूर्वी यूक्रेन में अपने आक्रामक अभियान से सैनिकों को हटाने के लिए मजबूर करना था।

लेकिन यूक्रेन के धमाकेदार अभियान के महीनों बाद, कुर्स्क में उसके सैनिक 50,000 से अधिक सैनिकों के लगातार हमलों से थके हुए हैं। हमला करने वालों में रूस के सहयोगी उत्तर कोरिया के कुछ सैनिक भी शामिल थे। युद्ध क्षेत्र के मानचित्रों से पता चलता है कि हजारों यूक्रेनी सैनिकों को घेर लिए जाने का जोखिम है। यूक्रेन में जन्मे, क्रेमलिन समर्थक एक ब्लॉगर द्वारा डाली गई टेलीग्राम पोस्ट के अनुसार, रूस के बल पाइपलाइन के अंदर लगभग 15 किलोमीटर (9 मील) तक चले, जिसका उपयोग मॉस्को हाल के दिनों तक यूरोप को गैस भेजने के लिए करता था। ब्लॉगर यूरी पोडोल्याका ने दावा किया कि कुछ रूसी सैनिकों ने सुदज़ा शहर के पास पीछे से यूक्रेनी इकाइयों पर हमला करने से पहले कई दिन पाइप में बिताए थे। यूक्रेन पर फरवरी 2022 के रूसी आक्रमण से पहले शहर में लगभग 5,000 निवासी थे और यहां पाइपलाइन के साथ प्रमुख गैस स्थानांतरण और मापन स्टेशन हैं। यह कभी यूक्रेनी क्षेत्र के माध्यम से रूसी प्राकृतिक गैस निर्यात के लिए एक प्रमुख केंद्र था। एक अन्य युद्ध ब्लॉगर ने कहा कि सुदजा के लिए भीषण लड़ाई चल रही है और रूसी सेना गैस पाइपलाइन के माध्यम से शहर में प्रवेश करने में सफल रही।

नेपाल के पूर्व नरेश ज्ञानेंद्र शाह काठमांडू पहुंचे

काठमांडू। नेपाल के पूर्व नरेश ज्ञानेंद्र शाह रविवार को कड़ी सुरक्षा के बीच काठमांडू पहुंचे, जहां राजशाही समर्थक कार्यकर्ता उनके स्वागत के लिए पहले से हवाई अड्डे पर उपस्थित थे। पोखरा से सिमरिक एयर हेलीकॉप्टर पर सवार होकर ज्ञानेंद्र जैसे ही त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे, राजशाही समर्थक राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के नेताओ और कार्यकर्ताओं सहित सैकड़ों समर्थक उनके पक्ष में नारे लगाने लगे। भीड़ में शामिल लोगों के हाथों में तख्तियां थी, जिसपर हमे अपना राजा वापस चाहिए , संघीय गणतंत्र प्रणाली को खत्म करो , राजशाही को बहाल करो और राजा और देश हमारे जीवन से भी प्यारे है जैसे नारे लिखे हुए थे। ज्ञानेंद्र (77) देश के विभिन्न भागो मे धार्मिक स्थलो का दौरा करने के बाद पोखरा से काठमांडू लौटे। हवाई अड्डे के बाहर सड़क के दोनो ओर ज्ञानेंद्र की तस्वीर और राष्ट्रीय ध्वज लेकर मोटरसाइकिलों पर सवार सैकड़ों समर्थकों ने उनका स्वागत किया। दर्जनो दंगा रोधी पुलिसकर्मी नारायणहिती पैलेस संग्रहालय (पूर्व नरेश के तत्कालीन शाही महल की रखवाली कर रहे थे, क्योंकि ऐसी अफवाहे थी कि ज्ञानेंद्र अपने समर्थकों के साथ महल में प्रवेश करेंगे। हालांकि, कोई अप्रिय घटना नही हुई, क्योंकि ज्ञानेंद्र का अनुसरण करने वाली भीड़ काठमांडू के बाहरी इलाके मे पूर्व नरेश के निजी आवास निर्मल निवास की ओर बढ़ गई। नेपाल के पूर्व नरेश के समर्थक पिछले कुछ दिनों से काठमांडू और पोखरा सहित देश के विभिन्न हिस्सों में रैली निकाल रहे है और मौजूदा सरकार के खिलाफ नारेबाजी कर रहे है। ज्ञानेंद्र समर्थक, जन आंदोलन के बाद 2008 मे समाप्त की गई राजशाही व्यवस्था को फिर से बहाल करने की मांग कर रहे है।

दुनिया देखेगी फतेह का जबरदस्त जंग

मुंबई। बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाने के बाद सोनू सूद के निर्देशन में बनी पहली फिल्म फतेह अब सिर्फजियोहॉटस्टार पर स्ट्रीम हो रही है। यह एक्शन से भरपूर थ्रिलर साइबरक्राइम की खतरनाक दुनिया को उजागर करती है और इसकी रोमांचक कहानी दर्शकों को पूरी तरह से बांधे रखेगी। फिल्म में सोनू सूद मुख्य भूमिका में हैं। उनके साथ नसीरुद्दीन शाह, जैकलीन फर्नांडीज और विजय राज भी अहम किरदार निभा रहे हैं। इस फिल्म का निर्देशन सोनू सूद ने किया है और इसे शक्ति सागर प्रोडक्शंस एवं ज़ी स्टूडियोज के बैनर तले सोनाली सूद और उमेश केआर बंसल ने बनाया है। फिल्म में फतेह सिंह सोनू सूद की कहानी दिखाई गई है जो एक भूतपूर्व स्पेशल ऑपरेशंस ऑफिसर है। वह पंजाब के एक शांत गांव में अपनी पुरानी ज़िंदगी को पीछे छोड़कर साधारण जीवन जी रहा है। लेकिन जब उसके गांव की एक लड़की निमृत कौर जघन्य साइबर अपराध का शिकार बनती हैए तो फतेह को अपने अतीत में लौटने के लिए मजबूर होना पड़ता है। साइबरक्राइम का यह खतरनाक सिंडिकेट रज़ा और सत्य प्रकाश चलाते हैं। फतेह, एथिकल हैकर खुशी शर्मा जैकलीन फर्नांडीज के साथ मिलकर एक खतरनाक मिशन पर निकलता हैए जहां उसे न सिर्फनिमृत को बचाना ह बल्कि इस पूरे साइबर माफिया का खात्मा भी करना है। यह मिशन आसान नहीं हैए क्योंकि डिजिटल दुनिया के नए.नए खतरों से निपटना किसी जंग से कम नहीं। फतेह के निर्देशक और अभिनेता सोनू सूद कहते हैं फतेह का किरदार निभाना और इस फिल्म का निर्देशन करना मेरे लिए एक अनोखा अनुभव रहा। यह एक चुनौती भी थी और रोमांच भी। मुझे हमेशा से एक्शन पसंद रहा है और यह देखकर खुशी होती है कि मेरे प्रशंसकों को भी उतना ही मजा आता है। इस फिल्म के जरिए हमने एक्शन को नए स्तर पर ले जाने की कोशिश की है।

एमेजन का एलिवेटहर 2025 स्पीड मेंटरिंग और करियर डेवलपमेंट से महिलाओं को सशक्त बना रहा है

नोएडा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस आईडब्लूडी 2025 के अवसर पर एमेज़ॉन इंडिया ने एमेज़ॉन एलिवेटहर 2025 का आयोजन किया। यह पहल मेंटरशिप और करियर डेवलपमेंट के अवसरों द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए शुरू की गई है। इस साल अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की वैश्विक थीम के अनुसार बैंगलोर में एक ईवेंट एक्सेलरेट एक्शन का आयोजन किया गयाए जिसमें एमेज़ॉन के लीडर्स और महत्वाकांक्षी प्रोफेशनल्स ने मेंटरशिप सहयोग और स्पॉन्सरशिप पर ज्ञानवर्धक बातचीत की। एलिवेटहर 2025 से लैंगिक समानता की ओर एमेज़ॉन की प्रतिबद्धता प्रदर्शित होती हैए जो महिलाओं को अपनी पूरी क्षमता का विकास करने के लिए आवश्यक टूल्स और संसाधन प्रदान करने के लिए समर्पित है। गाईडिंग लाईट: स्पॉन्सरशिप, रेज़िलिएंस, एंड एम्पॉवरिंग वीमेन टू राईज़ विषय पर गंभीर चर्चा हुई, जिसमें अभिनेत्री और लेखिकाए सोनाली बेंद्रे और दीप्ति वर्मा, वीपीएचआर पीपुल एक्सपीरिएंस एंड टेक्नोलॉजीए एमेज़ॉन इंडिया जापान एंड इमर्जिंग मार्केट्स ने हिस्सा लिया। दीप्ति वर्मा वीपीए एचआर पीपुल एक्सपीरिएंस एंड टेक्नोलॉजी एमेज़ॉन इंडिया जापान एंड इमर्जिंग मार्केट्स ने कहा कि एमेज़ॉन में हम ऐसी संस्कृति का विकास कर रहे हैंए जिसमें सभी लोग आगे बढ़ें। हम मेंटरशिप से आगे बढ़कर सहयोग और स्पॉन्सरशिप तक पहुँच रहे हैं और करियर के विकास के लिए एक सपोर्ट सिस्टम का निर्माण कर रहे हैं। हमारे लीडर्स कर्मचारियोंए एसोसिएट्स और पार्टनर्स के लिए ऐसे अभियान लेकर आते हैं।

जयशंकर ने मैनचेस्टर में भारत के नए महावाणिज्य दूतावास का उद्घाटन किया

भाषा। मैनचेस्टर

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शनिवार को मैनचेस्टर में भारत के नए महावाणिज्य दूतावास का उद्घाटन किया, जिसे उन्होंने इस क्षेत्र में बढ़ते प्रवासी समुदाय के महत्व का प्रतीक और भारत–ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) सहित आने वाले बदलावों का संकेत बताया। विदेश मंत्री ने कहा कि यह उचित है कि विशाखा यदुवंशी अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर भारत की नवीनतम महावाणिज्य दूत के रूप में अपना पदभार संभालें, जो महिलाओं के मुद्दों को नीति के केंद्र में रखने में सरकार द्वारा की गई प्रगति को दर्शाता है। उन्होंने ग्रेटर मैनचेस्टर के स्टॉकपोर्ट में वाणिज्य दूतावास भवन के उद्घाटन के बाद ओल्ड ट्रैफर्ड स्टेडियम में प्रवासी समुदाय द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में भी शिरकत की। जयशंकर ने कहा, आज यहां मैनचेस्टर की मेरी पहली औपचारिक यात्रा इस बात को दर्शाती है कि पिछले चार दशकों में यह संबंध कितना परिपक्व हुआ है।

ऑस्ट्रेलिया में भारतीय व्यक्ति को 40 साल जेल की सजा

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया मे भारतीय समुदाय के एक नेता को कोरिया की पांच महिलाओ से बलात्कार करने के अपराध मे 40 साल जेल की सजा सुनाई गई है और इसमे 30 वर्ष की अवधि के दौरान उसे कोई पैरोल नही मिलेगी। मीडिया की एक खबर मे यह जानकारी दी गई।

हजारों व्यक्ति म्यांमा सीमा पर हिरासत में बंद

भाषा। माई सोत (थाईलैंड)

थाईलैंड में आकर्षक नौकरियों का लालच देकर तस्करी करके म्यांमा लाए जाने के बाद दुनियाभर में साइबर धोखाधड़ी की घटनाओं को अंजाम देने के लिए मजबूर किए गए उन हजारों लोगों ने उस समय राहत की सांस ली, जब उन्हें बंद परिसरों से छुड़ाया गया, लेकिन अब उन्हें ऐसे अत्यंत भीड़ वाले अस्वच्छ केंद्रों में रखा गया है, जहां न तो उनके पास चिकित्सा सुविधाएं हैं और न ही पर्याप्त भोजन।दुनिया भर के देशों से आए ए हजारों बीमार, थके हुए और भयभीत युवा अब अपने देश लौटने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। थाईलैंड, चीन और म्यांमा प्राधिकारियों ने पिछले महीने एक बहुप्रचारित अभियान के तहत, म्यांमा में बंद परिसरों से 7,000 से अधिक लोगों को रिहा कराया। इन लोगों को इन परिसरों में बंद कर अमेरिका समेत दुनिया भर के देशों में साइबर धोखाधड़ी करने के लिए मजबूर किया गया था।

पोप पर उपचार का प्रभाव सकारात्मक दिख रहा

भाषा। रोम

पोप फ्रांसिस रविवार को दोहरे निमोनिया के प्रकोप से उबरते हुए दिखे और उनके चिकित्सकों ने कुछ सकारात्मक खबरें दी हैं। पोप के चिकित्सकों ने कहा कि अस्पताल में तीन सप्ताह से अधिक समय बिताने के बाद उन पर उपचार का सकारात्मक असर दिखाई दे रहा है और हाल के दिनों में उनकी हालत में धीरे–धीरे, थोड़ा सुधार हुआ है। रविवार की सुबह ताजा सूचना में, वेटिकन ने कहा कि फ्रांसिस एक राहत भरी रात के बाद आराम कर रहे हैं। 88 वर्षीय पोप लगातार चौथे रविवार को अपने साप्ताहिक आशीर्वाद समारोह के लिए उपस्थित नहीं होंगे, हालांकि वेटिकन ने उस संदेश को प्रसारित करने की योजना बनाई है जो पोप स्वस्थ होने पर लोगों को देते। वेटिकन के एक बयान में शनिवार को चिकित्सकों के हवाले से कहा गया था कि पोप को फेफड़ों की पुरानी बीमारी है और युवावस्था में उनके एक फेफड़े का हिस्सा निकाल दिया गया था। उनकी हालत स्थिर बनी हुई है, उन्हें कई दिन से बुखार नहीं है और उनके रक्त में ऑक्सीजन का स्तर अच्छा है।

ब्रिटेन और अमेरिका में टीबी के बढ़ रहे मामले

भाषा। लिवरपूल (ब्रिटेन)

अमेरिकी इतिहास में सबसे लंबे समय तक तपेदिक (टीबी) का प्रकोप बने रहना कंसास के लिए सुपर बाउल (रग्बी खेल टूर्नामेंट) में मिली हार से ज्यादा चिंता का विषय है। पिछले वर्ष के दौरान टीबी के 67 मामले सामने आए। कोविड महामारी की शुरुआत के बाद से अमेरिका में टीबी की बढ़ती दर के बाद इतनी संख्या में यह मामले सामने आए। विक्टोरियन युग को छोड़कर, टीबी दुनिया की सबसे स्थाई महामारी है, जिस कारण हर वर्ष किसी भी अन्य संक्रमण की तुलना में अधिक लोगों की मौत होती है। कम आय वाले देशों, वंचित समुदायों, शहरों, जेलों, बेघर आबादी, अश्वेत, एशियाई और आदिवासी लोगों में टीबी के मामले आमतौर पर सामने आते हैं, इसके बावजूद अमेरिका और ब्रिटेन जैसे अमीर देश भी इससे अछूते नहीं हैं। अमीर देशों में टीबी का प्रकोप कोयले की खान में हीरे की तरह होता है, जो राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों में मौजूद दरार को दर्शाता है। व्यापक रूप से किसी भी क्षेत्र में टीबी का

प्रकोप वैश्विक स्तर पर टीबी को खत्म करने के जारी संघर्ष को धीमा करता है। टीबी हवा के जरिए फैलने वाला संक्रमण है। जलवायु परिवर्तन और युद्ध के कारण यह कहावत कहीं भी टीबी, हर जगह टीबी आज भी प्रासंगिक हो रही है। ब्रिटेन में 2011 और 2020 के बीच टीबी की दर में लगातार गिरावट आई लेकिन अमेरिका की ही तरह 2020 की शुरुआत में कोविड–19 वैश्विक महामारी के फैलने के बाद से बढ़ना शुरू हो गई। इंग्लैंड में वर्ष 2023 में टीबी की चपेट में आने वाले लोगों की संख्या 2022 की तुलना में 13 प्रतिशत बढ़ गई। प्रति वर्ष एक लाख लोगों में 9.5 लोगों के टीबी का शिकार होने की दर इंग्लैंड के लिए

ऐसा क्यों है सभी के लिए चिंता का विषय

चिंता का विषय है क्योंकि यह कम टीबी दर यानि प्रति वर्ष एक लाख लोगों में 10 लोगों के टीबी का शिकार होने की दर से नीचे चली गई है, जो खतरे की घंटी है। ब्रिटेन में जीवन यापन को लेकर संकट बरकरार है। बहुत से लोग, विशेष रूप से सबसे गरीब लोग भोजन के लिए संघर्ष कर रहे हैं। टीबी, गरीब देशों में होने वाली एक बीमारी है, जो भीड़भाड़, कुपोषण और रहने के लिए खराब हालात जैसी जगहों पर पनपती है। लेकिन ब्रिटेन में टीबी के मामलों में वृद्धि को केवल बीमारी के बढ़ते जोखिम के कारण नहीं माना जा सकता। टीबी की रोकथाम और उपचार के लिए स्वास्थ्य और सामाजिक देखभाल प्रणाली भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। वर्तमान में टीबी का एकमात्र टीका बीसीजी वैक्सीन बीमारी की रोकथाम में उतनी प्रभावी नहीं है जितनी हम उम्मीद करते हैं। कई टीकों के बनने की वजह से आशा की किरण दिखाई देती है लेकिन गलत जानकारी जुटाकर बनाए गए टीके उनके प्रभाव को बाधित कर सकते हैं। टीबी के प्रकोप को रोकने में आ रही अन्य बाधाओं में टीबी को लेकर जागरूकता की कमी, टीबी से संबंधित गलत जानकारी का प्रसार जारी रहना, टीबी रोगियों की देखभाल में शामिल नर्सिंग कर्मियों की संख्या में कमी और टीबी के प्रति संवेदनशील लोगों की सहायता के लिए स्वास्थ्य और सामाजिक देखभाल क्षेत्रों के बीच खाई शामिल है। इंग्लैंड में टीबी से पीड़ित पांच में से चार लोग ब्रिटेन से बाहर पैदा हुए थे। प्रवासी लोगों द्वारा वीजा आवेदन प्रक्रिया के भाग के रूप में प्रवेश देने से पहले जांच करना टीबी से पीड़ित लोगों की पहचान करने में प्रभावी है। हालांकि रोकथाम इलाज से बेहतर है और टीबी संक्रमण या बिना लक्षण वाले टीबी रोगियों की जांच में अब भी अंतर है। निवारक टीबी उपचार प्रदान करने से भविष्य में टीबी रोग का जोखिम 85 प्रतिशत तक कम हो सकता है लेकिन ब्रिटेन में कम संसाधन वाला जांच कार्यक्रम है क्योकि 2023 में केवल 11.5 प्रतिशत पात्र प्रवासियों की टीबी संक्रमण की जांच की गई है।

हमारी सेना को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा: चीन

भाषा। बीजिंग

चीन ने रविवार को अपने 249 अरब डॉलर के रक्षा बजट को सही ठहराते हुए कहा कि उसे देश की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने में कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है तथा बढ़ी हुई राशि का उपयोग नवीनतम लड़ाकू क्षमताओं के साथ सेना के आधुनिकीकरण के लिए किया जाएगा। चीन के प्रधानमंत्री ली क्विंग ने बुधवार को संसद में घोषणा की कि इस वर्ष देश के लिए नियोजित रक्षा व्यय लगभग 249 अरब अमेरिकी डॉलर है। रक्षा प्रवक्ता वू कियान ने संसद के वार्षिक सत्र के दौरान कहा, चीनी सेना को राष्ट्रीय संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने में कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। पिछले साल चीन ने अपना रक्षा बजट 7.2 प्रतिशत बढ़ाकर लगभग 232 अरब अमेरिकी डॉलर किया था। चीन का सैन्य बजट अमेरिका के बाद दुनिया में सर्वाधिक है। अमेरिका का नवीनतम प्रस्तावित रक्षा खर्च 890 अरब डॉलर से अधिक है।

व्हाइट हाउस के निकट खुफिया सेवा के कर्मियों ने हथियारबंद व्यक्ति को गोली मारी : अधिकारी

वाशिंगटन। अमेरिकी खुफिया सेवा के कर्मियो ने इंडियाना से आए एक हथियारबंद व्यक्ति को रविवार तड़के व्हाइट हाउस के पास गोली मार दी। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। खुफिया सेवा के बयान के अनुसार, आधी रात के आसपास व्हाइट हाउस के पास हुई गोलीबारी मे (हथियारबंद व्यक्ति के अलावा) कोई और घायल नही हुआ। गोलीबारी की घटना के समय राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप फ्लोरिडा मे थे। खुफिया सेवा को स्थानीय पुलिस से एक कथित आत्मघाती व्यक्ति के बारे मे सूचना मिली, जो इंडियाना से यात्रा कर रहा था। बाद मे खुफिया सेवा के कर्मियो ने व्हाइट हाउस के पास उस व्यक्ति की कार और उसके विवरण से मेल खाते एक व्यक्ति को पाया। खुफिया सेवा ने एक बयान मे कहा, जैसे ही अधिकारी पास आए, व्यक्ति ने बंदूक तानी और मुठभेड़ शुरू हो गई। उस दौरान हमारे कर्मियो ने गोलियां चलाईं। बयान मे कहा गया कि उस व्यक्ति को अस्पताल मे भर्ती कराया गया है। हालांकि, घायल व्यक्ति की हालत के बारे मे कोई जानकारी नही दी गई है।

सिंध के पूर्व मुख्यमंत्री के जिंदा बेटे को मृत घोषित किया

कराची। पाकिस्तान के सिंध सूबे के स्वास्थ्य विभाग ने पूर्व मुख्यमंत्री सैयद कईम अली शाह के बेटे डॉ. सैयद लियाकत अली शाह को मृत घोषित कर दिया, जबकि वह जीवित है और वर्तमान मे एक सरकारी नेत्र रोग अस्पताल मे अपनी सेवाएं दे रहे हैं। यह जानकारी एक टेलीविजन चैनल ने अपनी खबर में दी। समा टीवी की खबर के मुताबिक यह खुलासा एक कर्मचारी भर्ती मामले से संबंधित अदालत में जमा दस्तावेजों के दौरान हुआ। स्वास्थ्य सचिव, स्वास्थ्य महानिदेशक और अतिरिक्त स्वास्थ्य सचिव द्वारा अदालत मे पेश रिपोर्ट मे कहा गया था कि भर्ती आदेश जारी करने वाले डॉ. लियाकत अली शाह का निधन हो गया है। खबर के मुताबिक अदालत को गुमराह करने के लिए मृत्यु प्रमाणपत्र भी प्रस्तुत किया गया जबकि डॉ. लियाकत अली शाह पिछले दो वर्षो से नेत्र अस्पताल मे चिकित्सा अधीक्षक (एमएस) के पद पर कार्यरत है। इससे पहले, उन्होंने अपनी सेवानिवृत्ति के बाद एक चिकित्सा महाविद्यालय मे अनुबंध प्रोफेसर के रूप मे काम किया था। डॉ. लियाकत इससे पहले जिला स्वास्थ्य अधिकारी (डीएचओ) के रूप मे कार्य कर चुके है और एक दशक पहले 400 से अधिक कर्मचारियो की भर्ती के लिए जिम्मेदार थे। इनमे से 161 कर्मचारियो को फिलहाल वेतन मिल रहा है जबकि बाकी मामले अभी अदालत मे लंबित है।खबर के मुताबिक जब डॉ. लियाकत से उनकी प्रतिक्रिया के लिए संपर्क किया ।

हमारे खिलाड़ियों ने पूरे टूर्नामेंट में अच्छा खेल दिखाया : रोहित

●नतीजा हक में होना शानदार अहसास है

भाषा। दुबई

भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने रविवार को यहां न्यूजीलैंड को चार विकेट से हराकर तीसरी दफा आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी अपने नाम करने के बाद कहा कि मुकाबले में नतीजा अपने हक में होना शानदार अहसास है। फाइनल में 76 रन की अर्धशतकीय पारी खेलकर प्लेयर ऑफ द मैच रहे रोहित ने मैच के बाद कहा, हमने पूरे टूर्नामेंट में अच्छा क्रिकेट खेला। अपने मनमुताबिक परिणाम प्राप्त करना एक शानदार अहसास है। आक्रामक शैली से खेलना मेरे लिए यह स्वाभाविक नहीं है लेकिन मैं सही में ऐसा करना चाहता था। उन्होंने कहा, जब आप कुछ अलग कर रहे होते हैं तो आपको टीम और प्रबंधन का समर्थन प्राप्त होना चाहिए। मैंने पहले राहुल (राहुल द्रविड़) भाई से बात की और अब गौती (गौतम गंभीर) भाई से भी। मैं वास्तव में ऐसा करना चाहता था। मैं इन वर्षों में एक अलग शैली में खेला और अब हम इस शैली के साथ परिणाम हासिल कर रहे हैं। विराट कोहली हालांकि बड़ी पारी नहीं खेल पाए। उन्होंने कहा, यह अद्भुत रहा है,

ऑफ द मैच रहे रोहित

हम ऑस्ट्रेलिया के मुश्किल दौरे के बाद वापसी करना चाहते थे। अद्भुत युवाओं के साथ खेलना बहुत अच्छा लगा। वे भारत को सही दिशा में ले जा रहे हैं। इतने लंबे समय तक खेलने के बाद आप दबाव में खेलने के लिए उत्सुक होते हैं। खिताब जीतने के लिए पूरी टीम को अलग अलग मैच में आगे बढ़ना होता है। कोहली ने कहा, मैं इन युवाओं से बात करने की कोशिश करता हूं, अपना अनुभव साझा करने की कोशिश करता हूं। जब आप जाते हैं तो आप बेहतर स्थिति में जाना चाहते हैं। गिल, श्रेयस, राहुल ने कई प्रभावशाली पारियां खेली हैं। टीम अच्छे हाथों में है। केएल राहुल ने मैच के बाद कहा, संयम रखना अहम था, खुश हूं कि इस बार ऐसा कर सका। मैंने पांच में से तीन मैच में ऐसी ही परिस्थितियों में बल्लेबाजी की है। शब्दों में बयां करना मुश्किल है। इससे पहले मोर्चे से अगुवाई करने वाले कप्तान रोहित शर्मा के बल्ले के कमाल और स्पिनरों के धमाल के दम पर भारत ने न्यूजीलैंड को रविवार को फाइनल में चार विकेट से हराकर रिकॉर्ड तीसरी बार चैम्पियंस ट्रॉफी अपने नाम की। इस मैच से पहले रोहित के संन्यास की अटकलें लगाई जा रही थी लेकिन उन्होंने अपने चिर परिचित फॉर्म में लौटकर आलोचकों के मुंह बंद कर दिए। उनकी कप्तानी में यह टी20 विश्व कप 2024 के बाद भारत ने दूसरा आईसीसी खिताब जीता।भारत ने टूर्नामेंट में एक भी मैच गंवाए बिना 2002 और 2013 के बाद तीसरी बार खिताब जीता। कोई दूसरी टीम तीन बार यह ट्रॉफी नहीं जीत पाई है।

स्कोरबोर्ड

न्यूजीलैंड पारी : यंग पगबाधा बो वरुण 15, रविंद्र बो कुलदीप 37, विलियमसन का और बो कुलदीप 11, मिचेल का शर्मा बो शमी 63, लैथम पगबाधा बो जडेजा 14, फिलिप्स बो वरुण 34, ब्रेसवेल नाबाद 53, सेंटनेर रन आउट 8, स्मिथ नाबाद 0, अतिरिक्त : 16 रन, योग : 50 ओवर में सात विकेट पर 251 रन, **विकेट पतन** : 1-57, 2-69, 3-75, 4-108, 5-165, 6-211, 7-239, **गेंदबाजी** : शमी 9-0-74-1, पंड्या 3-0-30-0, चक्रवर्ती 10-0-45-2, कुलदीप 10-0-40-2, अक्षर 8-0-29-0, जडेजा 10-0-30-1

भारत पारी : रोहित लैथम बो रविंद्र 76, गिल का फिलिप्स बो सेंटनेर 31, कोहली पगबाधा बो ब्रेसवेल 1, अय्यर का रविंद्र बो सेंटनेर 48, पटेल का ओराउर्की बो ब्रेसवेल 29, राहुल नाबाद 34, पंड्या का और बो जैमीसन 18, जडेजा नाबाद 9, अतिरिक्त : आठ रन , **योग** : 49 ओवर में छह विकेट पर 254 रन, **विकेट पतन** : 1-105 , 2-106 , 3-122 , 4-183 , 5-203 , 6-241 ,**गेंदबाजी** : जैमीसन 5-0-24-1, राउरकी 7-0-56-0, स्मिथ 2-0-22-0, सेंटनेर 10-0-46-2, रविंद्र 10-1-47-1, ब्रेसवेल 10-1-28-2, फिलिप्स 5-0-31-0

राष्ट्रपति ने भारतीय टीम को दी बधाई

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने चैम्पियंस ट्रॉफी जीतने पर भारतीय टीम को बधाई देते हुए कहा कि क्रिकेट का इतिहास रचने पर खिलाड़ी, टीम प्रबंधन और सहयोगी स्टाफ बधाई के पात्र हैं। भारत ने दुबई में न्यूजीलैंड को चार विकेट से फाइनल में हराकर तीसरी बार चैम्पियंस ट्रॉफी खिताब जीता। राष्ट्रपति मुर्मू ने एक्स पर लिखा , भारतीय टीम को आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी जीतने पर बधाई। भारत तीन बार खिताब जीतने वाली पहली टीम बनी। उन्होंने कहा , खिलाड़ियों, प्रबंधन और सहयोगी स्टाफ को क्रिकेट का इतिहास रचने पर बधाई। भारतीय क्रिकेट के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामना।

आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी जीतने वाली हमारी क्रिकेट टीम पर गर्व है : प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को आईसीसी चैंपियन्स ट्रॉफी जीतने के लिए भारतीय क्रिकेट टीम की सराहना करते हुए कहा कि खिलाड़ियों ने पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन किया है। यह टीम का तीसरा चैंपियन्स ट्रॉफी खिताब है। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, एक असाधारण मुकाबला और एक असाधारण नतीजा। आईसीसी चैंपियन्स ट्रॉफी घर लाने के लिए हमें अपनी क्रिकेट टीम पर गर्व है। उन्होंने कहा, खिलाड़ियों ने पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन किया है। शानदार हरफनमौला प्रदर्शन के लिए हमारी टीम को बधाई।

खेलो इंडिया शीतकालीन खेल : भारतीय सेना ने पहले दिन सात पदक जीते

भाषा। गुलमर्ग

गत चैम्पियन भारतीय सेना ने खेलो इंडिया शीतकालीन खेलों में अपने अभियान का शानदार आगाज करते हुए रविवार को दो स्वर्ण समेत सात पदक जीत लिए। भारतीय सेना ने दो स्वर्ण, दो रजत और तीन कांस्य पदक जीते। हिमाचल प्रदेश ने एक स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य अपने नाम किया। मेजबान जम्मू कश्मीर ने एक स्वर्ण और एक रजत पदक जीता। खेलो इंडिया शीतकालीन खेलों के पहले दिन सेना ने नॉर्डिक स्कीइंग पुरूषों के दस किलोमीटर वर्ग में तीनों पदक जीते। सन्नी सिंह ने स्वर्ण, मनजीत ने रजत और राज डिन ने कांस्य जीता। महिलाओं की नॉर्डिक स्कीइंग पांच किलोमीटर वर्ग में कर्नाटक की भवानी टी ने स्वर्ण जीता। आईटीबीपी की सेलमा सोरेंग को रजत और कुसुम राणा को कांस्य पदक मिला। स्की पर्वतारोहण पुरूषों के स्प्रिंट वर्ग में सेना के राजेश्वर सिंह ने स्वर्ण, महाराष्ट्र के सिद्धार्थ गाडेकर ने रजत और उत्तराखंड के मयंक डिमरी ने कांस्य पदक अपने नाम किया। अल्पाइन स्कीइंग पुरूषों के स्लालोम वर्ग में हिमाचल के योगेश कुमार ने स्वर्ण , सेना के जिगमत रफस्तान ने रजत और बाकिर हुसैन ने कांस्य पदक जीता।

पेरिस सेंट जर्मेन ने लीग वन में 4-1 की बढ़त बनाई

पेरिस।) स्थानापन्न खिलाड़ी के रूप में उतरे ऑसमेन डेम्बेले के दो गोल की मदद से पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) ने लीग वन फुटबॉल टूर्नामेंट में रेनेस को 4-1 से हराकर लीग में अपना अजेय अभियान जारी रखा।डेम्बेले ने अपने दोनों गोल दूसरे हाफ के इंजरी टाइम के पहले और चौथे मिनट में दागे। ब्रेडले बार्सोला (27वें मिनट) और गोंजेलो रामोस (50वें मिनट) ने भी टीम की ओर से एक-एक गोल किया।रेनेस की ओर से एकमात्र गोल लिलियन ब्रेसियर ने 53वें मिनट में किया।लीग के मौजूदा सत्र में अब तक अजेय पीएसजी के इस जीत से 25 मैच में 65 अंक हो गए है और टीम ने दूसरे स्थान पर मौजूद मार्सिले पर 16 अंक की बढ़त बना ली है।

बायर्न म्यूनिख व लीवरकुसेन बुंदेसलीगा में हारे

बर्लिन। शीर्ष पर चल रहे बायर्न म्यूनिख को दो गोल की बढ़त बनाने के बावजूद बोचुम के खिलाफ बुंदेसलीगा फुटबॉल मुकाबले में 2-3 से हार का सामना करना पड़ा लेकिन बायर लीवरकुसेन की टीम इसका फायदा उठाने में नाकाम रही।लीवरकुसेन की टीम भी शनिवार को वर्डर ब्रेमेन के खिलाफ 0-2 से हार गई। ब्रेमेन ने सभी प्रतियोगिताओं में मिलाकर अपने पिछले पांच मैच गंवाए थे।बायर्न की टीम 25 मैच में 61 अंक के साथ शीर्ष पर बनी हुई है जबकि लीवरकुसेन इतने ही मुकाबलो में 53 अंक के साथ दूसरे स्थान पर है।बोरूसिया डोर्टमंड को भी ऑग्सबर्ग के खिलाफ 0-0 से हार झेलनी पड़ी जबकि स्टुटगार्ट को होल्सटेन किएल ने 2-2 से बराबरी पर रोका।वॉल्फ्सबर्ग और सेंट पॉली का मैच 1-1 से बराबर रहा जबकि फ्राइबर्ग और लेपजिग ने गोल रहित ड्रॉ खेला।

टाइटंस के सहयोगी स्टाफ से जुड़े वेड

नई दिल्ली। गुजरात टाइटंस ने इंडियन प्रीमियर लीग 2025 से पहले ऑस्ट्रेलिया के पूर्व विकेटकीपर मैथ्यू वेड को टीम का सहायक कोच नियुक्त किया है। वेड 2022 और 2024 में खिलाड़ी के रूप में दो सत्र के लिए टाइटंस के साथ थे लेकिन अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद आईपीएल की बड़ी नीलामी का हिस्सा नही बने।गुजरात टाइटंस ने एक्स पर लिखा, चैंपियन। फाइटर। अब हमारे सहायक कोचउ जीटी (गुजरात टाइटंस) के डगआउट में आपका स्वागत है, मैथ्यू वेड। वेड ने आईपीएल में कुल 15 मैच खेले जिसमे से 12 में उन्होंने टाइटंस का प्रतिनिधित्व किया। वह 2022 में हार्दिक पंड्या के नेतृत्व में खिताब जीतने वाली टीम का हिस्सा थे।

एचेमपोंग की हैट्रिक , ईस्ट बंगाल ने ओडिशा को हराया

भुवनेश्वर। घाना की स्ट्राइकर एल्शादाई एचेमपोंग की हैट्रिक की बदौलत ईस्ट बंगाल एफसी ने रविवार को इंडियन वुमैन्स लीग (आईडब्ल्यूएल) में ओडिशा एफसी पर 3-1 से जीत दर्ज की। इस समय तालिका में शीर्ष पर चल रही कोलकाता की टीम के अब सात मैच में 18 अंक हो गए है। ओडिशा एफसी सात मैच में 11 अंक लेकर तीसरे स्थान पर है। ईस्ट बंगाल की एल्शादाई ने हैट्रिक बनाकर ओडिशा एफसी की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। एल्शादाई ने अभी तक इस आईडब्ल्यूएल में छह गोल कर लिए है। घाना की एक अन्य खिलाड़ी जेनिफर कक्कम एबोआ ने 74वें मिनट में ओडिशा एफसी के लिए गोल करके हार का अंतर कम किया।

गुजरात जाइंट्स की जीत पर नजर, भिड़ेगा मुंबई इंडियन्स

● महिला प्रीमियर लीग : नजरें शीर्ष स्थान पर

भाषा। मुंबई

लीग चरण में अब जब सिर्फ दो मैच बचे हैं तब मुंबई इंडियन्स की नजरें सोमवार को यहां फॉर्म में चल रहे गुजरात जाइंट्स के खिलाफ जीत के साथ महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) की अंक तालिका में शीर्ष स्थान हासिल करने पर टिकी होंगी। यूपी वारियर्स ने शनिवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू को 12 रन से हराकर इस गत चैंपियन टीम को प्ले ऑफ की दौड़ से बाहर किया। इसके साथ ही दिल्ली कैपिटल्स, मुंबई इंडियन्स और गुजरात जाइंट्स का प्ले ऑफ में जगह बनाना तय हो गया। हालांकि अब भी अंक तालिका में टीमों का स्थान तय नहीं है। तीसरे डब्ल्यूपीएल का अंतिम चरण ब्रेबोर्न स्टेडियम में खेला जाएगा जो हरमनप्रीत कौर की अगुआई वाली मुंबई इंडियन्स का घरेलू मैदान है और उन्होंने 2023 में यहां पहले सत्र का खिताब जीता था। टीम अंक तालिका में शीर्ष स्थान हासिल करने की कोशिश करेगी। लीग चरण के अंत में अंक तालिका में शीर्ष पर रहने वाली टीम को सीधे फाइनल में प्रवेश मिलेगा और सोमवार और मंगलवार को लगातार दो मैच खेलने वाले मुंबई इंडियन्स का लक्ष्य दिल्ली कैपिटल्स से आगे निकलना होगा जो अभी 10 अंक और 0.396 के नेट रन रेट के साथ पहले स्थान पर है। तालिका में शीर्ष पर रहने से मुंबई इंडियन्स की टीम छह दिन के भीतर चौथा मैच खेलने से भी बच जाएगी जो एलिमिनेटर होगा। यहां की गर्म और आर्द्र परिस्थितियों में लगातार मुकाबले खेलना किसी भी टीम के लिए आसान नहीं होता। मुंबई की टीम अभी आठ अंक और 0.267 के नेट रन रेट के साथ तीसरे स्थान पर है। टीम अगर गुजरात जाइंट्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के खिलाफ अपने अंतिम दोनों मैच जीत लेती है तो 12 अंक के साथ शीर्ष पर जगह बना सकती है।

वेस्टइंडीज को हराकर भारत आईएमएल 2025 के सेमीफाइनल में

रायपुर। भारत ने यहां वेस्टइंडीज को सात रन से हराकर अंतरराष्ट्रीय मास्टर्स लीग टी20 क्रिकेट के सेमीफाइनल में जगह बनाई।मेजबान टीम ने स्टुअर्ट बिन्नी के तीन विकेट और इरफान पठान की अंतिम ओवर में शानदार गेंदबाजी से शनिवार को बड़े स्कोर वाले मुकाबले में रोमांचक जीत दर्ज कीइस मुकाबले के साथ सचिन तेंदुलकर बनाम ब्रायन लारा की प्रतिद्वंद्विता एक बार फिर नजर आती लेकिन मेजबान टीम ने अपने दिग्गज खिलाड़ी को आराम दिया। भारत मास्टर्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए अंबाती (63) और सौरभ (60) के अर्धशतक के बाद कार्यवाहक कप्तान युवराज (नाबाद 49) की तूफानी पारी से तीन विकेट पर 253 रन बनाए।

क्विक न्यूज

फेडरेशन कप में हरियाणा के पहलवानों का दबदबा

जालंधर। हरियाणा ने 2025 फेडरेशन कप (सीनियर) कुश्ती चैम्पियनशिप में पुरुषों के ग्रीको रोमन, फ्रीस्टाइल और महिला वर्ग में पहला स्थान हासिल किया। ग्रीको रोमन में पांच स्वर्ण और महिला वर्ग मे एक स्वर्ण जीतने के साथ हरियाणा ने टीम रैंकिंग में भी शीर्ष स्थान पाया। ग्रीको रोमन में हरियाणा ने पांच स्वर्ण, चार रजत और एक कांस्य पदक जीता। अनिल मोरे ने 55 किलो वर्ग में स्वर्ण जीता जबकि सूरज ने 60 किलो में कांस्य हासिल किया। गौरव ने 63 किलो और संदीप ने 67 किलो में स्वर्ण जीते। सोनू ने 87 किलो मे और नितेश ने 97 किलो में पहला स्थान पाया। कुलदीप मलिक (72 किलो), अमन (77 किलो), प्रिंस (82 किलो) और संजीत (130 किलो) ने रजत पदक जीते। हरियाणा ने ग्रीको रोमन टीम रैंकिंग में शीर्ष स्थान पाया जबकि उत्तर प्रदेश दूसरे और चंडीगढ तीसरे स्थान पर रहा। महिला वर्ग मे हरियाणा ने टीम रैंकिंग में बाजी मारी। महाराष्ट्र दूसरे स्थान पर रहा। हर्षिता ने 72 किलो में स्वर्ण और सिमरन ने 76 किलो में कांस्य जीता। पुष्पा और मुस्कान ने क्रमशः 57 और 65 किलो में रजत पदक हासिल किए। फ्रीस्टाइल में ओवरआल टीम रैंकिंग मे हरियाणा पहले, दिल्ली दूसरे और उत्तरप्रदेश तीसरे स्थान पर रहे।

रीयल कश्मीर ने आइजोल एफसी को 2-1 से हराया, गोकुलम केरला भी जीता

श्रीनगर। रीयल कश्मीर एफसी रविवार को यहां आई लीग फुटबॉल प्रतियोगिता में आइजोल एफसी पर 2-1 की जीत के साथ तालिका में तीसरे स्थान पर पहुंच गई। रीयल कश्मीर की घरेलू मैदान पर यह लगातार पांचवी जीत है और पिछले पांच मैच में चौथी जीत है। इस जीत के साथ ही रीयल कश्मीर के 18 मैच में 32 अंक हो गए है जिससे वह चर्चिल ब्रदर्स और इंटर काशी से दो अंक पीछे है। अब जब सिर्फ चार मैच बचे है तो खिताब की दौड़ में कड़ी टक्कर देखने को मिलेगी। वही आइजोल एफसी रेलीगेट (नीचे की श्रेणी में खिसकना) होने की कगार से बाहर होने का मौका चूक गई और 16 अंक लेकर एससी बेंगलुरु से एक स्थान पीछे 11वें स्थान पर है। सेनेगल के करीम सांब (31वें मिनट) ने रीयल कश्मीर को बढ़त दिलाई। फिर लालरिनजुआला (58वें मिनट) ने सत्र का अपना नौवां गोल करके आइजोल एफसी को बराबरी दिलाई। रीयल कश्मीर के लिए ब्राजील के पाउलो सेजार (77वें मिनट) ने विजई गोल किया। जयपुर में एक अन्य मैच में पूर्व चैंपियन गोकुलम केरला ने राजस्थान यूनाईटेड पर 3-0 से जीत दर्ज की। विजेता टीम ने पहले हाफ में 1-0 की बढ़त बनाई हुई थी। गोकुलम केरला के लिए स्ट्राइकर थासी ब्राउन ने 45वें और 81वें मिनट में दो गोल दागो जबकि अतुल उन्नीकृष्णन ने 57वें मिनट में तीसरा गोल दागा। इस जीत से गोकुलम केरला लीग तालिका में चौथे स्थान पर पहुंच गई। उसके 18 मैच में 28 अंक है जिससे वह शीर्ष पर चल रही चर्चिल ब्रदर्स से छह अंक नीचे है। राजस्थान यूनाईटेड के 18 मैच में 24 अंक है जिससे वह आठवें स्थान पर है।

एनआरएआई ने आयोजित किया दूसरा आईएसएसएफ इलेक्ट्रॉनिक स्कोरिंग टारगेट कोर्स

नई दिल्ली। भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) ने अपने शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत यहां डॉ. कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में पांच से नौ मार्च तक दूसरे आईएसएसएफ इलेक्ट्रॉनिक स्कोरिंग टारगेट (ईएसटी) कोर्स का आयोजन किया। इस कोर्स में नेपाल से तीन और श्रीलंका से एक सहित 32 प्रतिभागियो ने हिस्सा लिया जिसने महासंघ की तकनीकी शिक्षा पहल मे अंतरराष्ट्रीय भागीदारी की शुरुआत की। पहला आईएसएसएफ ईएसटी कोर्स 24 से 28 फरवरी के बीच आयोजित किया गया था जो काफी सफल रहा था। ईएसटी प्रणाली को संभालने में अधिकारियों की तकनीकी कुशलता के विकास के लिए इसका आयोजन किया गया था।ईएसटी का उपयोग राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओ मे किया जाता है।

सानवी सोमू एमेच्योर एशिया पैसीफिक चैंपियनशिप में संयुक्त 38वें स्थान पर

डा नैंग (वियतनाम)। सानवी सोमू रविवार को यहां महिला एमेच्योर एशिया पैसीफिक गोल्फ चैंपियनशिप मे भारतीय खिलाड़ियों के बीच सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए संयुक्त रूप से 38वें स्थान पर रही।सानवी ने लगातार दूसरे दौर में एक अंडर 70 का स्कोर बनाया जिससे उनका कुल स्कोर दो ओवर रहा। पदार्पण कर रही भारत की 14 साल की गुंतास कौर संधू टूर्नामेंट में कट हासिल करने वाली सबसे युवा भारतीय बनी। उन्होने अंतिम दौर मे सात ओवर 78 के लचर प्रदर्शन के साथ कुल नौ ओवर का स्कोर बनाया और 47वें स्थान पर रही।भारत की मन्नत बरार ने भी अंतिम दौर मे 78 का निराशाजनक स्कोर बनाया और कुल 10 ओवर के स्कोर से 48वें स्थान पर रही। दस साल की उम्र में ऑस्ट्रेलिया जाने वाली और अब अमेरिका मे कॉलेज गोल्फ खेल रही जीनिथ वोंग महिला एमेच्योर एशिया-पैसीफिक चैंपियनशिप जीतने वाली पहली मलेशियाई खिलाड़ी बनी। उन्होने अंतिम दौर मे तीन अंडर 68 के स्कोर से कुल 18 अंडर के स्कोर से एक शॉट की बढ़त के साथ खिताब जीता।

भारत में 2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए अहमदाबाद में 10 बड़े स्टेडियम बनाए जाएंगे: अमित शाह

अहमदाबाद। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को गांधीनगर में 316.82 करोड़ रुपए के पैरा हाई परफॉर्मेंस सेंटर की आधारशिला रखी और 2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए भारत के संकल्प को दोहराया। उन्होने कहा कि नरेंद्र मोदी क्रिकेट स्टेडियम के करीब स्थित सरदार पटेल खेल परिसर में 10 बड़े स्टेडियम बनाए जाएंगे। शाह ने कहा, भारत ने इन 10 परिसरों में 2036 ओलंपिक खेल आयोजित करने का संकल्प लिया है। गुजरात ने ओलंपिक की तैयारी पहले ही शुरू कर दी है। शाह ने कहा कि पैरा हाई परफॉर्मेंस सेंटर गुजरात के पैरा एथलीटो को विश्व स्तरीय ट्रेनिंग प्रदान करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा, यह केंद्र दिव्यांगो की ताकत के लिए एक मंच प्रदान करेगा। पहले लोग दिव्यांगों के लिए अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल करते थे जिससे उनमे हीनता की भावना पैदा होती थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिव्यांगो को सम्मानजनक शब्द दिव्यांग देकर उनमे आत्मविश्वास जगाया है। शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के खेल सभी के लिए के मंत्र को साकार करने के लिए गुजरात सरकार ने मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में खेल क्षेत्र के लिए कई नई पहल की है जिसकी वजह से राज्य मे देश का सबसे ज्यादा खेल बुनियादी ढांचा है।केंद्रीय मंत्री ने कहा, 2002 मे गुजरात का खेल बजट सिर्फ दो करोड़ रुपए था जो आज बढ़कर 352 करोड़ रुपए हो गया है। यह बजट ही खेलो के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

झारखंड, महाराष्ट्र और मिजोरम हॉकी चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में

पंचकुला। झारखंड, महाराष्ट्र और मिजोरम ने रविवार को अपने अपने मैच जीतकर हॉकी इंडिया सीनियर महिला राष्ट्रीय चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। दिन के पहले क्वार्टर फाइनल मैच में झारखंड ने डिवीजन ए मैच में मध्य प्रदेश को 3-1 से हराया। झारखंड के लिए कप्तान अलबेला रानी टोप्पो (चौथे मिनट), रजनी केरकेट्टा (41वें) और प्रमोदनी लाकड़ा (59वें) ने गोल दागे जबकि मध्य प्रदेश के लिए एकमात्र गोल करिश्मा यादव (55वें) ने किया। दूसरे क्वार्टर फाइनल मैच में महाराष्ट्र ने कर्नाटक को 5-0 से हरा दिया जिसमें आकांक्षा सिंह (41वें और 54वें) ने दो गोल किए।

लखनऊ की तुलसी यादव व श्रेया शर्मा ने जीता स्वर्ण

● आगरा की खिलाड़ियों का दबदबा

● अस्मिता खेलो इंडिया सिटी ताइक्वांडो लीग

लखनऊ। लखनऊ की तुलसी यादव और श्रेया शर्मा ने अपने शानदार प्रदर्शन से अस्मिता खेलो इंडिया सिटी ताइक्वांडो लीग में सीनियर वर्ग में स्वर्ण पदक अपने नाम किए। सीनियर वर्ग में आगरा की खिलाड़ियों का दबदबा देखने को मिलाए जिन्होंने कुल चार स्वर्ण पदक हासिल किए। यह लीग केंद्रीय खेल एवं युवा कल्याण मंत्रालयए खेलो इंडिया और भारतीय खेल प्राधिकरण के तत्वावधान में ताइक्वांडो फेडरेशन ऑफइंडिया और उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन के आयोजित की गई।केडी सिंह बाबू स्टेडियम के बैडमिंटन हॉल में शनिवार को जूनियर वर्ग के मुकाबलों के बाद सीनियर वर्ग के भी रोमांचक मुकाबले खेले गए। समापन समारोह में उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन के अध्यक्ष शैलेश कुमार सिंह शैलू ने अपने प्रेषित संदेश में कहा कि खेल सिर्फ जीतने का नाम नहींए बल्कि खुद को साबित करने का जरिया है। हर मैदान में महिलाओं की शक्तिए समर्पण और साहस की गूंज सुनाई दे रही है। आज की नारी हर खेल में अपना परचम लहरा रही है।चैंपियनशिप में सीनियर अंडर 46 किग्रा भार वर्ग में आगरा की आयुषी सिंह ने स्वर्णए लखनऊ की कीर्तिदा यादव ने रजत एवं शाहजहांपुर की वर्षा सिंह व देवरिया की अर्चना ने कांस्य पदक जीते। सीनियर अंडर 49 किग्रा में मथुरा की विशाखा ने स्वर्णए आगरा की वानी सिंह ने रजत एवं यूपीटीए की अनामिका व फर्रुखाबाद की भूमि ने कांस्य पदक जीते। सीनियर अंडर 53 किग्रा भार वर्ग में लखनऊ की तुलसी यादव ने स्वर्ण लखनऊ की समीक्षा पासवान ने रजत एवं बरेली की निष्ठा गिहार व कानपुर की वंदना शर्मा ने कांस्य पदक जीते। सीनियर अंडर 57 किग्रा में आगरा की प्रीति बघेल ने स्वर्णए सुल्तानपुर की साक्षी ने रजतए मथुरा की मीनू व लखनऊ की मनीष्का ने कांस्य पदक जीते। सीनियर अंडर 62 किग्रा में यूपीटीए की सरोजनी ने स्वर्ण फर्रुखाबाद की श्रद्धा त्रिपाठी ने रजत एवं गोरखपुर की निशा श्रीवास्तव व यूपीटीए की कनिका रावत ने कांस्य पदक जीते। सीनियर अंडर 67 किग्रा में आगरा की भूमि गुप्ता ने स्वर्ण झांसी की अनुष्का यादव ने रजत एवं यूपीटीए की गार्गी कृष्णा व लखनऊ की नंदिनी निगम ने कांस्य पदक जीते।

लखनऊ में होगी 47वीं राष्ट्रीय जूनियर बालिका हैंडबॉल चैंपियनशिप

उप्र हैंडबॉल एसोसिएशन के 50वें स्थापना दिवस पर होगा आयोजन

केडी सिंह बाबू स्टेडियम में 26 से 30 मार्च तक खेले जाएंगे मुकाबले

लखनऊ। पिछली विजेता हरियाणाए उपविजेता आर्यावर्त स्पोर्ट्स अकादमी हिमाचल प्रदेश और मेजबान उत्तर प्रदेश सहित कुल 30 टीमें नवाबों के शहर लखनऊ में होने वाली 47वीं राष्ट्रीय जूनियर बालिका हैंडबॉल चैंपियनशिप में खिताब के लिए चुनौती पेश करने उतरेंगी। उत्तर प्रदेश हैंडबॉल एसोसिएशन के 50वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मेंए हैंडबॉल एसोसिएशन इंडिया के तत्वावधान में इस चैंपियनशिप का आयोजन उत्तर प्रदेश हैंडबॉल एसोसिएशन द्वारा किया जा रहा है। इस चैंपियनशिप के सभी मैच 26 से 30 मार्च 2025 तक केडी सिंह बाबू स्टेडियम में खेले जाएंगे। इस चैंपियनशिप के दौरान हैंडबॉल के दिग्गज अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों का सम्मान भी किया जाएगा। आयोजन को लेकर आयोजित प्रेस वार्ता में उत्तर प्रदेश हैंडबॉल एसोसिएशन के महासचिव डॉ. आनन्देश्वर पाण्डेय वरिष्ठ उपाध्यक्ष नवीन दासए उपाध्यक्ष प्रदीप राय एडवोकेट और आयोजन सचिव अमित पाण्डेय ने बताया कि लीग-कम-नॉकआउट आधार पर होने वाली इस चैंपियनशिप की तैयारियां जोरों से चल रही हैं। चैंपियनशिप के लिए केडी सिंह बाबू स्टेडियम में चार कोर्ट तैयार किए जाएंगे। मुख्य कोर्ट स्टेडियम स्थित भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी बहुउद्देश्यीय हॉल में बनाया जाएगा, जबकि तीन आउटडोर कोर्ट स्टेडियम के मैदान पर तैयार किए जाएंगे। महासचिव डॉ. आनन्देश्वर पाण्डेय ने जानकारी दी कि चैंपियनशिप में भाग लेने वाली 30 टीमों को आठ पूल में विभाजित किया जाएगा। जिनमें से प्रत्येक पूल की शीर्ष दो टीमें नॉकआउट के लिए क्वालीफाई करेंगी। इसके पश्चात प्री क्वार्टर फइनलए क्वार्टर फाइनल सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबलों का आयोजन होगा। इस प्रतिष्ठित चैंपियनशिप में 30 राज्यों की टीमों से कुल 550 खिलाड़ी एवं अधिकारी भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि पिछले संस्करण में हरियाणा ने खिताब जीता था जबकि हिमाचल प्रदेश की आर्यावर्त स्पोर्ट्स अकादमी उपविजेता रही थी। उन्होंने आगे बताया कि इस चैंपियनशिप के दौरान उत्तर प्रदेश के उन हैंडबॉल खिलाड़ियों का सम्मान होगा जिन्होंने एशियन गेम में प्रतिभाग के साथ अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंटों में पदक जीते है। इसके अलावा जीवन यापन को लेकर आर्थिक संकट का सामना कर रहे खिलाड़ियों को सहायता भी प्रदान की जाएगी। एसोसिएशन के आयोजन सचिव अमित पाण्डेय ने कहा कि चैंपियनशिप के सफल आयोजन के लिए सभी तैयारियां पुख्ता की जा रही हैं। उन्होंने यह भी बताया कि लखनऊ ने इस वर्ष जनवरी में आईएचएफ ट्रॉफी पुरुष यूथ व जूनियर ;कांटिनेंटल फेज एशिया जैसी प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय हैंडबॉल चैंपियनशिप की सफल मेजबानी की थी।

लखनऊ मंडल ने जीत से शुरू किया अभियान

प्रयागराज को 18-14 से हराया, जूनियर बालक हैंडबॉल

लखनऊ। लखनऊ मंडल ने प्रदेश स्तरीय समन्वय जूनियर बालक हैंडबॉल प्रतियोगिता के उद्घाटन मैच में प्रयागराज के खिलाफ 18.14 की जीत से अपना अभियान शुरू किया।इस प्रतियोगिता का आयोजन उत्तर प्रदेश खेल निदेशालय व उत्तर प्रदेश हैंडबॉल एसोसिएशन के समन्वय से क्षेत्रीय खेल कार्यालय लखनऊ के तत्वावधान में केडी सिंह बाबू स्टेडियम स्थित भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी बहुउद्देश्यीय हाल मे किया जा रहा है।प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश हैंडबॉल एसोसिएशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष नवीन दास ने डा.आनन्देश्वर पाण्डेय ;महासचिवए उत्तर प्रदेश हैंडबॉल एसोसिएशनद्ध की गरिमामयी मौजूदगी में किया। इससे पूर्व अतिथिगण का स्वागत लखनऊ मंडल के क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी अनिमेष सक्सेना ने किया। इस दौरान उत्तर प्रदेश हैंडबॉल एसोसिएशन के उपाध्यक्ष प्रदीप रायए आयोजन सचिव अमित पाण्डेए लखनऊ जिला हैंडबॉल एसोसिएशन के सचिव डाण्सुमंत पाण्डेय व केडी सिंह बाबू स्टेडियम के अंतर्राष्ट्रीय हैंडबॉल कोच मोण्तौहीद व अन्य खेल प्रेमी भी मौजूद रहे। आज उद्घाटन मैच में लखनऊ मंडल ने प्रयागराज के खिलाफतेज तर्रार खेल दिखाया लेकिन प्रयागराज मंडल के खिलाड़ियों ने भी कई बेहतरीन मूव बनाए। मैच में लखनऊ ने मध्यांतर तक 12.6 की बढ़त बनाई। वहीं मध्यांतर के बाद कड़ी टक्कर के बावजूद लखनऊ मंडल के खिलाड़ियों ने गोल करने जारी रखे और 18.14 से जीत दर्ज की। टीम से मोस्ट वैल्यूबल प्लेयर शुभम सिंह ने 5 गोल दागे। उनका साथ देते हुए निहाल ने 4 गोल किए। इससे पूर्व दिन के पहले मैच में अमेठी हास्टल ने अलीगढ़ मंडल को 19.11 से शिकस्त दी। जीत में मोस्ट वैल्यूबल प्लेयर अभिषेक ने सर्वाधिक 6 गोल किए। शिवांश सिंह व अजित राय को 4.4 गोल करने में सफलता मिली। दूसरे मैच में गोरखपुर मंडल ने विंध्यांचल मंडल को 19.9 से हराया। गोरखपुर से मनीष ने अकेले आठ गोल किए। दूसरी ओर मेरठ मंडल ने देवीपाटन मंडल के खिलाफ21.7 से जीत दर्ज की। मेरठ की जीत में कुणाल ने 8 गोल किए। एक अन्य मैच में आजमगढ़ मंडल ने बरेली को 19.16 से मात दी। आजमगढ़ की जीत में मोस्ट वैल्यूबल प्लेयर हर्ष ने पांच गोल किए।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा द इंडियन एक्सप्रेस प्रा.लि. सी-26 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोन: 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक: शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: विजय प्रकाश सिंह।
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।